क़ुरआन और इनसान

(21वीं सदी में)

डॉ॰ सैयद शाहिद अली
रीडर, डिपार्टमेंट ऑफ़ इस्लामिक स्टडीज़
जामिया मिल्लिया इस्लामिया (केन्द्रीय यूनीवर्सिटी)

विषय-सूची

1. आमुख 5
2. ख़ुदा है 9
3. दिल 12
4. मुहब्बत या हक़ 14
5. अच्छाई फैलाना : बुराई रोकना 16
6. मज़हबी सोच 18
7. अच्छा व्यक्ति और बुरा समाज 22
8. हँसी न उड़ाना 24
9. मरने के बाद ज़िन्दगी 26
10. भरोसे का अभाव 31
11. तास्सुब 33
12. नज़र न आनेवाला ख़ुदा 35
13. हैसियत 38
14. एच.आई.वी. 40
15. छोटी दुनिया 43
16. मौत और ख़ाहिश 45
17. आख़िरत 48
18. ख़यालात 56
19. तनाव 59
20. हाँ से नहीं की तरफ़ 61
21. दीन 63
22. माइंड मैनेजमेंट 65
23. इनसाफ़ 67
24. क़ुरआन और साइंस 69
25. मुकम्मल आज़ादी नहीं होती 74

26. खुदा का डर और इनसाफ़ 76
27. मौत 78
28. खुदा ने बनाया 80
29. ख़ामोशी की ताक़त 83
30. मैं भी ठीक-तुम भी ठीक 86
31. मानव-रचना की ईश्वरीय योजना 90
32. सुधार का तरीक़ा 94
33. अक़्ल की आज़ादी न कि ख़ाहिश की 96
34. खुदा का आज़माना, न कि खुदा को आज़माना 99
35. कसौटी बरतर और कमतर की 101
36. मुहब्बत और डर 103
37. अच्छी बात, अच्छा तरीक़ा 105
38. खुदा का तरीक़ा 106
39. शिर्क 107
40. माँ-बाप 109
41. क़र्ज़ 111
42. कोई तवक़्क़ो नहीं 113
43. बुराई को अच्छाई से दूर करना 115
44. खुदा को भूलना : खुद को भूलना 117
45. किताब-रसूल-ज़मीर 119
46. दावत 121
47. इबरत से मोटिवेशन 122
48. बदलाव 125
49. नतीजा या कोशिश 127
50. दिमाग़ी माहौल 129
51. मुसीबत 130
52. मशविरा 132
53. समाज 135
54. तरक़्क़ी 137
55. रोज़ी 138

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
'अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहमवाला है।'

आमुख

क़ुरआन ख़ुदा का अन्तिम सुरक्षित सन्देश है। क़ुरआन सभी इनसानों के लिए ख़ुदा का मार्गदर्शन है। क़ुरआन का मुख्य विषय (Theme) इनसान है। क़ुरआन इनसान के बारे में ख़ुदा की योजना (Scheme) को बताता है। क़ुरआन की बुनियादी तालीम, सिर्फ़ और सिर्फ़ एक ख़ुदा को, उसके बताए गए तरीक़े के अनुसार मानना है। क़ुरआन का ख़ास ज़ोर सोच-विचार पर है।

क़ुरआन का अन्दाज़ (Style) और इनसानी प्रकृति (Human Nature) एक समान है। क्योंकि क़ुरआन का देनेवाला और इनसान का बनानेवाला एक ही ख़ुदा है। क़ुरआन के लिए इनसानों में पहले से ही कशिश (Attraction) मौजूद है। आज ज़रूरत सिर्फ़ यह है कि क़ुरआन और इनसान के बीच की दूरी को ख़त्म किया जाए, जिसके बाद इनसान की चाह और कोशिश के अनुसार क़ुरआन ख़ुद उसपर अपना प्रभाव डालेगा।

ख़ुदा का तरीक़ा यह है कि जो उसकी तरफ़ पहुँचने की चाह रखता है और उसके मुताबिक़ कोशिश करता है, ख़ुदा उसे अपना रास्ता ज़रूर दिखा देता है। मुसलमानों की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ इतनी है कि वे इनसानों के सामने क़ुरआन को बेहतरीन तरीक़े से पेश कर दें।

इस्लाम को उसके सही स्वरूप में समझने में आज सबसे बड़ी रुकावट मुसलमानों का अपना किरदार तो है ही, साथ ही इस्लाम दुश्मन ताक़तों के ज़रिए उसके बारे में फैलाई गई ग़लतफ़हमियाँ भी एक बड़ी रुकावट है। यह भी एक वास्तविकता है कि इस्लाम के बारे में लिखी गई मोटी-मोटी किताबें और लम्बी-लम्बी तक़रीरें भी इस्लाम को समझने में बाधक सिद्ध होती हैं। आज की इस भागती-दौड़ती दुनिया में पहले से ज़्यादा ज़रूरत है कि इस्लामी

तालीमात को उनके बुनियादी स्रोत—क़ुरआन (और उसकी व्याख्या 'सुन्नत')—की रौशनी में संक्षिप्त तौर पर पेश किया जाए। यह किताब, वक़्त की इस ज़रूरत को पूरा करने की एक कोशिश है।

यह किताब एक कोशिश है, इनसान की वास्तविकता को ख़ुदा के सन्देश—क़ुरआन—की रौशनी में समझाने की। यह किताब क़ुरआन पर सोच-विचार को बढ़ावा देने के मक़सद से लिखी गई है।

इस किताब को लिखने का एक उद्देश्य इस ग़लतफ़हमी को भी दूर करना है कि 'क़ुरआन सिर्फ़ मुसलमानों के लिए है'। वास्तव में क़ुरआन इनसान के स्रष्टा की तरफ़ से सभी इनसानों के लिए मार्गदर्शन है। इसलिए क़ुरआन ही एक ऐसी किताब है, जो अपने माननेवालों (Muslims) और न माननेवालों (Non-Muslims) दोनों पर एक ज़िम्मेदारी डालती है। माननेवालों पर यह कि वे इसे समझें, इस पर पूरा अमल करें और इसे फैलाएँ। न माननेवालों पर यह कि वे इसकी तहक़ीक़ (Investigate) करें, क्योंकि अगर यह सत्य है, तो फिर उन्हें सोचना होगा कि इसके बारे में उनकी नीति क्या हो?

इस किताब में हिन्दुस्तानी भाषा में सादा व सरल तरीक़े से, क़ुरआन की विज़डम को संक्षिप्त में पेश करने का प्रयास किया गया है। मुमकिन है बहुत-सी बातों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश न पड़ सका हो। इस कमी को दूसरे इस्लामी साहित्य और सोच-विचार की मदद से दूर किया जा सकता है।

मैंने अपनी ज़िन्दगी में दो बातों को अपनाया है। पहली बात यह है कि नमूना (Model) मेरे लिए सिर्फ़ एक हैं और वे हैं, पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰), जिनका अनुगमन करना है। बाक़ी सभी इनसान टीचर हो सकते हैं नमूना नहीं, चाहे वे रिश्तेदार हों, अजनबी हों, दोस्त हों या दुश्मन। किसी से कम या किसी से ज़्यादा सीखा जा सकता है। दूसरी बात यह कि मैं सभी से सीखता हूँ। किसी से यह कि "यह करना चाहिए" और किसी से यह कि "यह नहीं करना चाहिए"।

इस पुस्तक की एक विशेषता यह है कि आज के दौर के इनसान की मनोस्थिति को ध्यान में रखते हुए हर विषय पर बहुत ही संक्षेप में, मगर

सारगर्भित रूप से रौशनी डाली गई है और सत्य को स्पष्ट करने के लिए ऐसे टिप्स दिए गए हैं, जो सोचने और विचार करने के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं और इनसान की ज़िन्दगी में एक कल्याणकारी क्रान्ति ला सकते हैं।

अगर यह किताब, अपने किसी एक भी पाठक में क़ुरआन पर सोच-विचार करने का शौक़ पैदा कर सके, तो मैं ख़ुद को अपने मक़सद में कामयाब समझूँगा।

यह किताब किसी एक आदमी की नहीं, बल्कि कई लोगों की मिली-जुली कोशिश का नतीजा है। ख़ुदा से दुआ है कि हम सबको दुनिया और आख़िरत, दोनों जगह कामयाब करे।

–डॉ॰ सैयद शाहिद अली
रीडर
डिपार्टमेंट ऑफ़ इस्लामिक स्टडीज़,
जामिआ मिल्लिया इस्लामिया (केन्द्रीय यूनिवर्सिटी),
नई दिल्ली-110025
E-mail : drali1@rediffmail.com
फ़ोन : 09868853228

ख़ुदा है
(God Exists)

"फिर क्या वे ऊँट की ओर नहीं देखते कि कैसा बनाया गया? और आकाश की ओर कि कैसा ऊँचा किया गया? और पहाड़ों की ओर कि कैसे खड़े किए गए? और धरती की ओर कि कैसी बिछाई गई?" (क़ुरआन, 88:17-20)

बीसवीं सदी से पहले, साइंस में यह माना जाता था कि जो चीज़ नज़र आती है, वह होती है और जो नज़र नहीं आती, वह नहीं होती। बीसवीं सदी में जब माद्दे/Atom (वह छोटे से छोटा टुकड़ा जिसे और तोड़ा न जा सके) को तोड़कर परमाणु ऊर्जा (Atomic Energy) बना ली गई, तो माना जाने लगा कि जो चीज़ नज़र आती है, वह होती है और जो नज़र नहीं आती, वह भी होती है। जैसे ऊर्जा (Energy) और तापमान (Temprature)।

इनसान अपनी ज़िन्दगी में नज़र आनेवाली (Visible) चीज़ों के मुक़ाबले, नज़र न आनेवाली (Invisible) चीज़ों पर ज़्यादा यक़ीन करता है। इनसान नज़र न आनेवाली बातों/चीज़ों को मानता है (Believing), तोलता है (Measuring) और उनको इस्तेमाल करता है (Using)। माँ ने कहा : यह बाप है, औलाद ने मान लिया। डॉक्टर ने कहा : यह दवाई है, मरीज़ ने मान लिया। टीचर ने कहा : यह सच है, छात्र ने मान लिया। इनसान का तापमान और ऊर्जा को तोलना। इनसान का रीमोट, मोबाइल फ़ोन, ओवेन और रेज़ का इस्तेमाल करना, यह दर्शाता है कि इनसान नज़र आनेवाली चीज़ों को इस्तेमाल करके तोलता है।

किसी चीज़ के असरात (Effects) का नज़र आना भी उस चीज़ के होने का सुबूत होता है। सर्दी या गर्मी का लगना, हवा के होने या न होने का सुबूत है। पेड़ से सेब का गिरना, ज़मीन की कशिश (Gravity of Earth) के

होने का सुबूत है। फ़ोटोग्राफ़ का होना, X-Rays के होने का सुबूत है। सृष्टि (Creation) का होना, स्रष्टा (Creator) के होने का सुबूत है। डिज़ाइन का होना, डिज़ाइनर के होने का सुबूत है। इस कायनात (Universe) में योजना (Planning) का होना, आयोजक (Planner) के होने का सुबूत है। इसी तरह कायनात में सन्तुलन (Balance) का होना, कन्ट्रोल (Control) का होना और हरकत (Movement) का होना, एक ज़बरदस्त स्रष्टा (The Creator) के मौजूद होने का सुबूत है।

इस कायनात की शुरुआत (Beginning), इसका तालमेल (Harmony), इसका सही अनुपात (Right Proportion), इसका सन्तुलन (Check & Balance) ये सब एक ख़ुदा के होने को साबित करते हैं।

इनसान और पेड़ का रिश्ता, इस ज़मीन के ज़बरदस्त तालमेल (Harmony) को बताता है। इनसान ऑक्सीजन (Oxygen) लेता और कार्बनडाइ-ऑक्साइड (Carbondioxide) निकालता है, जबकि पेड़ कार्बनडाइ-ऑक्साइड लेता और ऑक्सीजन निकालता है।

इस कायनात में मुकम्मल अनुपात (Right Proportion) है, जो ज़रूरत के मुताबिक़ है। सूरज और ज़मीन का फ़ासला (Distance) 9,30,00,000 (नौ करोड़ तीस लाख) मील है। अगर यह फ़ासला डबल होता, तो ज़मीन इतनी ठण्डी हो जाती कि यहाँ की हर चीज़ जम जाती। और अगर यह फ़ासला आधा होता, तो ज़मीन इतनी गर्म हो जाती कि यहाँ की हर चीज़ जल जाती। इस फ़ासले में ज़रा-सी भी तब्दीली, ज़मीन पर से जीवन को ख़त्म कर सकती है।

अगर ज़मीन का साइज़, मौजूदा साइज़ से डबल होता, तो ज़मीन की कशिश (Gravitational Pull) इतनी ज़्यादा बढ़ जाती कि हर इनसान बौना (Dwarf-Like Size) बन जाता। और अगर ज़मीन का साइज़, मौजूदा साइज़ से आधा होता, तो ज़मीन की कशिश इतनी ज़्यादा कम हो जाती कि हर इनसान बहुत ही ज़्यादा लम्बा हो जाता।

इस कायनात में ज़बरदस्त सन्तुलन है। हर कीड़े (Insect) में बढ़ने की

लामहदूद सलाहियत (Unlimited Potential) होती है। अगर कीड़ों को बढ़ने के लिए छोड़ दिया जाता, तो ज़मीन पर इनसान के रहने की जगह नहीं बचती। मगर खुदा ने ऐसा इन्तिज़ाम किया है कि कीड़ों की साँस की नली (Breathing Tube) में बढ़ने की कोई सलाहियत नहीं रखी।

कायनात का यह मुकम्मल निज़ाम (Perfect-System) स्रष्टा (The Creater) के होने का एक बड़ा सुबूत है। कुछ लोग समझते हैं कि यह कायनात एक हादसे (Accident) की वजह से वुजूद में आई। यह ग़लत है, क्योंकि हादसे बार-बार होते हैं, न कि सिर्फ़ एक बार। हक़ीक़त में इनसान का इस ज़मीन पर होना, खुदा के होने का सुबूत है। अगर खुदा नहीं होता, तो फिर इनसान भी न होता।

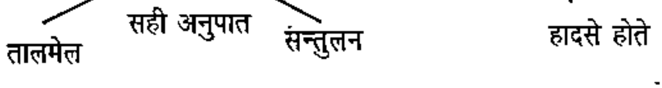

दिल
(Heart)

"जिन लोगों ने इनकार किया, उनके लिए बराबर है, ख़ाह तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वे माननेवाले नहीं हैं। अल्लाह ने उनके दिलों और उनके कानों पर मुहर लगा दी है, और उनकी आँखों पर परदा है। और उनके लिए बड़ा अज़ाब (यातना) है।"

(क़ुरआन, 2 : 6-7)

क़ुरआन और (उसकी व्याख्या) हदीस में "दिल" का शाब्दिक अर्थ (Literal Meaning) लिया गया है, न कि जीव-विज्ञान सम्बन्धी अर्थ (Biological Meaning)। क़ुरआन व हदीस में जिन कामों के लिए "दिल" (Heart) शब्द का इस्तेमाल किया गया है, उन्हीं कामों के लिए चिकित्सा शास्त्र (Medical Science) में "दिमाग़" (Mind) शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। संसार की सभी भाषाओं में भी "दिल" शब्द का यही इस्तेमाल होता रहा है।

दिल, इनसान को हरकत में लानेवाली एक ताक़त (Driving Force) का नाम है। दिल के सही होने पर, कामों का सही होना और ग़लत होने पर, कामों का ग़लत होना निर्भर करता है। इस्लाम का निशाना दिल है। इनसान का सुधार नहीं हो सकता, जब तक कि उसके दिल को न सुधारा जाए।

क़ुरआन व हदीस में, कामों के आधार पर दिल की कई क़िस्में बताई गई हैं। ज़िन्दा दिल (Safe & Sound-Heart), मुर्दा दिल (Dead-Heart), होशियार दिल (Vigilant-Heart), ग़ाफ़िल दिल (Negligent-Heart), सख़्त दिल (Hard-Heart), नरम दिल (Soft-Heart) और बीमार दिल (Ill-Heart)।

ख़ुदा के बताए हुए मार्गदर्शन पर चलना, दिल की ज़िन्दगी है। ख़ुदा की नाफ़रमानी, दिल की मौत है। ख़ुदा को याद करते रहना, दिल की होशियारी

है। ख़ुदा को भूलना, दिल का ग़ाफ़िल होना है। ख़ुदा की बताई बातों को न समझना, दिल का सख़्त होना है। ख़ुदा की बातों को समझना, दिल का नर्म होना है। और ख़ुदा के साथ दूसरों से भी मदद माँगते रहना, दिल की बीमारी है।

ख़ुदा फ़रमाता है कि हमने बुरे लोगों के दिलों पर मुहर (Seal) लगा दी, इसलिए वे सत्य (Truth) को नहीं समझते। इसका मतलब यह नहीं है कि ख़ुदा ज़ुल्म करता है। किसी का दिल, सत्य को समझने के लिए खोल देता है और किसी के दिल को बन्द कर देता है।

ख़ुदा ने प्रकृति के क़ानून (Law of Nature) बनाए और उन्हें अपना काम (Work of God) कहा। जो कुछ प्रकृति के क़ानून की वजह से होता है, वह ख़ुदा के हुक्म से होता है। इस बात को जब ख़ुदा बताता है, तो कहता है "हम ने ऐसा किया"। इनसान बताता है, तो कहता है "लॉ ऑफ नेचर" की वजह से ऐसा हुआ"।

जिन लोगों के दिलों पर मुहर लग जाती है और वे सत्य को नहीं समझते, ऐसा उनके अपने कामों के नतीजे में होता है। शुरू में उनका दिल सत्य को समझ सकता था, मगर उन्होंने बार-बार सत्य का इनकार किया। लगातार बुरे कामों के करते रहने और उनपर अड़ने की वजह से, उनके दिलों पर मुहर लगती चली गई, यहाँ तक कि दिल सत्य को देखने से अन्धे हो गए, जिसके ज़िम्मेदार वे ख़ुद हैं, न कि ख़ुदा।

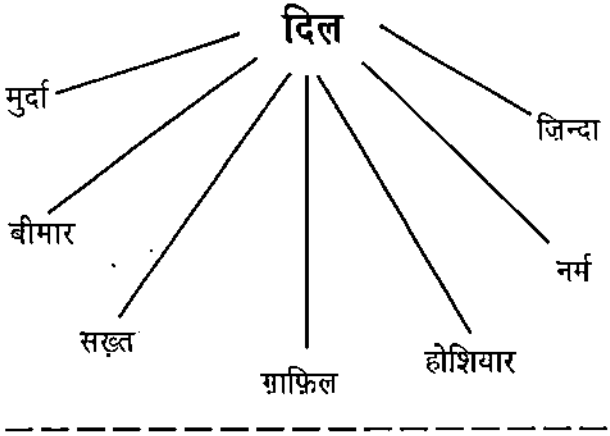

मुहब्बत या हक़
(Love or Right)

"अल्लाह की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो...नातेदार पड़ोसियों के साथ और अपरिचित पड़ोसियों के साथ और साथ रहनेवाले व्यक्ति के साथ।" (क़ुरआन, 4:36)

काम दो तरह के होते हैं—इख़्तियारी और ग़ैर-इख़्तियारी। इख़्तियारी काम, वह है जो इनसान के वश (Control) में होता है, जैसे पानी में कूदना या न कूदना, मुँह से खाना या न खाना। ग़ैर-इख़्तियारी काम, वह है जो इनसान के वश में नहीं होता, जैसे पानी पर चलना, नाक से खाना। इनसान को नाकामी, तब मिलती है, जब वह ग़ैर-इख़्तियारी काम को इख़्तियारी बनाना चाहता है।

मुहब्बत एक जज़्बा है, जो ग़ैर-इख़्तियारी है। इनसान किससे मुहब्बत करे, किससे नहीं, यह इनसान के वश में नहीं होता। एक इनसान बहुत सुन्दर है, बहुत अच्छा है, मगर हमें उससे मुहब्बत नहीं होती। एक इनसान बहुत बदसूरत है, बहुत बुरा है, हमें उससे मुहब्बत हो जाती है।

हक़ (Right) देना, एक इख़्तियारी बात है। इनसान, किसका हक़ अदा करे और किसका नहीं, यह इनसान के वश में होता है।

अपने पड़ोसी से ऐसी मुहब्बत करो, जैसी ख़ुद से करते हो। हर एक पड़ोसी से मुहब्बत करना, इनसान के वश में नहीं होता। यह एक ग़ैर-इख़्तियारी काम है, जो इख़्तियारी नहीं बनाया जा सकता।

इनसान के वश में होता है कि चाहे तो पड़ोसी का हक़ दे, चाहे तो न दे। इस्लाम, इनसान से कहता है कि पड़ोसी तुम्हें पसन्द है या नापसन्द,

उससे तुम्हें मुहब्बत है या नहीं, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। तुम पड़ोसी का हक़ दो, ख़ुदा तुम से राज़ी हो जाएगा। यह एक व्यावहारिक बात है, न कि ख़याली बात। इसे सौ में से सौ आदमी भी कर सकते हैं।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने पड़ोसियों पर, एक-दूसरे के ये हक़ बताए हैं : पड़ोसी बीमार हो, तो उससे मिला जाए और उसकी मदद की जाए। पड़ोसी की मौत हो, तो उसके जनाज़े के साथ जाया जाए। पड़ोसी को ज़रूरत हो, तो उसे उधार दिया जाए। पड़ोसी को कोई ख़ुशी मिले, तो उसे मुबारकबाद दी जाए। पड़ोसी को कोई तकलीफ़ हो, तो ढारस बंधाया जाए। पड़ोसी भूखा व नंगा हो, तो उसे खाना व कपड़ा दिया जाए। अपने चुल्हे के धुएँ से उसे तकलीफ़ न दी जाए।

भूख-रहित दुनिया (Hunger-Free-World) मुमकिन है, अगर पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) की इस बात पर अमल किया जाए—

"मुसलमान, वह नहीं जो स्वयं पेट भरकर खाले और उसका पड़ोसी भूखा सोए।"

(Nobody can be a believer, If his neighbor pass
the night hungry, while he has his stomach full.)

दुनिया में हर इनसान, हर वक़्त, किसी-न-किसी दूसरे इनसान का पड़ोसी है। Mr. A, Mr. B के, Mr. B, Mr. C के...। एक इनसान कभी, एक इनसान का पड़ोसी होता है और कभी, कई-कई इनसानों का। इनसान कभी, घर का पड़ोसी होता है, कभी दफ़्तर का, कभी सफ़र का, कभी मुल्क का। इनसान, कभी रिश्तेदार का पड़ोसी होता है और कभी अजनबी का पड़ोसी होता है। इनसान, कभी मुस्तक़िल पड़ोसी (Permanent Neighbor) होता है और कभी ग़ैर-मुस्तक़िल (Temporary Neighbor)।

अगर हर इनसान, सिर्फ़ इस बात का ध्यान रखे कि उसके पड़ोसी ने खाना खाया है या नहीं; अगर नहीं खाया है तो खिला दे, तो दुनिया में कभी कोई इनसान भूखा न सोए और न कभी कोई भूख से मरे।

अच्छाई फैलाना : बुराई रोकना
(Promoting Good : Suppressing Evil)

"तुम्हें एक ऐसे समुदाय का रूप धारण कर लेना चाहिए, जो नेकी की ओर बुलाए और भलाई का आदेश दे और बुराई से रोके। यही सफलता प्राप्त करनेवाले लोग हैं।" (क़ुरआन, 3:104)

समाज में कई तरह के लोग होते हैं; बुराई फैलानेवाले, बुरे लोग। बुराई न फैलानेवाले, बुरे लोग। अच्छाई फैलानेवाले, बुरे लोग। बुराई फैलानेवाले, अच्छे लोग। अच्छाई न फैलानेवाले, अच्छे लोग और अच्छाई फैलानेवाले, अच्छे लोग।

खुदा की नज़र में सबसे बुरे, वे लोग हैं, जो ख़ुद बुरे होते हैं और बुराई भी फैलाते हैं। और वे लोग, सबसे अच्छे हैं, जो ख़ुद भी अच्छे होते हैं और लोगों को अच्छाई की तरफ़ बुलाते हैं, बुराई से बचने व अच्छाई करने में उनकी मदद भी करते हैं।

बुराई को रोकने और अच्छाई को फैलाने के लिए, एक आदमी की जिद्दोजुहद (Struggle) के मुक़ाबले, कई लोगों की मिली-जुली कोशिश ज़्यादा असर रखती (Effective) है। अकेला आदमी जब किसी बड़ी बुराई को रोकने की कोशिश करता है, तो उसके नुक़सान उठाने का ख़तरा ज़्यादा होता है। ग्रुप बनाकर अच्छाई को फैलाने की कोशिश करने में कामयाबी की ज़्यादा उम्मीद होती है और नुक़सान का कम ख़तरा।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"बुराई होते देखो, तो हाथ से रोको, वरना ज़बान से रोको, वरना दिल में बुरा जानो।"

इनसान इन तीन हालतों (Situations) में से किसी एक हालत में होता है। कभी ज़्यादा ताक़त रखता है (Powerful Situation)। कभी कम ताक़त रखता है (Less Powerful Situation)। और कभी बिलकुल ताक़त नहीं रखता (Powerless Situation)। कभी आदमी तीसरी हालत में होता है, मगर काम करता है पहली हालत के मुताबिक़, नतीजा; नुक़सान उठा जाता है। हक़ीक़त में सही काम, वह होता है, जो नतीजा देखकर किया जाए।

लम्बे समय तक किसी बुराई को बर्दाश्त करने का बुरा नतीजा निकलता है; बुराई जड़ पकड़ लेती है। बुराई मज़बूत हो जाती है। बुराई को स्वीकार (Accept) कर लिया जाता है। और बुराई को बुरा समझने का एहसास भी ख़त्म हो जाता है।

इनसान के बुराई करने की अस्ल वजह यह है कि वह ज़बान से तो अपने दुनिया में रहने को थोड़े वक़्त के लिए (Temporary Stay) और सफ़र की हालत (Journey) में बताता है, लेकिन उसके अमल से ऐसा लगता है कि वह हमेशा-हमेशा के लिए ज़मीन पर रहनेवाला और मंज़िल पर है। अगर ज़ालिम अपनी ताक़त को अस्थायी (Temporary) माने और दुनिया को इम्तिहान, तो वह ज़ुल्म न करे।

मज़हबी सोच
(Religious Mindset)

"धरती में अधिकतर लोग ऐसे हैं कि यदि तुम उनके कहने पर चले तो वे अल्लाह के मार्ग से तुम्हें भटका देंगे। वे तो केवल अटकल के पीछे चलते हैं और वे निरे अटकल ही दौड़ाते हैं।"

(क़ुरआन, 6:116)

"निश्चय ही अटकल सत्य को कुछ भी दूर नहीं कर सकती।"

(क़ुरआन, 10:36)

इनसान का काम, उसकी सोच का नतीजा होता है। सोचों के सही होने पर ही, कामों का सही होना निर्भर करता है। ज़रूरत है कि इनसान अपनी सोचों पर कड़ी नज़र रखे। वरना, इनसान को पता भी नहीं चलता और ग़लत सोचों की वजह से, वह सारी ज़िन्दगी ग़लत काम ही करता चला जाता है। मज़हब के सिलसिले में ज़्यादातर लोग, ऐसी सोचें रखते हैं, जो सही नहीं होतीं–

बुज़ुर्गों (Elders) ने कहा : हमारे बुज़ुर्ग ऐसा करते थे, इसलिए हम भी ऐसा करते हैं। इसका मतलब होता है, बुज़ुर्ग हमेशा सही कहते / करते थे। यह सोच सही नहीं है। जैसे आज के बुज़ुर्ग, किसी बात को सही समझकर, सही भी कह सकते हैं और ग़लत भी। इसी तरह पहले के बुज़ुर्ग भी, किसी बात को ग़लत समझकर, ग़लत भी कह सकते थे और सही भी। बुज़ुर्गों की बातों के सही या ग़लत होने की 50 प्रतिशत/50 प्रतिशत सम्भावना (Possibility) होती है।

बहुत सारे लोग करते हैं, इसलिए हम भी करते हैं। इसका मतलब है, भीड़ या ज़्यादा लोग जो काम करते हैं, वह हमेशा सही होता है (Majority

is always right) । यह ग़लत सोच है। सही काम को ज़्यादा लोग न करें, तो वह ग़लत नहीं हो जाता। ग़लत काम को ज़्यादा लोग करें, तो वह सही नहीं बन जाता। अगर ज़्यादा लोगों के कामों को, सही या ग़लत होने की कसौटी बना लिया जाए, तो दुनिया में ज़्यादातर लोग, जाहिल होते हैं, ग़रीब होते हैं, बीमार होते हैं और शिर्क करते हैं। तो क्या, जहालत, ग़रीबी, बीमारी और शिर्क को अच्छा मान लिया जाए?

किसी (मज़हबी) काम के करने में मज़ा आ रहा हो, तो वह सही है। यह ग़लत सोच है। बुरे काम करनेवालों को बुरे कामों में मज़ा आता है, इसी लिए वे बार-बार उसे करते हैं। जैसे शराबी, जुवारी, क़ातिल, मग़रूर और ज़ालिम। मज़ा मिलना, किसी बुरे या ग़लत काम को अच्छा या सही नहीं बना देता। मज़ा न मिलना, किसी अच्छे या सही काम को बुरा या ग़लत नहीं बनाता। ऐसा मुमकिन है कि हम कोई मज़हबी काम, ग़लत कर रहे हों और हमें मज़ा आ रहा हो, या सही कर रहे हों और मज़ा न आ रहा हो। इसी तरह हम कोई मज़हबी काम ग़लत कर रहे हों और मज़ा न आ रहा हो, या सही कर रहे हों और मज़ा आ रहा हो। कौन-सा मज़हबी काम सही है और कौन-सा ग़लत, इसके लिए तो दूसरा पैमाना/Criterion (यानी ख़ुद, मज़हब किसे सही कहता है और किसे ग़लत) होना चाहिए, न कि मज़ा।

अच्छी नीयत (Good Intension) और निष्ठा (Sincerity) के साथ जो भी (मज़हबी) काम किया जाता है, वह सही होता है। ख़ुदा उसे क़बूल करता है। यह सोच ग़लत है। अच्छी नीयत और निष्ठा, किसी ग़लत काम को सही नहीं बनाते। किसी मज़हबी काम का करना कब और कैसे सही होता है और कब और कैसे ग़लत, इस बात का फ़ैसला, सिर्फ़ मज़हब करता है, न कि नीयत व निष्ठा।

किसी (मज़हबी) बात पर अमल करना, उसका इल्म (Knowledge) हासिल करने से ज़्यादा बेहतर है। यह ग़लत सोच है। इल्म और अमल, दोनों अलग-अलग नहीं, बल्कि एक ही चीज़ है। इल्म हासिल करना ख़ुद एक अमल है। क्योंकि इल्म हासिल करने के दौरान, इनसान ख़ुद को एक जगह बिठाता है, आराम करने की चाह के बावजूद आराम नहीं करता, अपनी

आँखें, कान, हाथ, दिमाग़, इन सबका इस्तेमाल करता है। हक़ीक़त में किसी बात पर अमल करना और उसका इल्म हासिल करना, इन दोनों में से दूसरी बात ज़्यादा बेहतर होती है। वह आदमी जो बिना समझे किसी अच्छे काम को करता है, उस आदमी से बेहतर नहीं है, जो समझ-बूझकर बुरा काम करता है। क्योंकि पहला आदमी जिस तरह बिना समझे अच्छा काम कर सकता है, बुरा भी कर सकता है, वह किसी दूसरे का सुधार भी नहीं कर सकता, वह अपने अच्छे काम की नसीहत भी नहीं कर सकता। जबकि दूसरे आदमी से ज़्यादा उम्मीद है कि वह अपने बुरे काम की समझ-बूझ की वजह से, उससे रुक जाए और किसी दूसरे को भी उस काम से रोक दे।

पहले ख़ुद सुधर जाएँ, फिर दूसरों के सुधार की कोशिश करेंगे। यह सोच ग़लत है। इनसान, अन्दर और बाहर से बदलनेवाली मख़लूक़ (Creation) है। कब बुरा इनसान, अच्छा बन जाए और कब अच्छा इनसान, बुरा हो जाए; कहा नहीं जा सकता। दुनिया इम्तिहान है। इनसान को आज़ादी मिली है। इनसान के लिए सही काम या ग़लत काम करने के दोनों रास्ते मौत तक खुले रहते हैं।

कोई इनसान अपनी मौत तक यह दावा (Claim) नहीं कर सकता कि वह नेक हो चुका। ख़ुद का सुधार करने की कोई हद (Limit) भी नहीं बनाई ज़ा सकती। इनसान नहीं कह सकता कि बीस साल बाद, तीस साल बाद, वह मुकम्मल सही (Mr. Perfect) हो जाएगा। ख़ुद को सही करने की कोशिश करते रहना और दूसरों को सही होने के लिए कहते रहना, एक साथ करनेवाला काम (Parallel Process) है। दूसरे लोगों से बार-बार अच्छा बनने को कहते रहने का एक बड़ा फ़ायदा यह भी होता है कि दूसरे सुधरें या न सुधरें (अच्छी) बात पलट कर वापस कहनेवाले पर आती है और वह ख़ुद ज़रूर सुधर जाता है।

मज़हब के सिलसिले में हमारे इस ग़लत रवैये (Wrong Attitude) की कई वजहें हैं—हम अपने हर काम के सिलसिले में माहिरीन (Experts) से मदद लेते हैं, जैसे बीमारी में डॉक्टर से, मकान बनवाने के लिए इंजीनियर से, मगर मज़हब के सिलसिले में हम अनाड़ियों से मशविरा करते हैं, या

अपने गुमान पर चलते हैं। मज़हबी बात के सिलसिले में हम यह नहीं देखते कि वह बात असली व प्रमाणित (Authentic) है, या नक़ली व अप्रमाणित (Un-authentic)।

हम जिस तरह अपनी मज़हबी किताब (Holy Book) को न बदलनेवाली (Un- Changeable) समझते हैं, उसी तरह उसकी व्याख्या (Interpretation) को भी, न बदलनेवाली समझते हैं, जबकि वह बदली (Changeable) जा सकती है।

हम अपने मज़हबी आलिमों की बातों को भी इतिहास पर, अक़्ल पर नहीं परखते (No Cross Check) । हम अपनी ज़िद की वजह से अपनी ग़लत बात पर अड़े रहते हैं। जबकि अन्दर से हम जान रहे होते हैं कि हम ग़लत हैं। हम ज़्यादातर अपने गुमानों और ख़ाहिशों की पैरवी करते हैं। हम मज़हब के सिलसिले में अपने दिमाग़ का बहुत कम इस्तेमाल करते हैं। नतीजा, ये और इस तरह की दूसरी सारी सोचें हमारे लिए सत्य (Truth) तक पहुँचने के रास्ते में एक बड़ी रुकावट (Barrier) बन जाती हैं।

अच्छा व्यक्ति और बुरा समाज
(Good Individual and Bad Society)

"तुम देखते हो कि उनमें से बहुतेरे लोग हक़ मारने, ज़्यादती करने और हरामख़ोरी में बड़ी तेज़ी दिखाते हैं। निश्चय ही बहुत ही बुरा है जो वे कर रहे हैं।" (क़ुरआन, 5:62)

ऐसा समाज, जिसमें सिर्फ़ अच्छाई हो, बुराई कोई न हो, या सिर्फ़ बुराई हो, अच्छाई कोई न हो, न कभी था, न कभी होगा। दुनिया इम्तिहान के लिए बनाई गई है और इनसान को अच्छा या बुरा काम करने की आज़ादी दी गई है। अच्छाई व बुराई के बीच कशमकश हमेशा चलती रहती है। कभी अच्छाई पर चलनेवाले कम हो जाते हैं और बुराई पर चलनेवाले ज़्यादा। कभी अच्छाई व बुराई पर चलनेवाले बराबर हो जाते हैं। और कभी अच्छाई पर चलनेवाले ज़्यादा होते हैं और बुराई पर चलनेवाले कम। समाज की यह तीसरी हालत "अच्छा समाज" (Good Society) कहलाती है।

समाज हमेशा इन चार हालतों में से किसी एक हालत पर होता है—

1. अच्छा व्यक्ति और अच्छा समाज (Good Individual & Good Society)
2. बुरा व्यक्ति और बुरा समाज (Bad Individual & Bad Society)
3. बुरा व्यक्ति और अच्छा समाज (Bad Individual & Good Society)
4. अच्छा व्यक्ति और बुरा समाज (Good Individual & Bad Society)

समाज, पहली हालत पर कभी नहीं होता। दुनिया को ख़ुदा ने इनसान के इम्तिहान के लिए बनाया है। दुनिया अमल की जगह है। मिली हुई आज़ादी की वजह से इनसान अच्छाई भी करता है और बुराई भी। दुनिया की ज़िन्दगी में तकलीफ़ें, कमज़ोरियाँ हादसात, दुख रखे गए हैं। ताकि इनसान को आज़माया जाए और उसकी सही पहचान हो सके।

समाज दूसरी हालत पर भी कभी नहीं होता। एक हद से ज़्यादा ख़ुदा

इनसानों को जुल्म और बुराइयाँ करने की इजाज़त नहीं देता। न तो व्यक्ति ही अच्छा रहे और न समाज तो खुदा का अज़ाब आता है। और ज़ालिम व बुरे लोगों को ख़त्म कर दिया जाता है।

हर समाज में कुछ-न-कुछ अच्छे लोग ज़रूर पाए जाते हैं। ताकि लोगों के सामने, बुराई के साथ-साथ, अच्छाई का भी नमूना रहे। इनसान अपनी बनावट में अच्छा है। इनसान अपनी बुराइयों से अपनी अच्छाई को दबा देता है, मगर ख़त्म नहीं कर पाता। इसी लिए बुरे-से-बुरा इनसान भी, किसी-न-किसी के लिए अच्छा ज़रूर होता है।

समाज, तीसरी हालत पर होता है, मगर बहुत ही कम समय के लिए। समाज अकसर, चौथी हालत पर ही होता है। व्यक्ति (या कुछ लोग) अच्छा होता है और समाज की अक्सरियत बुरी होती है। समाज की अक्सरियत (Majority) का सहयोग (Support) बुराई के साथ होता है, न कि अच्छाई के साथ। इसी लिए व्यक्ति को अच्छाई पर अमल करना मुश्किल लगता है। समाज की अक्सरियत रिश्वत लेने, झूठ बोलकर व्यापार करने को पसन्द करती है। अच्छाई पर चलनेवाले के लिए रिश्वत न लेना, सच बोलकर व्यापार करना मुश्किल हो जाता है।

एक देहाती इलाज के लिए डॉक्टर के पास जाता है। डॉक्टर उसे दवाई देता है और कहता है कि लहसुन, प्याज़, आलू मत खाना। देहाती कहता है कि मेरे गाँव में तो सिर्फ़ लहसुन, प्याज़ और आलू ही होता है। क्लीनिक से बाहर आकर देहाती लोगों से कहता है, डॉक्टर बहुत ज़ालिम है, खाने की सभी चीज़ों को मना करता है। इस केस में, ग़लती गाँव की है न कि डॉक्टर की। इसी तरह समाज में हर तरफ़ फैली बुराई की वजह से अच्छाई पर चलना मुश्किल नज़र आता है, वरना अच्छाई पर चलना तो आसान होता है। **जैसे झूठ बोल कर उसे याद रखना पड़ता है, जबकि सच को याद रखने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती, वह ख़ुद-ब-ख़ुद याद रहता है।**

अच्छाई पर चलना, पहाड़ पर चढ़ने जैसा होता है, हर क़दम पर मेहनत करनी होती है। बुराई पर चलना, खाई में गिरने जैसा होता है। सिर्फ़ एक क़दम बढ़ाने की ज़रूरत होती है, बाक़ी काम ख़ुद-ब-ख़ुद हो जाता है।

हँसी न उड़ाना
(No Taunting)

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! न पुरुषों का कोई गिरोह दूसरे पुरुषों की हँसी उड़ाए, सम्भव है वे उनसे अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ, सम्भव है वे उनसे अच्छी हों; और न अपनों पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो।" (क़ुरआन, 49:11)

इनसान (की बनावट) में ख़ुद को बड़ा साबित करने का एक जज़्बा (Emotion) होता है। यह जज़्बा इनसान व समाज के लिए बहुत फ़ायदेमन्द है। अगर यह नहीं होता तो दुनिया में कोई भी नया काम नहीं हो पाता—न कोई नई बिल्डिंग बनतीं, न कोई नई रिसर्च होती, न कोई नई ईजाद (Invention)। इल्म की तरक़्क़ी भी रुक जाती।

दूसरों के मुक़ाबले, ख़ुद को बड़ा साबित करने का यह जज़्बा, इनसान के अन्दर एक दबाव (Pressure) पैदा करता है। किसी इनसान में यह दबाव ज़्यादा होता है और किसी में कम। इस जज़्बे की तस्कीन (Fulfilment) दो तरीक़े से हो सकती है—नकारात्मक (Negative) और सकारात्मक (Positive)।

नकारात्मक तरीक़ा यह है कि ख़ुद को बड़ा साबित करने के लिए, दूसरों को छोटा साबित किया जाए; उनका मज़ाक़ बनाकर, उनको ताने देकर और उन्हें बुरे नामों से पुकार कर। सकारात्मक तरीक़ा यह है कि ख़ुद बहुत मेहनत करके कोई बड़ा फ़ायदेमन्द और नया काम किया जाए, ताकि लोग बड़ा मानें और अहमियत दें। पहला तरीक़ा आसान है और दूसरा तरीक़ा मुशकिल है। ज़्यादातर लोग पहले तरीक़े को ही अपनाते हैं।

किसी का मज़ाक़ उड़ाने में, सिर्फ़ ज़बान व क़लम से मज़ाक़ उड़ाना ही नहीं आता, बल्कि नक़ल उतारना, किसी हरकत पर हँसना, किसी की

जिस्मानी ख़राबी की तरफ़ लोगों का ध्यान दिलाना, चोटें कसना, ग़लत इल्ज़ाम लगाना, खुल्लम-खुल्ला या इशारों में किसी को मज़ाक़ का निशाना बनाना, ताने देना वग़ैरा सभी आता है।

खुदा को यह सब बुरी बातें नापसन्द हैं। इनके दो तरफ़ा बुरे असर पड़ते हैं। एक, मज़ाक़ उड़ानेवाले और जिसका मज़ाक़ उड़ाया जाए, दोनों के बीच के रिश्ते ख़राब हो जाते हैं। दूसरे, दोनों के रिश्तेदारों, दोस्तों, हमदर्दों के भी, एक-दूसरे से रिश्ते ख़राब हो जाते हैं। ये बातें सामाजिक रिश्तों को बिगाड़ कर नफ़रत का माहौल बनाती हैं। यह नफ़रत आगे चलकर दुश्मनी और फिर इन्तिक़ाम में बदल जाती है।

मरने के बाद ज़िन्दगी
(Life after Death)

"तुम तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो, हालाँकि आख़िरत अधिक उत्तम और शेष रहनेवाली है।"

(क़ुरआन, 87:16-17)

"वे सांसारिक जीवन के केवल बाहरी रूप को जानते हैं। किन्तु आख़िरत की ओर से वे बिल्कुल असावधान हैं। क्या उन्होंने अपने आपमें सोच-विचार नहीं किया? अल्लाह ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है सत्य के साथ और एक नियमित अवधि ही के लिए पैदा किया है। किन्तु बहुत से लोग तो अपने प्रभु के मिलन का इनकार करते हैं।" (क़ुरआन, 30:7-8)

दुनिया में मुकम्मल इनसाफ़ (Perfect Justice) नहीं हो सकता। एक आदमी ने दस लोगों का क़त्ल किया, उसे पकड़ा गया और एक बार फ़ांसी पर लटका दिया गया। यह मुकम्मल इनसाफ़ नहीं है। मुकम्मल इनसाफ़ तब होता, जब क़ातिल को दस बार मारा जाता और दस बार ज़िन्दा किया जाता। इसके अलावा मरनेवालों को भी ज़िन्दा किया जाता और उनके सामने, उनके क़ातिल को मारा जाता, ताकि वे ख़ुश होते और मानते कि हाँ हमें इनसाफ़ मिला। क्या ऐसी दुनिया है जहाँ ऐसा हो सके?

एक आदमी ने चोरी की, उसे सज़ा मिली, क़ैद कर दिया गया। चोर को तकलीफ़ हुई, मगर जब तक वह क़ैद में रहा उसकी माँ को भी तकलीफ़ होती रही। जुर्म तो बेटे ने किया था, सज़ा माँ को क्यों मिल रही है? माँ को तकलीफ़ इसलिए होती रही, क्योंकि माँ और बेटे के बीच एक जज़्बाती रिश्ता (Emotional Link) होता है। यह लिंक, अगर काट दिया जाता, तो बचपन में बच्चे की परवरिश व देख-भाल कैसे होती। सर्दी की रात में तीन

बजे, जब बच्चा पेशाब करता और रोता, तो माँ क्यों उठती, अगर ऐसा न होता तो बच्चे को नमूनिया हो जाता और वह मर जाता। मुकम्मल इनसाफ़ के लिए ज़रूरी है कि एक ऐसी दुनिया हो, जहाँ माँ-बेटे दोनों जवान हों और दोनों के बीच जज़्बाती रिश्ता (Emotional Link) न हो, ताकि सज़ा की तकलीफ़ सिर्फ़ मुजरिम को हो, किसी और को न हो। क्या ऐसी दुनिया है?

दुनिया में हर काम (Action) का रद्देअमल (Reaction) नज़र आता है। एक आदमी ने दूसरे आदमी को मारा, वह बेहोश हो गया। भूखे आदमी ने खाना खाया, उसकी भूख ख़त्म हो गई। बीमार ने दवा खाई, वह ठीक हो गया। मगर दुनिया में कुछ काम ऐसे भी हैं, जिनका रद्देअमल नज़र नहीं आता। आप ने किसी अन्धे को सड़क पार करा दी। रास्ते से केले का छिलका हटा दिया। खुद भूखे रहकर, भूखे को खाना खिला दिया। ऐसे कामों का रद्देअमल (प्रतिक्रिया) कहाँ है?

सभी रिश्तों (Relationship) में एक मिलने की जगह (Meeting Place) भी होती है। डॉक्टर और मरीज़ का रिश्ता, मीटिंग प्लेस है, क्लीनिक। वकील और मुवक्किल का रिश्ता, मीटिंग प्लेस है, कोर्ट। टीचर और छात्र का रिश्ता, मीटिंग प्लेस है, क्लास। माता-पिता और संतान का रिश्ता, मीटिंग प्लेस है, घर। ख़ालिक़ (Creator) और मख़लूक़ (Created) का रिश्ता, मीटिंग प्लेस कहाँ है?

मुकम्मल ख़ुशी (Perfect Pleasure) पाने के लिए इनसान को चाहिए– उसकी सभी ज़रूरतें पूरी हों। उसकी सभी इच्छाएँ पूरी हों। वर्तमान और भविष्य में सुरक्षा (Security) मिले। उसके सभी रिश्तेदार मौजूद हों (मैं ख़ुश नहीं हो सकता, जब तक मेरे बाप न मौजूद हों, मेरे बाप ख़ुश नहीं हो सकते जब तक उनके बाप ज़िन्दा न हों। मेरे बाप के बाप ख़ुश नहीं हो सकते जब तक उनके बाप मौजूद न हों...), सभी सेहतमन्द हों, सभी के पास दौलत हो, कोई बीमार न हो, कोई किसी हादसे का शिकार न हो, कोई मरे न, वग़ैरा। मगर दुनिया में ऐसा नहीं होता। इनसान को दुनिया में मुकम्मल ख़ुशी क्यों नहीं मिलती?

सोचो! अगर इस धरती के सभी इनसानों को हटा दिया जाए, तो क्या होगा? कुछ भी फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। सूरज निकलेगा, उसकी गर्मी से समुद्र में भांप बनेगी, भाप से बादल बनेंगे, जिनसे बारिश होगी, Water-Cycle इसी तरह चलता रहेगा। छिपकली को मेंढक खाएगा, मेंढक को सांप खाएगा, सांप को ईगल खाएगा; Food-Chain भी इसी तरह चलती रहेगी।

सोचो! अगर इस धरती में इनसान तो हों, मगर सूरज या हवा या पानी, में से किसी भी एक चीज़ को निकाल दिया जाए, तो क्या होगा? धरती का पूरा निज़ाम (System) ख़त्म (Collapse) हो जाएगा। इससे साबित होता है कि इनसान इस निज़ाम से (ज़्यादातर) फ़ायदा उठानेवाला (Receiver) है, न कि फ़ायदा पहुँचानेवाला (Contributor)। जबकि दूसरी सभी चीज़ें इनसान को सिर्फ़ फ़ायदा पहुँचा रही हैं। मालूम होता है कि धरती का यह ढाँचा (Structure) इनसान के लिए है? तो फिर इनसान किस ढाँचे (Structure) के लिए है?

एक ज़िन्दा और मुर्दा इनसान में फ़र्क़ होता है। ज़िन्दा इनसान के दिमाग़ में ख़यालात (Thoughts) आ रहे होते हैं। वह बात कर सकता है। वह हरकत (Action) कर सकता है।

मनोविज्ञान (Psychology) के अनुसार, इनसानी दिमाग़ के दो हिस्से होते हैं : शुऊर (Conscience) और लाशुऊर (Non-Conscience)। लाशुऊर, इनसानी दिमाग़ का गोदाम होता है। इसमें इनसान की छोटी-बड़ी सभी सोचें जमा (Deposit) होती रहती हैं। एक इनसान की याद्दाश्त (Memory) खो गई, वह सब कुछ भूल गया। जब उसकी याद्दाश्त वापस आई, उसे सब कुछ याद आ गया। या, कभी-कभी ख़ाबों (Dreams) में बचपन की बातें नज़र आती हैं। इससे साबित होता है कि इनसान की सभी सोचें, कहीं महफ़ूज़ होती रहती हैं, तभी तो वापस आती हैं। इनसान की छोटी-बड़ी सभी सोचें उसके लाशुऊर में दर्ज (Record) हो रही हैं।

भौतिक विज्ञान (Physics) के अनुसार, इनसान जो आवाज़ (बात) निकालता है, वह कभी ख़त्म नहीं होतीं। बल्कि एक लाख, छियासी हज़ार

मील फ़ी सेकेंड की रफ़्तार से हवा में घूमती रहती हैं। साइंस ने इतनी तरक़्क़ी कर ली है कि माज़ी (Past) की आवाज़ों को रिकार्ड कर सके, सुन सके। मगर ये सब आवाज़ें मिली-जुली हैं, अभी इन्हें अलग नहीं किया जा सका है। साइंस कोशिश कर रही है, इन आवाज़ों को अलग-अलग करके सुनने की। मालूम होता है कि इनसान की छोटी-बड़ी सभी आवाज़ें रिकार्ड की जा रही हैं। आवाज़ की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है?

इनसान के शरीर से हरारती लहरें (Heat Waves) निकलती हैं। यह इनसान की हर-हर हरकत (खड़े, बैठे, लेटे) का फ़ोटो बनाती हैं। नवम्बर, 1960 ई॰ के Reader Digest (मैगज़ीन) में लिखा था कि अमेरिका के ऊपर से एक हवाई जहाज़ गुज़रा, दो घण्टे बाद उस ख़ाली जगह से, जहाज़ में बैठे मुसाफ़िरों के फ़ोटो ले लिए गए। वह कैमरा, जो इनसान के जाने के बाद, ख़ाली जगह से, उस इनसान का फ़ोटो ले सके, "Evaporagraph" कहलाया। साइंस में बहस इस बात पर है कि किसी इनसान के हटने के बाद, उस ख़ाली जगह पर, उस इनसान का फ़ोटो चन्द घण्टे बाक़ी रहता है, या हमेशा-हमेशा। मुमकिन है यह फ़ोटो हमेशा रहता हो। अभी साइंस ने इतनी तरक़्क़ी नहीं की कि कई साल बाद भी ख़ाली जगह से फ़ोटो ले सके। मगर ऐसा मुमकिन है। मालूम हुआ कि इनसान की एक-एक हरकत रिकार्ड हो रही है। इनसान की हरकतों (Movements) की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है?

इनसान की सोचों, बातों और कामों की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है? क्या किसी अदालत के लिए, जहाँ यह पेश की जाएगी और इसके आधार पर कोई फ़ैसला होगा?

इनसान के इन सभी सवालों का जवाब ख़ुदा ने दिया है। ख़ुदा ने बताया, इनसान की ज़िन्दगी के दो हिस्से (Parts) हैं। एक, मरने से पहले वाली ज़िन्दगी (Life Before Death) जो बहुत थोड़े समय और इम्तिहान के लिए है। दूसरा, मरने के बाद वाली ज़िन्दगी (Life After Death) जो हमेशा-हमेशा के लिए है, जिसमें मरने से पहले वाली ज़िन्दगी में किए गए कामों के आधार पर, सज़ा (जहन्नम) या इनाम (जन्नत) मिलेगी। मरने के

बाद कभी न ख़त्म होनेवाली ज़िन्दगी को ख़ुदा ने "आख़िरत" (परलोक) का नाम दिया है। आख़िरत को मानना इनसान के सभी सवालों का जवाब है।

ज़िन्दगी की कहानी मौत के साथ ख़त्म नहीं होती। बिलकुल इसी तरह जैसे टी॰वी॰ पर एक फ़िल्म चल रही हो और अचानक बीच में ही यह कह दिया जाए कि फ़िल्म ख़त्म हो गई। या कोई नाविल बीच में ही ख़त्म कर दिया जाए। अगर ऐसा होगा तो फ़िल्म देखनेवाला या नाविल पढ़नेवाला, इस बात को नहीं मानेगा। वह जानना चाहेगा, अंजाम क्या हुआ? फ़िल्म के बनानेवाले, नाविल के लिखनेवाले से यह उम्मीद की जाती है कि वह अंजाम ज़रूर दिखाए। बिलकुल इसी तरह क्या कोई अक़लमन्द इनसान यह मान सकता है, हमारी ज़िन्दगी की कहानी, हमारी मौत के साथ ख़त्म हो जाएगी, जबकि अभी कहानी पूरी नहीं हुई, ख़ुदा हमें हमारे अंजाम तक नहीं पहुँचाएगा। हक़ीक़त में आख़िरत की ज़िन्दगी हमारी कहानी का अंजाम है।

भरोसे का अभाव
(Crisis of Trust)

"ऐ ईमान लानेवालो : तुम वह बात क्यों कहते हो, जो करते नहीं? अल्लाह के यहाँ, यह अत्यन्त अप्रिय बात है कि तुम वह बात कहो, जो करो नहीं।" (क़ुरआन, 61:2-3)

बाप ने बेटे से कहा, "झूठ नहीं बोलते"। बाप से कोई मिलने आया, बाप ने बेटे से कहा "कह दो, मैं घर पर नहीं हूँ"। टीचर ने छात्रों से कहा, "ईमानदार बनो"। अक्सर वह टीचर क्लास ही नहीं लेता। लीडर ने कहा, "देश के लिए क़ुरबान हो जाओ"। वह ख़ुद तरह-तरह के घोटाले करके देश को अपने हित पर क़ुरबान कर रहा है।

समाज में ज़्यादातर लोग, जो कह रहे हैं, वह कर नहीं रहे। इस बात का बुरा असर यह पड़ता है कि "भरोसे का अभाव" हो गया है। इनसान का इनसान पर से भरोसा ख़त्म करने में फ़िल्मों का भी बड़ा हाथ है।

पुरानी फ़िल्मों में दिखाया जाता था; एक यतीम लड़की को, तवाइफ़ ने पाला और हिफ़ाज़त से पाला। आज की फ़िल्मों में दिखाया जाता है; एक समाज सेवक है, जो सबकी मदद करता है, आख़िर में पता चलता है कि वह ड्रग्स सप्लायर है। पहले की फ़िल्मों के ज़रिए से यह ज़ेहन (Mentality) बनाया जाता था कि बुरे लोग भी अच्छे होते हैं, उनपर भी भरोसा करना चाहिए। आज यह ज़ेहन बनाया जा रहा है कि अच्छे लोग भी बुरे होते हैं, उनपर भी भरोसा मत करो।

समाज में बढ़ते, भरोसे के अभाव, की वजह से, नौजवानों को कोई आदर्श नमूना (Role Model) नज़र नहीं आता। उन्हें अच्छाई सिर्फ़ सिद्धांत (Theory) में नज़र आती है, न कि व्यवहार (Practice) में। ज़्यादातर नौजवान "मज़े" (Fun / Enjoyment) को ही अपना आदर्श नमूना (Role

Model) बना रहे हैं और सुखवाद (Hedonism) : The belief that pleasure should be the main aim in life जैसे फ़लसफ़े पनप रहे हैं।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने बताया--क़ियामत के दिन, एक आदमी को लाया जाएगा, फिर उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा, तब उसकी आँतें, आग में निकल पड़ेंगी। वह इस तरह घूमेगा, जिस तरह गधा अपनी चक्की को लेकर घूमता है। जहन्नम के दूसरे लोग, उसके पास जमा हो जाएँगे और कहेंगे : ऐ आदमी! यह तेरा क्या हाल है? क्या तू हमें अच्छी बातों का हुक्म नहीं देता था और बुरी बातों से हमें रोकता नहीं था। वह कहेगा कि मैं तुम्हें अच्छी बातों का हुक्म देता था, मगर उन्हें खुद न करता था। और तुम्हें बुरी बातों से रोकता था, मगर खुद उन्हें करता था। (हदीस : बुख़ारी)

तास्सुब
(Prejudice)

"जब लोगों के बीच फ़ैसला करो, तो न्यायपूर्वक फ़ैसला करो।" (क़ुरआन, 4:58)

"ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इनसाफ़ करना छोड़ दो। इनसाफ़ करो, यही परहेज़गारी से ज़्यादा क़रीब है।" (क़ुरआन, 5:8)

इनसान एक जज़्बाती वुजूद (Emotional Existence) रखता है। इनसान में पसन्द और नापसन्द का जज़्बा होता है। इनसान, अपने से अलग लोगों के मुक़ाबले अपने जैसे लोगों को ज़्यादा पसन्द करता है। इनसान की पसन्द/नापसन्द, जब असन्तुलित हो जाती है, तब 'तास्सुब' पैदा होता है। इनसान अपने ख़यालात, अपने रिश्तेदार, अपनी क़ौम से इतनी ज़्यादा मुहब्बत करने लगता है कि दूसरों से उसे नफ़रत होने लगती है। ऐसे इनसान का अमल "अपने लोगों" (In-Group) के साथ अलग होता है और "दूसरे लोगों" (Out-Group) के साथ अलग।

यह मानना कि तास्सुब इनसानी बनावट (Human Nature) है, ग़लत है। छोटे बच्चों में तास्सुब का न पाया जाना, इसका सुबूत है। तास्सुब, एक असन्तुलित जज़्बा है, जो सन्तुलित किया जा सकता है। ख़ुदा है, देख रहा है और मरने के बाद उसे अपने कामों का हिसाब देना है; यह मानकर तास्सुब से दूरी अपनाई जा सकती है।

तास्सुब कभी-कभी, ज़ाती तजुर्बे (Self-Experience) की वजह से पैदा होता है। अक्सर इनसान यह ग़लती करता है कि वह अपने ज़ाती तजुर्बे को कायनाती सच्चाई (Universal Fact) समझ लेता है। एक क्लास में हिन्दू व मुस्लिम, दो लड़कियाँ पढ़ती थीं। मुस्लिम लड़की ने हिन्दू लड़की का पेन चुरा

लिया। हिन्दू लड़की ने देख लिया, तब से वह कहने लगी, मुसलमान चोर होते हैं। बाद में, यह बात उससे, उसकी बेटी, फिर नवासी ने सीखी।

समाज में पहले से जो ख़यालात व रवैये होते हैं, उन्हें उसी तरह मान लेने से भी तास्सुब पैदा होता है। जैसे कहा जाए कि, फ़लाँ इलाक़े के लोग कंजूस होते हैं या फ़लाँ इलाक़े के लोग खुदग़र्ज़ होते हैं।

अपने गिरोह के ख़यालात से आँखें बन्द करके वफ़ादारी (Un-Conditional Loyalty) दूसरों के ख़यालात को कमतर समझने पर उभारती और तास्सुब पैदा करने का सबब बनती है।

हमें वह चीज़ें / बातें अजीब (Strange) लगती हैं, जिनके हम आदी (Habitual) नहीं होते।

जिसके साथ तास्सुब किया जाता है, उसपर इसका बहुत बुरा असर पड़ता है। उसकी अपनी निगाह में इज़्ज़त (Self - Esteem) कम हो जाती है, जिससे उसमें एहसासे-कमतरी (Inferiority Complex) पैदा होता है। उस इनसान का खुद पर से भरोसा (Self-Confidence) कम हो जाता है। उसका आत्मसंयम (Will-Power) कमज़ोर होता है। उस इनसान में एहसासे-महरूमी पैदा होता है। वह खुद को हर वक़्त ख़तरों में घिरा और अलग-थलग महसूस करने लगता है। उसमें बेचैनी और असन्तुष्टि पैदा होती है। उसकी तख़्लीक़ी सलाहियत (Creative Power) ख़त्म हो जाती है। और ऐसा भी होता है कि वह असंवेदी (Insensitive) हो जाता है। वह अपनी ज़िम्मेदारियों से निगाहें चुराने और कभी-कभी नशे का सहारा भी लेने लगता है। ज़िन्दगी से फ़रार ही उसका मक़सद बन जाता है। कभी-कभी उसकी नापसन्दीदगी; नफ़रत में, नफ़रत; दुश्मनी में और दुश्मनी; इन्तिक़ाम में बदल जाती है।

तास्सुब करनेवाले पर भी इसका बहुत बुरा असर पड़ता है। वह ज़ालिम बन जाता है। इनसाफ़ न करते-करते, यह हाल हो जाता है कि अपने लोगों पर भी ज़ुल्म करने लगता है।

तास्सुब, एक दो धारी तलवार की तरह है। तास्सुब करनेवाला और जिसके साथ तास्सुब किया जाता है, दोनों इसका शिकार बन जाते हैं।

नज़र न आनेवाला ख़ुदा
(Invisible-God)

"उस (ख़ुदा) जैसी कोई चीज़ नहीं।" (क़ुरआन, 42:11)

क्या नज़र न आनेवाले ख़ुदा का मानना, इनसान के लिए अजीब बात होनी चाहिए? इनसान के पास तीन ख़ास चीज़ें हैं, जिनकी मदद से वह किसी बात या चीज़ पर यक़ीन करता है।

(1) इन्द्रियाँ (Senses) (2) कल्पना शक्ति (Imagination) (3) अक़्ल (Intellect)

अपनी इन्द्रियों के ज़रिए, जिस चीज़ को इनसान महसूस करता है, वह उसपर यक़ीन कर लेता है। इनसान, देखकर जानता है कि फूल, ख़ूबसूरत है। सुनकर, जानता है कि आवाज़ सुरीली है। चखकर, जानता है कि फल मीठा है। सूँघ कर, जानता है कि खाना लज़ीज़ है। छू कर, जानता है कि बर्तन गर्म है।

इनसान की इन्द्रियों की ताक़त महदूद (Limited) होती है। इनसान की सभी इन्द्रियाँ, एक ख़ास काम ही कर पाती हैं। देखने की इन्द्री से सिर्फ़ रंगों की दुनिया में देखा जा सकता है। सुनने की इन्द्री से, सिर्फ़ आवाज़ों की दुनिया को महसूस किया जा सकता है। चखने, सूँघने और छूने की इन्द्रियों से, एक ख़ास क्षेत्र में ही काम लिया जा सकता है।

इनसान, अपनी इन्द्रियों से, दुनिया की सभी चीज़ों को महसूस नहीं कर सकता। इनसान, पूरा समुन्द्र न देखकर, उसका उतना ही हिस्सा देख पाता है, जो निगाहों के सामने होता है। इनसान एक चींटी की आवाज़ नहीं सुन पाता। इनसानी कान, आवाज़ की पाँच हज़ार से बीस हज़ार के बीच की बारम्बारता (Frequency) ही सुन सकता है। इनसान के कान, पाँच हज़ार

से कम आवाज़ की लहरों को नहीं सुन सकते और बीस हज़ार से ज़्यादा की आवाज़ की लहरें, कान के परदे फाड़ देती हैं। इनसान चीनी की ख़ुशबू नहीं सूँघ सकता, जबकि चींटी और मक्खी, उसे दूर ही से सूँघ सकती हैं। कमरे में मौजूद टी॰वी॰ के सिग्नल्स को हम महसूस नहीं कर सकते जब तक कि टी॰वी॰ न खोलें। आवाज़ से तेज़ (Supersonic) लहरों को हम नहीं सुन सकते, मगर राडार सुन सकते हैं। हाथी आवाज़ की लहरों के ज़रिए आपस में बातें करते हैं, मगर हम उन्हें नहीं सुन सकते। इनसान की इन्द्रियाँ मौजूदा चीज़ों में से सभी चीज़ों को महसूस नहीं कर सकतीं। बहुत सारी चीज़ें ऐसी हैं, जो इनसान की इन्द्रियों की पहुँच से बाहर हैं।

इनसान के पास एक "कल्पना शक्ति" (Power of Imagination) होती है। जिसकी मदद से वह बहुत-सी चीज़ों को जान लेता है, और उनपर यक़ीन करता है। घर से दूर रहकर घर की कल्पना करना और उसे देख लेना। मगर इनसान की कल्पना शक्ति भी महदूद (Limited) है। इनसान किसी ऐसी चीज़ की कल्पना कर ही नहीं सकता, जिसको उसने पहले अपनी इन्द्रियों के ज़रिए न महसूस किया हो।

दुनिया में जो नई चीज़ बनाई जाती है, वह हक़ीक़त में नई नहीं होती, बल्कि मौजूदा चीज़ों का संकलन (Compilation) होती है। जैसे जहाज़, कंप्यूटर, सैल फ़ोन। दुनिया में जितने आर्ट के नमूने (Masterpieces) हैं, वे भी मौजूदा चीज़ों का नया संकलन हैं। जैसे परो, व इनसानी चेहरेवाले बैल का मुजस्मा (Statue)। इनसान का चेहरा, पर, बैल यह सब मौजूद था, सिर्फ़ इन्हें मिला दिया गया। इसी तरह ज़मीन की कशिश (Gravity of Earth) का नज़रिया। ज़मीन की कशिश पहले से थी, मगर दरयाफ़्त बाद में हुई। या सभी दवाइयाँ कि वे पहले से थीं लेकिन उनकी दरयाफ़्त बाद में हुई।

इनसानी कल्पना, इतनी अधूरी है कि मौजूदा चीज़ों को मिलाकर अनोखी चीज़ बनाने में, अगर हम अलग रास्ता अपनाएँ तो हमारी कल्पना शक्ति उसे पहचान न सकेगी। हम एक चीज़, रंगों की दुनिया से लें और दूसरी चीज़ आवाज़ों की दुनिया से, और कहें; Mr. X ने एक ऐसा गाना गाया, जो गुलाब की तरह ख़ुशबूदार था। या, इस ख़ुशबू का रंग लाल है।

हम ऐसा घेरा (Circle) कल्पना में नहीं ला सकते, जिसका कोई केन्द्र (Centre) न हो। या, ऐसा त्रिकोण (Triangle) जिसका कोण न हो। या, लम्बाई, चौड़ाई और गहराई के अलावा, किसी चौथी चीज़ की कल्पना नहीं कर सकते।

इनसान के पास एक ताक़तवर चीज़ "अक़्ल" है। अक़्ल इनसान को सही रास्ता दिखाती है। अक़्ल बताती है कि रेगिस्तान में रेत, पानी नज़र आता है। सरकस में जादूगर नज़रबन्दी करता है। लेकिन, इनसानी अक़्ल भी महदूद (Limited) है। अक़्ल, सिर्फ़ उन चीज़ों के बारे में फ़ैसला करती है जो वक़्त और जगह (Time & Space) के अन्दर हों। जो चीज़ें इससे बाहर हैं, अक़्ल उनको नहीं समझ सकती जैसे ख़ुदा, रूह और तक़दीर।

इतिहास (History) का टीचर आपसे कहता है कि अमेरिका और रूस के बीच एक जंग हुई, लेकिन यह जंग न बीसवीं सदी से पहले हुई न बाद में, बल्कि किसी भी काल में नहीं हुई, मगर हुई ज़रूर।

भूगोल (Geography) का टीचर आपसे कहता है कि एक देश है, जो न तो मैदान में है और न पहाड़ पर, न ख़ुशकी पर, न पानी पर, न ज़मीन पर और न आसमान पर, बल्कि किसी भी जगह पर नहीं है, मगर है ज़रूर।

इन बातों को आपकी अक़्ल नहीं समझ सकती, बल्कि कहनेवाले को झूठा समझेगी। इनसान की अक़्ल महदूद है, वह सिर्फ़ इस महदूद दुनिया के बारे में जान सकती है। अक़्ल किसी दूसरी दुनिया या ख़ुदा के बारे में कुछ नहीं जान सकती।

इनसान की इन्द्रियाँ, कल्पना शक्ति और अक़्ल, ये सब महदूद हैं। कोई महदूद चीज़ किसी लामहदूद चीज़ को नहीं समझ सकती। ख़ुदा की शख़्सियत (Personality of God) लामहदूद है। इसी लिए नज़र न आनेवाले ख़ुदा को मानना, उसकी बनाई चीज़ों में ग़ौर करना ही इनसान के लिए मुमकिन है, न कि ख़ुदा को देखना।

हैसियत
(Value)

"जब उनके पास निश्चिन्तता या भय की कोई बात पहुँचती है तो उसे फैला देते हैं, हालाँकि अगर वे उसे रसूल और अपने समुदाय के उत्तरदायी व्यक्तियों तक पहुँचाते तो उसे वे लोग जान लेते जो उनमें उसकी जाँच कर सकते हैं।" (क़ुरआन, 4:83)

कभी बात वह होती है, जो नज़र आती है। कभी बात वह होती है, जो नज़र नहीं आती। एक बात/चीज़ जो हमें दिखाई देती है, ज़रूरी नहीं है कि वह हमेशा वही हो, जो हमें नज़र आ रही है। बातों और चीज़ों की दो हैसियतें (Value) होती हैं। दिखाई देनेवाली हैसियत (Face-Value) और हक़ीक़ी हैसियत (Real-Value)। बात या चीज़ की फ़ेस वैल्यू हमेशा नज़र आती है। रिअल वैल्यू, कभी नज़र आती है और कभी नज़र नहीं आती। बातों/चीज़ों की रिअल वैल्यू समझने में अक्सर लोग धोखा खाते हैं। ज़्यादा सोच-विचार करनेवाला आदमी ही किसी बात की रिअल वैल्यू को समझ सकता है और धोखा खाने से बच सकता है।

एक बाप अपने छोटे बेटे को, बीमारी से बचाने के लिए टीके लगवाता है। बेटा अपने बाप के इस काम को बुरा समझता है। उसकी नज़र फ़ेस वैल्यू तक ही पहुँचती है। वह सिर्फ़ उस दर्द को देखता है जो टीका लगने से होता है। बाप अपने उस काम को अच्छा समझता है। उसकी नज़र रिअल वैल्यू तक पहुँचती है। वह उस फ़ायदे (बीमारी से बचाव) को देखता है, जो टीका लगने से बच्चे को होगा।

गाँव में एक आदमी, एक-दूसरे आदमी को, एक तीसरे आदमी की टाँग काटते हुए देखता है। वह दौड़ता है उसे रोकने के लिए, क़रीब पहुँचने पर उसे पता चलता है, वे डॉक्टर और मरीज़ हैं। पहले फ़ेस वैल्यू देखी गई, फिर

रिअल वैल्यू का पता चला।

ज़्यादातर लोग फ़ेस वैल्यू को देखते हैं। सुबह जल्दी उठने का इलाज रात को जल्दी सोना बताते हैं। रिअल वैल्यू के हिसाब से, जल्दी उठना, जल्दी सोने का आदी बनाता है, फिर जल्दी उठना आसान हो जाता है। इनसानी शरीर पन्द्रह घण्टे के बाद सोना चाहता है, इसलिए जल्द उठने का इलाज जल्द उठना ही है, न कि जल्द सोना। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अक्सर यह दुआ माँगा करते—

"ऐ अल्लाह! तू हमें सत्य को पहचानने और उसपर चलने की ताक़त दे। ऐ अल्लाह! तू हमें असत्य को पहचानने की ताक़त दे और उससे बचा। ऐ अल्लाह! तू हमें चीज़ों की सही समझ दे जैसी कि वे हैं।"

(ज़र्कली : अल-आलाम)

एच॰आई॰वी॰
(Human Immuno deficiency Virus)

"व्यभिचार (Adultry) के निकट न जाओ। वह एक अश्लील कर्म और बुरा मार्ग है।" (क़ुरआन, 17:32)

एच॰आई॰वी॰ की पहचान पहली बार 1986 ई॰ में हुई। इस वक़्त दुनिया में 39.4 मिलियन लोग इसके शिकार हैं। हिन्दुस्तान में 5.7 मिलियन लोगों में यह पाया जाता है। हिन्दुस्तान में यह बहुत तेज़ी से फैल रहा है। 1994 ई॰ में 1.74 मिलियंस, 1998 ई॰ में 5.1 मिलियंस, 2000 ई॰ में 3.86 मिलियंस, 2003 ई॰ में 5.1 मिलियंस और 2006 ई॰ में 5.7 मिलियंस लोग एच॰आई॰वी॰ के मरीज़ बने। हर पाँच मिनट में एक आदमी इसका शिकार हो रहा है। इस वाइरस का अभी तक कोई इलाज नहीं निकाला जा सका, जो इसका शिकार बना, मौत ही उसका इलाज बनी।

एच॰आई॰वी॰ इनसान के ख़ून में पाए जानेवाले White Blood Cells (जो शरीर के रक्षक होते हैं) पर हमला करता है। इनसान की रोधक्षमता (Immune System) को बहुत कमज़ोर कर देता है। इनसान, शरीर में आई किसी भी ख़राबी का मुक़ाबला नहीं कर पाता। और तीन माह से सत्रह साल के दौरान मर जाता है। एच॰आई॰वी॰ की वजह से इनसान की जो हालत होती है, उसे AIDS (Acquired Immuno Deficiency Syndrome) कहते हैं।

एच॰आई॰वी॰ ज़्यादातर (87.7 प्रतिशत) अपना शिकार 15 से 44 साल तक के लोगों को बनाता है। 85.7 प्रतिशत एच॰आई॰वी॰ सेक्स की वजह से फैलता है (Sexual Transmission : Heterosexual, Biosexual, Homosexual, Lesbianism)। 2.2 प्रतिशत एच॰आई॰वी॰ नशे के इस्तेमाल से (Drugs), 2.6 प्रतिशत एच॰आई॰वी॰ ख़राब ख़ून चढ़वाने से (Blood

Transfusion), 2.7 प्रतिशत एच॰आई॰वी॰ माँ से बच्चे को (Perinatal Transmission), और 6.8 प्रतिशत एच॰आई॰वी॰ दूसरी वजहों से फैलता है। 2003 ई॰ के एक सर्वे के मुताबिक़, एक औरत के मुक़ाबले, तीन मर्द एच॰आई॰वी॰ का शिकार बनते हैं।

इनसान को एच॰आई॰वी॰ से बचाने के लिए इस्लाम की तालीमात, एहतियात करने को कहती हैं (Precaution is better than cure)। इस्लाम में वेश्यावृत्ति/Prostitution (क़ुरआन 24:33), हर नशे वाली चीज़/Drugs (क़ुरआन, 2:219), समलिंगरति/Sodomy (क़ुरआन, 29:28) ज़िना/Adultry (क़ुरआन, 17:32), क़त्ल करना/Killing (क़ुरआन, 5:32), और सभी बुरी बातों /All Evil deeds (क़ुरआन, 16:90) को हराम (Prohibited) बताया गया है।

आज के दौर में, सबसे ज़्यादा एच॰आई॰वी॰ वेश्यावृत्ति, समलिंगरति और नशे से फैल रहा है। आज, समाज में बुराई की जड़ों को तो पानी दिया जा रहा है; शराब आम करके और वेश्यावृत्ति को न बन्द करके, लेकिन पत्तों को काट कर समझा जा रहा है कि इस बीमारी से बच जाएँगे। हर साल हिन्दुस्तान में नौ लाख नई तवाइफ़ें, मार्केट में आ जाती हैं, जिनके तीस प्रतिशत ग्राहक नौजवान हैं (मीडिया के ज़रिये, जिन्हें सेक्स की Theorotical तालीम तो मिल गई, लेकिन प्रेक्टीकल नहीं कराए गए, जो वे खुद कर लेते हैं)। शराब जगह-जगह, यहाँ तक कि जनरल स्टोर में भी बेची व ख़रीदी जा सकती है। शराब का सबसे पहला हमला, दिमाग़ के उस हिस्से पर होता है, जो सही और ग़लत में पहचान करता है।

एच॰आई॰वी॰ से बचने के लिए जो इलाज बताया जा रहा है, उसमें भी टकराव (Contradiction) है "कण्डोम इस्तेमाल करो और बीवी के वफ़ादार रहो।" इसका मतलब है, जहाँ चाहो मुँह मारो, पूरी इजाज़त है और सिर्फ़ एक पर सब्र न करो।

क़ुरआन में ख़ुदा ने कहा कि ज़िना (Adultry) के क़रीब मत जाओ, यानी हर उस चीज़ से बचो जो वहाँ ले जाती है, जैसे Free Society।

बुराई तीन तरीक़े से रोकी जा सकती है। एक, इनसान खुद बचना चाहे

(Self-Impose Restriction)। दूसरे, समाजी दबाव (Social pressure)। तीसरे, सज़ा का यक़ीन (Certainity of Punishment)। इस्लाम बुराई रोकने के लिए इन तीनों तरीक़ों को अपनाता है।

एहतियात के बावजूद अगर एच॰आई॰वी॰ हो जाए, तब इस्लाम की तालीमात, इलाज करने (Treatment) की हैं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा, "ख़ुदा के बन्दो! इलाज कराओ। ख़ुदा ने जो बीमारी भी पैदा की, उसका इलाज भी पैदा किया है।" (हदीस) यह उम्मीद का पैग़ाम (Message of Hope) है। मरीज़ के लिए : इलाज है, डॉक्टर तलाश कर और डॉक्टर के लिए : इलाज है, इलाज तलाश कर। मरीज़ से इस्लाम यह भी कहता है कि यह तुम्हारा इम्तिहान है। सब्र करोगे, तो गुनाह माफ़ होंगे और नेकी भी मिलेगी।

हर वह इनसान, जो एच॰आई॰वी॰ का शिकार नहीं है, उससे इस्लाम कहता है "जो अपने लिए पसन्द करो, वही दूसरों के लिए पसन्द करो" (हदीस) यानी Think-Global, Feel-Global, Act-Global इस्लाम यह भी कहता है कि सारी मख़लूक़ (Creation) ख़ुदा का ख़ानदान है, तुम (इनसानों) में से बेहतर वह है, जो ख़ुदा के ख़ानदान के साथ अच्छा (बर्ताव करने वाला) है (हदीस)। "अल्लाह उसपर रहम नहीं करता, जो इनसानों पर रहम नहीं करता" (हदीस)। दूसरों की मुसीबत पर ख़ुश न हो, अगर ऐसा करोगे, तो ख़ुदा उसे बचाकर तुम्हें उस (मुसीबत) में डाल देगा" (हदीस)। "अच्छाई में मदद करो, बुराई में मत करो" (क़ुरआन)। "जो इनसान किसी अच्छे काम की सिफ़ारिश करता है, उसको उतनी ही नेकी मिलती है, जितनी (उस) अच्छा काम करनेवाले को" (हदीस)।

एच॰आई॰वी॰ का शिकार न होनेवालों से इस्लाम यह भी कहता है कि यह ख़ुदा का तुमपर एहसान है, शुक्र करो, एहतियात करो और एच॰आई॰वी॰ के शिकार लोगों की मदद करो। एच॰आई॰वी॰ के मरीज़ का इम्तिहान, अगर बीमारी में लिया जा रहा है, तो तुम्हारा इम्तिहान भी इस बात में लिया जा रहा है कि इन हालात में तुम क्या करते हो : मरीज़ का मज़ाक़ उड़ाते हो, या उसकी मदद करते हो, या मदद नहीं करते हो।

छोटी दुनिया
(Globalisation)

"ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो, जिसने तुमको एक जीव (आदम) से पैदा किया और उसी जाति का उसके लिए जोड़ा (हव्वा) पैदा किया और उन दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्रियाँ फैला दीं।" (क़ुरआन, 4:1)

सभी इनसान एक आदम की औलाद हैं। इनसानों के बीच ख़ून का रिश्ता है। इनसानों के बीच : ख़ानदान, दौलत, शोहरत, ताक़त की बुनियाद पर नहीं, बल्कि ख़ून की बुनियाद पर बराबरी (Blood based Equality) है।

इनसानी समाज की ख़ानदानों में तक़सीम पहचान (Identity) के लिए है, न कि बरतर या कमतर होने के लिए। ख़ुदा की निगाह में बरतर या कमतर होने का, एक ही पैमाना है, वह है "नेकी" (Piousness), जो जितना नेक है; वह उतना बरतर है, जो जितना बुरा है; वह उतना कमतर है। (क़ुरआन, 49:13)

ख़ुदा कहता है कि **इनसान को हक़ अदा करने और नेकी व परहेज़गारी के कामों में एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए। और हक़ मारने व ज़्यादती के कामों में एक-दूसरे का सहयोग न करना चाहिए** (क़ुरआन, 5:2)। इनसान का दूसरे इनसानों के साथ (चाहे वे उसके अपने हों या ग़ैर) अच्छे कामों में मदद करना, समाज में अच्छाई करने व बुराई से रुकने का आम माहौल बनाता है। ग़लत कामों में मदद न करना, तास्सुब (Prejudice) की जड़ काटता है। इनसाफ़ करने का आदी बनाता है। मगर याद रहे जब कोई हमारे साथ नाइनसाफ़ी करता है और उसके जवाब में हम भी उसके साथ नाइनसाफ़ी करते हैं तो यह भी बुराई में सहयोग होता है।

आओ एक ऐसी बात की ओर जिसे हमारे और तुम्हारे बीच समान

मान्यता प्राप्त है (क़ुरआन, 3:64)। आज की दुनिया की ख़ास बात यह है कि फ़ासले सिमट गए हैं और तरक़्क़ी की रफ़्तार बढ़ गई है। आज दूसरों से अलग-थलग रहना, तक़रीबन नामुमकिन हो गया है। आज पहले से ज़्यादा ज़रूरत है कि इख़्तिलाफ़ी बातों (Conflicting Issues) में ज़्यादा समझ-बूझ से काम लिया जाए। लोगों को क़रीब लाया जाए। इसका बेहतरीन तरीक़ा यह है कि समान (Common) बातों से असमान (Un-Common) बातों की तरफ़ आया जाए। समान बातों को उभारा जाए और टकराव वाली बातों में हमदर्दी से एक-दूसरे के नज़रिए (Point of View) को समझने की कोशिश की जाए, जिसे आज की दुनिया में संवाद (Dialogue) कहा जाता है।

Dialogue =The Exchange of thoughts on Conflicting issues to Improve inter personal understanding and trust.

मौत और ख़्वाहिश

(Death and Desire)

"तुम्हें एक-दूसरे के मुक़ाबले में बहुतायत के प्रदर्शन और घमण्ड ने ग़फ़लत में डाल रखा है, यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तानों में पहुँच गए।" (क़ुरआन, 102:1-2)

मौत को महसूस करने के सिलसिले में, इनसानों को चार क़िस्मों में बांटा जा सकता है :

(1) कुछ लोग समझते हैं कि माज़ी (Past) गुज़र चुका, मुस्तक़बिल (Future) आएगा ही नहीं, सिर्फ़ यह हाल (Present) है, इसे जैसे चाहे जी लो। यह लोग मौत के बारे में बिलकुल नहीं सोचते। इनके लिए मौत कोई मसला (Issue) नहीं। मौत न इनकी नज़र में दुख की बात है और न ख़ुशी की, इनकी सभी कोशिशें और मक़सद इसी ज़िन्दगी तक सीमित हैं।

(2) कुछ लोग मौत को याद रखते हैं। ये सोचते हैं कि ज़िन्दगी ख़त्म होनेवाली है, इन चन्द दिनों में जितने ऐश करने हैं कर लो, मज़ा करने का फिर कोई मौक़ा नहीं मिलेगा। ये लोग मुकम्मल आज़ादी और ख़्वाहिशों के पूरा करने को अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बनाते हैं।

(3) कुछ लोग मौत को बहुत याद करते हैं, उसका हर जगह ज़िक्र करते हैं, लेकिन मौत के बाद क्या होगा, इस बारे में बिलकुल बात नहीं करते। वे समझते हैं कि मौत इस ज़िन्दगी का ख़ात्मा है; एक न ख़त्म होनेवाली नींद। ये लोग ज़िन्दगी के दुख और छोटे होने का मातम करते हैं। ये अपनी ज़िन्दगी में कोई बड़ा मक़सद नहीं रखते।

(4) कुछ लोग, इनसान की ज़िन्दगी को कभी न ख़त्म होनेवाली मानते हैं। ज़िन्दगी के दो दौर समझते हैं : मौत से पहले की ज़िन्दगी (Life-

Before-Death) और मौत के बाद की ज़िन्दगी (Life-After-Death)। पहले दौर को छोटा और दूसरे को कभी न ख़त्म होनेवाला मानते हैं। ये लोग मौत आने से पहले की ज़िन्दगी में, मौत के बादवाली ज़िन्दगी के लिए तैयारी करते हैं। इनकी ज़िन्दगी में एक बड़ा मक़सद होता है। इनका मक़सद ख़ुदा की पसन्द के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना होता है। इस चौथे गिरोह में ही ख़ुदा की पसन्द के इनसान पाए जाते हैं। ख़ुदा इनसे राज़ी होता है और ये ख़ुदा से राज़ी होते हैं।

मौत को इनसान, अपनी ज़बान से तो मानता है, मगर अपने अमल में नहीं मानता, उसका एहसास नहीं रखता। मरनेवालों को इनसान देखता है, मगर वह ख़ुद मरेगा, इस बात का उसे यक़ीन नहीं हो पाता। हर इनसान कुछ इस अन्दाज़ से सोचता है कि बाक़ी सब तो मर जाएँगे, मगर वह ख़ुद नहीं मरेगा। यह बात इनसान के तसव्वुर (Imagination) में भी नहीं आती कि एक दिन वह भी मरेगा। इस एहसास की वजह, इनसान की बनावट में, ख़ाहिशों (Desires) का होना है। इनसान के अन्दर इतनी ज़्यादा, लामहदूद ख़ाहिशें हैं कि उनकी लिस्ट कभी ख़त्म नहीं होती।

लम्बी-लम्बी उम्मीदें और ख़ाहिशें मौत के एहसास को कम कर देती हैं, या भुला देती हैं, या ख़त्म कर देती हैं। ख़ुदा को न मानना भी, मौत के एहसास को कम करता है।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इनसान की इस कमज़ोरी को इन अलफ़ाज़ में बताया—"अगर आदमी को सोने (Gold) से भरी एक वादी (Valley) दे दी जाए, तो वह दूसरी की ख़ाहिश करेगा। और अगर उसे दूसरी (सोने से भरी वादी) भी मिल जाए, तो वह तीसरी की चाहत करेगा। आदमी के पेट को तो (मरने के बाद क़ब्र की) मिट्टी ही भर सकती है।"

(हदीस : बुख़ारी)

"एक बूढ़े आदमी का दिल, दो चीज़ों के सिलसिले में हमेशा जवान ही रहता है। एक दुनिया की मुहब्बत। दूसरे, लम्बी-लम्बी तमन्नाएँ और उम्मीदें।" (हदीस : बुख़ारी व मुस्लिम)

एक बार हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने एक चौकोर टुकड़ा (Square) बनाया। एक लकीर; उसके बीच में खींची, और एक लकीर; उसके बाहर। और उस चौकोर टुकड़े के अन्दर कुछ (छोटी-छोटी) लकीरें खींची, जो बीच वाली लाइन की तरफ़ झुकती थी। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया—यह बीच की लकीर इनसान है। और यह (चौकोर टुकड़े की लकीरें) उसकी मौत है, जो उसे घेरे हुए हैं, या इनसान इनमें घिरा हुआ है, और यह बाहर निकली हुई लकीर उसकी उम्मीद या ख़ाहिश है। और (चौकोर टुकड़े के अन्दर) छोटी-छोटी लकीरें, उसकी मुसीबतें (बीमारियाँ वग़ैरह) हैं। अगर एक मुसीबत से बच गया, तो दूसरी मुसीबत घेर लेती है।"

(हदीस : बुख़ारी व तिर्मिज़ी)

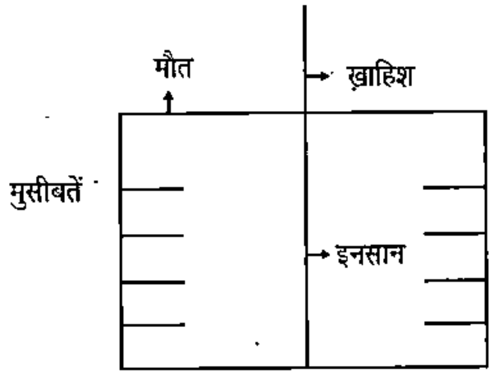

आख़िरत
(Life-Hereafter)

निम्नलिखित बातों को मानने का नाम आख़िरत को मानना है।

शून्य (Nil)

"निस्सन्देह! मनुष्य पर एक ऐसा समय भी बीता है, जबकि वह कोई ऐसी चीज़ न था जिसका उल्लेख किया जाता।" (क़ुरआन, 76:1)

↓

सांसारिक जीवन (Worldly Life)

"(अल्लाह) ने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है।" (क़ुरआन, 67:2)

↓

मृत्यु (Death)

"प्रत्येक जीवन को मृत्यु का स्वाद चखना है। फिर तुम हमारी ओर वापस लौटोगे।" (क़ुरआन, 29:57)

↓

बर्ज़ख़ (Intermediate World)

"उनके पीछे (मौत) से लेकर उस दिन तक एक रोक लगी हुई है, जब वह दोबारा उठाए जाएँगे।" (क़ुरआन, 23:100)

↓

क़ियामत (Last day of the World)

"निस्सन्देह जिस (क़ियामत) का वादा तुमसे किया जा रहा है, वह निश्चय ही घटित होकर रहेगी।

अतः जब तारे विलुप्त (प्रकाशहीन) हो जाएँगे, और जब आकाश फट जाएगा, और जब पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण होकर बिखर जाएँगे।"

(क़ुरआन, 77:7-10)

हश्र (Day of Resurrection)

"फिर जब सूर (नरसिंघा) में फूँक मारी जाएगी, तो उस दिन उनके बीच रिश्ते-नाते शेष न रहेंगे और न वे एक-दूसरे को पूछेंगे।"

(क़ुरआन, 23:101)

"जिस दिन वह (अल्लाह) तुम्हें पुकारेगा, तो तुम (नेक लोग) उसकी प्रशंसा करते हुए उसकी आज्ञा को स्वीकार करोगे और समझोगे कि तुम बस थोड़ी ही देर (दुनिया में) ठहरे रहे हो।" (क़ुरआन, 17:52)

"जिस दिन वे क़ब्रों से तेज़ी के साथ निकलेंगे, जैसे किसी निशान की ओर दौड़े जा रहे हैं। उन (बुरे लोगों) की निगाहें झुकी होंगी, ज़िल्लत उन पर छा रही होगी। यह है वह दिन जिससे वह डराए जाते रहे हैं।"

(क़ुरआन, 70: 43-44)

"जिस दिन वह उनको जमा करेगा तो ऐसा जान पड़ेगा, जैसे वे दिन की एक घड़ी भर ठहरे थे। वे परस्पर एक-दूसरे को पहचानेंगे। वे लोग घाटे में पड़ गए, जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और वे मार्ग न पा सके।" (क़ुरआन, 10:45)

यौमुद्दीन (Day of Judgement)

"(अल्लाह) बदला दिए जाने के दिन का मालिक है।" (क़ुरआन, 1:3)

"हमने प्रत्येक मनुष्य का शकुन-अपशकुन उसकी अपनी गर्दन में बाँध दिया है और क़ियामत के दिन हम उसके लिए एक किताब निकालेंगे, जिसको वह खुला हुआ पाएगा।

पढ़ ले अपनी किताब (कर्म-पत्र)! आज तू स्वयं ही अपना हिसाब लेने के लिए काफ़ी है।" (क़ुरआन, 17: 13-14)

"जो कोई कण भर भी नेकी करेगा, वह उसे देख लेगा, और जो कोई कण भर भी बुराई करेगा, वह भी उसे देख लेगा।" (क़ुरआन, 99:7-8)

"आज हम उनके मुँह पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बोलेंगे

और जो कुछ वे कमाते रहे हैं, उनके पाँव उसकी गवाही देंगे।"
(क़ुरआन, 36:65)

"विचार करो जिस दिन अल्लाह के शत्रु आग की ओर एकत्र करके लाए जाएँगे, फिर उन्हें श्रेणियों में क्रमबद्ध किया जाएगा, यहाँ तक कि जब वे उसके पास पहुँच जाएँगे, तो उनके कान और उनकी आँखें और उनकी खालें, उनके विरुद्ध उन बातों की गवाही देंगी जो कुछ वे करते रहे होंगे। वे अपनी खालों से कहेंगे कि तुमने हमारे विरुद्ध क्यों गवाही दी? वे कहेंगी : हमें उसी अल्लाह ने वाकशक्ति प्रदान की है, जिसने प्रत्येक चीज़ को वाकशक्ति प्रदान की।" (क़ुरआन, 41: 19-21)

"फिर जिनके पलड़े भारी हुए, तो वही हैं जो सफल होंगे। रहे वे लोग जिनके पलड़े हल्के हुए, तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला। वे सदैव जहन्नम में रहेंगे।" (क़ुरआन, 23: 102-103)

"उस दिन सभी मित्र परस्पर एक-दूसरे के शत्रु होंगे, सिवाय डर रखने वालों के।" (क़ुरआन, 43:67)

"कितने ही चेहरे उस दिन तरो-ताज़ा और प्रफुल्लित होंगे, अपने रब की ओर देख रहे होंगे। और कितने ही चेहरे उस दिन उदास और बिगड़े हुए होंगे, समझ रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देनेवाला मामला किया जाएगा।" (क़ुरआन, 75: 22-25)

"कुछ नहीं, ये (बुरे) लोग उस दिन अपने रब (के दर्शन) से रोक दिए जाएँगे।" (क़ुरआन, 83:15)

जहन्नम (Hell)

"जिन लोगों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया उनके लिए जहन्नम की यातना है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।" (क़ुरआन, 67:6)

"जिन लोगों ने हमारी आयतों का इनकार किया, उन्हें हम जल्द ही आग में झोंकेंगे। जब भी उनकी खालें पक जाएँगी, तो हम उन्हें दूसरी खालों से बदल दिया करेंगे, ताकि वे यातना का मज़ा चखते ही रहें।"
(क़ुरआन, 4:56)

"हमने तो अत्याचारियों के लिए आग तैयार कर रखी है, जिसकी क़नातों ने उन्हें घेर लिया है। यदि वे फ़रियाद करेंगे तो फ़रियाद के प्रत्युत्तर में उन्हें ऐसा पानी मिलेगा जो तेल की तलछट जैसा होगा, वह उनके मुँह भून डालेगा। बहुत ही बुरा है वह पेय और बहुत ही बुरा है वह विश्राम-स्थल।" (क़ुरआन, 18:29)

"जिन लोगों ने कुफ़्र किया। उनके लिए आग के वस्त्र काटे जा चुके हैं। उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा। इससे जो कुछ उनके पेटों में है, वह पिघल जाएगा और खालें भी और उनके लिए (दण्ड देने को) लोहे के गुर्ज़ होंगे। जब भी वे घबराकर उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिए जाएँगे और (कहा जाएगा) चखो दहकती आग की यातना का मज़ा।" (क़ुरआन, 22: 19-22)

"वह (ज़क्क़ूम का) एक वृक्ष है जो भड़कती हुई आग की तह से निकलता है। उसके गाभे मानो शैतानों के सिर (साँपों के फन) हैं। तो वे उसे खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे। फिर उनके लिए उस पर खौलते हुए पानी का मिश्रण होगा।" (क़ुरआन, 37: 64-67)

"जिन लोगों ने किताब को झुठलाया और उसे भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा था। तो शीघ्र ही उन्हें मालूम हो जाएगा जबकि तौक़ उनकी गरदनों में होंगे और ज़ंजीरें (उनके पैरों में) वे खौलते हुए पानी में घसीटे जाएँगे, फिर आग में झोंक दिए जाएँगे।"

(क़ुरआन, 40: 70-72)

"वास्तव में जहन्नम एक घात स्थल है, सरकशों का ठिकाना है। वस्तुस्थिति यह है कि वे उसमें मुद्दत पर मुद्दत बिताते रहेंगे। वे उसमें न किसी शीतलता का मज़ा चखेंगे और न किसी पेय का, सिवाय खौलते पानी और बहती पीप—रक्त के। यह बदले के रूप में उनके कर्मों के ठीक अनुकूल होगा। वास्तव में वे किसी हिसाब की आशा न रखते थे और उन्होंने हमारी आयतों को ख़ूब झुठलाया।" (क़ुरआन, 78: 21-28)

"उन (कहना न माननेवालों) के लिए उनके ऊपर से भी आग की

छतरियाँ होंगी और उनके नीचे से भी छतरियाँ होंगी। यही वह चीज़ है, जिससे अल्लाह अपने बन्दों को डराता है : "ऐ मेरे बन्दो! अतः तुम मेरा डर रखो।" (क़ुरआन, 39:16)

जन्नत (Paradise)

"जिसे आग (जहन्नम) से हटा कर जन्नत में दाख़िल कर दिया गया, वह सफल रहा।" (क़ुरआन, 3:185)

"निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके आतिथ्य के लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे, जिनमें वे सदैव रहेंगे, वहाँ से हटना न चाहेंगे।" (क़ुरआन, 18: 107-108)

"ऐसे ही (नेक) लोगों के लिए सदाबहार बाग़ हैं। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और वे हरे-पतले और गाढ़े रेशमी कपड़े पहनेंगे और ऊँचे तख़्तों पर तकिया लगाए होंगे। क्या ही अच्छा बदला है और क्या ही अच्छा विश्राम-स्थल!" (क़ुरआन, 18:31)

"निश्चय ही जन्नतवाले आज किसी-न-किसी काम में व्यस्त आनन्द ले रहे हैं। वे और उनकी पत्नियाँ छायों में मसहरियों पर तकिया लगाए हुए हैं, उनके लिए वहाँ मेवे (फल) हैं। और उनके लिए वहाँ सब कुछ मौजूद है, जिसकी वे माँग करें। (उनपर) सलाम है, दयामय रब का उच्चारित किया हुआ।" (क़ुरआन, 36: 55-58)

"बाग़ों और स्रोतों में बारीक और गाढ़े रेशम के वस्त्र पहने हुए, एक-दूसरे के आमने-सामने उपस्थित होंगे। ऐसा ही उनके साथ मामला होगा। और हम साफ़ गोरी, बड़ी नेत्रोंवाली स्त्रियों से उनका विवाह कर देंगे। वे वहाँ निश्चिन्तता के साथ हर प्रकार के स्वादिष्ट फल मँगवाते होंगे। वहाँ वे मृत्यु का मज़ा कभी न चखेंगे। बस पहली मृत्यु जो हुई सो हुई। और उस (अल्लाह) ने उन्हें भड़कती हुई आग की यातना से बचा लिया।" (क़ुरआन, 44: 52-56)

"उस जन्नत की शान, जिसका वादा डर रखनेवालों से किया गया है, यह है कि उसमें ऐसे पानी की नहरें होंगी जो प्रदूषित नहीं होता और ऐसे दूध की नहरें होंगी जिसके स्वाद में तनिक भी अन्तर न आया होगा, और ऐसे पेय की नहरें होंगी जो पीनेवालों के लिए मज़ा ही मज़ा होंगी, और साफ़-सुथरे शहद की नहरें भी होंगी और उनके लिए वहाँ हर प्रकार के फल होंगे और क्षमा उनके अपने रब की ओर से।" (क़ुरआन, 47:15)

"उस (जन्नत) में वे तख़्तों पर टेक लगाए होंगे, वे उसमें न तो सख़्त धूप देखेंगे और न सख़्त ठण्ड और उस (बाग़) के साए उन पर झुके होंगे और उसके फलों के गुच्छे बिल्कुल उनके वश में होंगे। और उनके पास चाँदी के बरतन गर्दिश में होंगे और प्याले जो बिल्कुल शीशे हो रहे होंगे, शीशे भी चाँदी के जो ठीक अन्दाज़े करके रखे गए होंगे। और वहाँ वे एक और जाम पिएँगे, जिसमें सोंठ का मिश्रण होगा। क्या कहना उस स्रोत का जो उसमें होगा जिसका नाम सल-सबील है। उनकी सेवा में ऐसे किशोर दौड़ते फिर रहे होंगे जो सदैव किशोर ही रहेंगे। जब तुम उन्हें देखोगे तो उन्हें समझोगे कि बिखरे हुए मोती हैं। जब तुम वहाँ देखोगे तो तुम्हें बड़ी नेमत और विशाल राज्य दिखाई देगा। उनके ऊपर हरे बारीक रेशमी वस्त्र और गाढ़े रेशमी कपड़े होंगे, और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उनका रब उन्हें पवित्र पेय पिलाएगा। यह है तुम्हारा बदला और तुम्हारा प्रयास क़द्र करने के योग्य है।"

(क़ुरआन, 76: 13-22)

"निस्सन्देह डर रखनेवालों के लिए एक बड़ी सफलता है, बाग़ हैं और अंगूर और नवयौवना समान उम्रवाली और छलकता जाम, वे उसमें न तो कोई व्यर्थ बात सुनेंगे और न कोई झुठलाने की बात।"

(क़ुरआन, 78: 31-35)

"जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें शुभ सूचना दे दो कि उनके लिए ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जब भी उनमें से कोई फल उन्हें रोज़ी के रूप में मिलेगा, तो कहेंगे : यह तो

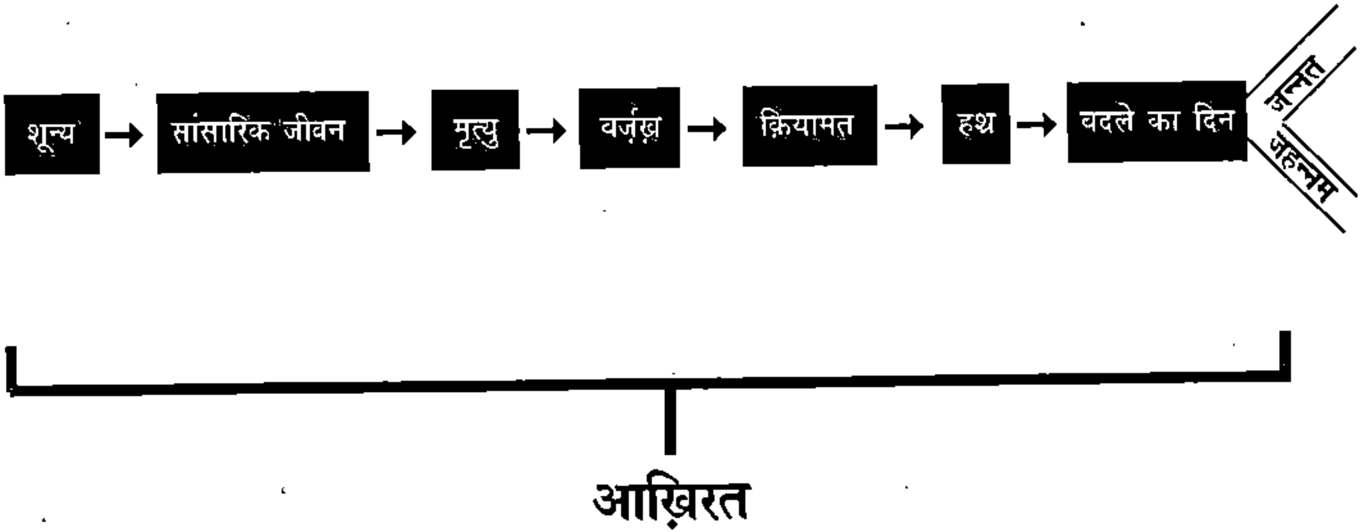
शून्य
सांसारिक जीवन
मृत्यु
बर्ज़ख़
क़ियामत
हश्र
बदले का दिन
जन्नत
जहन्नम
आख़िरत

ख़यालात
(Thoughts)

"और कुछ बद्दू (Nomads) ऐसे हैं, कि वे जो कुछ ख़र्च करते हैं; उसे तावान समझते हैं और तुम्हारे हक़ में बुरी गर्दिशों (बुरे दिन) की प्रतीक्षा में हैं, बुरी गर्दिश में तो वही हैं। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

और बद्दुओं में ऐसे भी लोग हैं जो अल्लाह और अन्तिम दिन को मानते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह के यहाँ निकटताओं का और रसूल की दुआओं को प्राप्त करने का साधन बनाते हैं। हाँ! निस्सन्देह वह उनके हक़ में निकटता ही है। अल्लाह उन्हें शीघ्र ही अपनी दयालुता में दाख़िल करेगा। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।"

(क़ुरआन, 9 : 98-99)

हमारी ज़िन्दगी हमारे ख़यालात की पैदावार है। जैसे हमारे ख़यालात होंगे, वैसे ही हम होंगे। हमारे ख़यालात बहादुरी के होंगे, तो हम बहादुर बन जाएँगे; बुज़दिली के होंगे, तो बुज़दिल बन जाएँगे; ख़ौफ़ के होंगे, तो ख़ौफ़ज़दा और बीमारी के होंगे, तो बीमार।

हमारे ख़यालात जैसे होते हैं, हमारा काम भी वैसा ही हो जाता है। हम एक चीज़ को देखते हैं, लेकिन हम उसे वैसा नहीं समझते, जैसी वह होती है, बल्कि वैसा समझते हैं, जैसे हमारे ख़यालात होते हैं। एक औरत अपने दो साला बच्चे के साथ, एक कमरे में दाख़िल होती है; सामने एक साँप पड़ा है। माँ चीख़ते हुए पीछे हट जाती है, जबकि बच्चा साँप को पकड़ने के लिए दौड़ता है। एक जगह फ़साद (Riot) हुआ; एक आदमी बहादुर बन गया और

दूसरा, बुज़दिल।

अलग-अलग ख़यालात की वजह से, एक ही चीज़ को अलग-अलग लोग, अलग-अलग समझते हैं। एक भेड़ को देखकर : भेड़िया ख़याल करता है "यह मेरा खाना है"। क़साई सोचता है "यह मेरा व्यापार है"। जानवरों का डॉक्टर (Veterinarian) उसकी बुरी हालत के बारे में सोचता है। एक बच्चे को, दो भेड़ों की कहानी याद आती है। चीज़ एक ही होती है, लेकिन जो आदमी, जिस ख़याल के साथ उसे देखता है, उसे वह चीज़ वैसी ही नज़र आती है।

किसी चीज़ को देखकर हम उसे कैसा समझते हैं? उसका कैसा असर लेते हैं? और उसपर हमारी प्रतिक्रिया क्या होती है? यह सब हमारे ख़यालात पर निर्भर (Depend) होता है। अपने ख़यालात को सही रखना और ग़लत न होने देना बहुत ज़रूरी है।

ख़यालात अच्छे (Positive Thoughts) होते हैं। ख़यालात बुरे (Negative Thoughts) होते हैं। एक बुरे ख़यालातवाला आदमी, अच्छी चीज़ में भी बुराई ढूँढ लेता है। और एक अच्छे ख़यालातवाला आदमी, बुरी चीज़ में भी अच्छाई देख लेता है।

एक सूअर (Pig) की सड़ती हुई लाश के क़रीब से, लोग बदबू व गन्दगी की शिकायत करते हुए गुज़र रहे थे। लेकिन जब हज़रत ईसा (अलैहि॰) गुज़रते हैं, तो कहते हैं "कितने ख़ूबसूरत दाँत हैं।"

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के दुश्मन, आपको नफ़रत से मुहम्मद (Praise-worthy) न कहकर मुज़म्मिम (Condemned) कहते। एक बार आप (सल्ल॰) ने अपने साथियों से कहा : क्या तुम्हें हैरत नहीं होती कि वे मुज़म्मिम को गालियाँ देते हैं और मैं मुहम्मद हूँ।

एक वाक़िया (Event) एक इनसान को ख़ुदा से क़रीब कर देता है, लेकिन वही वाक़िया दूसरे इनसान को ख़ुदा से दूर कर देता है। इनसान को अपने ख़यालात सही रखने की लगातार कोशिश करते रहनी चाहिए।

दिमाग़ एक बाग़ (Garden) की तरह होता है। बाग़ की सही देख-भाल जब नहीं की जाती, तो वह ख़राब हो जाता है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अपने साथियों से कहते, "मुझसे मेरे साथियों की बुराइयाँ बयान मत करो। मैं चाहता हूँ कि जब मैं उनसे मिलूँ, तो मेरा दिल साफ़ हो। आप (सल्ल॰) यह भी फ़रमाते कि मेरे दिल पर (बुरे ख़यालात का) परदा पड़ जाता है, मैं दिन में सौ बार (बहुत ज़्यादा) इस्तिग़फ़ार (ऐ ख़ुदा माफ़ कर दे) पढ़ता हूँ।

खोई हुई चीज़ों का अफ़सोस, बुरे तजुर्बात, हादसात, बुरी यादें, लोगों का बुरा सुलूक, अपनी कमियाँ वग़ैरह, ऐसी बातें हैं, जो ख़यालात को ख़राब करती हैं। ख़यालात को सही रखने का एक यही तरीक़ा है कि आदमी गुज़रे वक़्त को न देखकर, आगे देखे और आज की क़द्र करे। दुनिया के मामलात में अपने से नीचे और आख़िरत (Life-hereafter) के मामलात में अपने से ऊपर देखे। आनेवाली जो यक़ीनी चीज़ है, वह आख़िरत है, जहाँ हर ख़ाहिश पूरी हो जाएगी।

तनाव
(Stress)

"निस्सन्देह हम (अल्लाह) ने मनुष्य को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया।" (क़ुरआन, 95:4)

जापान में, काम के दबाव से पैदा हुए तनाव से, बहुत-से लोग काम के दौरान ही मर जाते हैं। ऐसी मौत को जापानी भाषा में "Kikoshe" का नाम दिया गया है। एक सर्वे के मुताबिक़, हाँग-काँग में इसी तनाव से, सत्तर हज़ार लोग रोज़ाना रात को बिस्तर गीला कर देते हैं। वक़्त से पहले बच्चों की पैदाइश; गर्भपात, दिमाग़ी सन्तुलन खोना, अलसर, दिमाग़ी नस का फटना और रिश्तों का टूटना, इनसान पर तनाव के बुरे असरात (Bad Effects) हैं। बढ़ते हुए तनाव की वजह से, आज का ज़माना "तनाव का दौर" कहलाता है।

इनसान की बनावट खुदा ने बेहतरीन व सन्तुलित बनाई है। ख़राबी तब पैदा होती है, जब इनसान सन्तुलन खो देता है। तनाव भी अपने आप में अच्छी चीज़ है, मगर जब यह सन्तुलित (Balanced-Stress) हो।

तनाव एक अन्दरूनी दबाव (Internal Pressure) है, जो इनसान को हरकत में लाता है। इम्तिहान तनाव पैदा करता है; तनाव का नतीजा, इम्तिहान की तैयारी और उसमें कामयाबी। ख़राबी तब पैदा होती है, जब तनाव का यह सन्तुलन बिगड़ जाता है और तनाव, असन्तुलित (Unbalanced-Stress) हो जाता है। इम्तिहान के दौरान तनाव की कमी, लापरवाह (Careless) बनाती है और इम्तिहान की तैयारी से रोक देती है। तनाव की ज़्यादती, इम्तिहान के दौरान बीमार कर देती है।

इनसान पर सन्तुलित तनाव, अच्छा असर (Positive-Effect) और

असन्तुलित तनाव, बुरा असर (Nagative-Effect) डालता है।

इनसान का बनानेवाला ख़ुदा है और क़ुरआन का देनेवाला भी ख़ुदा है। इनसान की एक ख़ास बनावट (Human Nature) है। क़ुरआन हक़ीक़त में उसी बनावट की तशरीह (Interpretation of Human Nature) है।

अपनी तालीमात के ज़रिए, क़ुरआन इनसान के तनाव को सन्तुलित करने का तरीक़ा बताता है। तौहीद को मानना, यानी सिर्फ़ एक ख़ुदा को मानना, जिसके हाथ में मौत, ज़िन्दगी, कामयाबी, नाकामी, इज़्ज़त, ज़िल्लत, फ़ायदा, नुक़्सान, सभी कुछ है। इस ज़िन्दगी को एक इम्तिहान मानना, मरने के बाद इनसाफ़ के दिन और कभी न ख़त्म होनेवाली ज़िन्दगी को मानना। ख़ुदा से दुआ करना, नमाज़ पढ़ना, रोज़ा रखना वग़ैरा।

हाँ से नहीं की तरफ़

(From yes to No)

"कहो : ऐ किताबवालो (टकराव की सारी बातें छोड़कर) आओ एक ऐसी बात की ओर जिसे हमारे और तुम्हारे बीच समान मान्यता प्राप्त है।" (क़ुरआन, 3:64)

बात-चीत के ज़रिए ताल्लुक़ात (Relationship) अच्छे करने और अपनी बात मनवाने का क्या कोई तरीक़ा है?

बात-चीत (Conversation) की शुरुआत उन बातों से करें, जो आप में और दूसरे आदमी में समान (Common) हों। शुरू में सिर्फ़ वे बातें करें, जिसको दूसरा आदमी भी मानता हो। इस तरह वह "हाँ-हाँ" कहना शुरू कर देगा। आप अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करें कि वह "इनकार" या "नहीं" न कहने पाए।

इनसान, जब एक बार "नहीं" कह देता है, तब उसे "हाँ" कहने पर राज़ी करना बहुत मुश्किल हो जाता है। उसकी अना (Ego) उसे रोकती है। और शैतान उसे बहकाता हैं कि यह उसकी बेइज़्ज़ती है। फिर, इनसान अपनी बात पर अड़ा रहता है, चाहे वह एहसास कर रहा हो कि वह ग़लत है।

"हाँ" से "नहीं" की तरफ़ या समानता (Common) से असमानता (Un-common) की तरफ़ बात को ले जाना; सुननेवाले को मजबूर कर देता है कि वह आपकी बात को सुने, सोचे और सही बात का इक़रार करे।

हम अपनी, आम ज़िन्दगी में इसी उसूल (Principle) को अपनाते हैं। बस, रेल या जहाज़ के किसी सफ़र के दौरान, जब हम किसी अजनबी से

बात शुरू करते हैं, तो ऐसे विषय (मौसम, सियासत, सामाजिक ख़राबियों) से शुरू करते हैं, जिसमें दोनों की राय (Opinion) एक होती है। इसके बाद विषय बदलता है और ऐसी बातें भी होती हैं, जिनमें असमानताएँ व मतभेद होते हैं। इस तरह बात करने से टकराव व झगड़ा कभी नहीं होता। दोनों एक-दूसरे से सहमत हों या नहीं, सफ़र के ख़ात्मे पर दोनों ख़ुशी-ख़ुशी अलग होते हैं, न कि झगड़ कर।

दीन
(Deen)

"हमने (ख़ुदा ने आदम, हव्वा व इबलीस से) कहा : तुम सब यहाँ (जन्नत) से उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरी ओर से कोई मार्गदर्शन पहुँचे, तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण किया, तो ऐसे लोगों को न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

और जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।" (क़ुरआन, 2:38-39)

इस्लाम ख़ुद को "दीन" कहता है, न कि "मज़हब"। "दीन" का मतलब है "अल्लाह का इनसान के लिए मार्गदर्शन (Allah's guidance for mankind)। "दीन" एक ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा (A way of life) है।

दुनिया के सारे इल्म (Knowledge) को दो हिस्सों में बाँट सकते हैं— तजुर्बे से हासिल किया गया इल्म (Acquired-knowledge) और ख़ुदा की तरफ़ से दिया गया इल्म (Revealed-knowledge)।

पहली तरह की नॉलेज (Social Sciences, Humanities & languages, Sciences etc.) ज्ञानेन्द्रियाँ (Five-Senses) की मदद से हासिल होती है। यह नॉलेज सिर्फ़ यह बता सकती है कि इनसान और कायनात (Man & Universe) क्या है? (What)। और कैसे है? (How)।

दूसरी तरह की नॉलेज (यानी ख़ुदा की तरफ़ से दिया गया इल्म) हवासे ख़मसा (ज्ञानेन्द्रियों) की मदद के बिना, डायरेक्ट तौर पर रसूलों को मिलती है। यह नॉलेज बताती है कि इनसान क्यों पैदा किया गया है? (Why)।

दीन, ख़ुदा की तरफ़ से दी गई नॉलेज का नाम है। यह हमारे उन बुनियादी सवालों का जवाब देता है, जिनका जवाब हमें और कहीं से नहीं मिल सकता : क्या हमारा कोई बनानेवाला है? अगर है, तो वह हम से क्या चाहता है? हम कहाँ से आए? क्यों आए? और कहाँ जाना है?

बहुत से लोग समझते हैं कि आज के इस जदीद दौर (Modern-Age) में दीन (मज़हब) की ज़रूरत नहीं है। यह ग़लत है।

आधुनिकता (Modernization) का ताल्लुक़, ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े (Life-Style) से है। क़दीम दौर में इनसान पैदल चलता था, आज कार व हवाई जहाज़ से चलता है।

दीन का ताल्लुक़, अक़दार (Values) से है। जैसे इनसाफ़ सच्चाई, ईमानदारी, वफ़ादारी वग़ैरा। आज से हज़ार साल पहले, गाँव का एक सरपंच, पैदल चलकर पंचायत पहुँचता, चबूतरे पर बैठता और फ़ैसला करता। मगर आज सुप्रिम-कोर्ट का एक जज, कार से कोर्ट पहुँचता है, मेज़-कुर्सी पर बैठकर कंप्यूटर की मदद से फ़ैसला करता है। सरपंच और जज, दोनों के लिए अपने फ़ैसलों में इनसाफ़ करना बराबर अहमियत रखता है। इनसाफ़ से फ़ैसला करने की जितनी ज़रूरत हज़ार साल पहले थी, आज भी उतनी ही है। इसी लिए, दीन हर दौर में, इनसान की ज़रूरत बना रहता है।

दुनिया की सारी नॉलेज, ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े (Life-style of man) को तरक़्क़ी देती है और इनसान की सेहत की देखभाल करती है। पहले इनसान पैदल चलता था, फिर बैल-गाड़ी से, फिर साईकल से, फिर कार से, फिर हवाई जहाज़ से, फिर मेरीन व स्पेस-शटल से। पहले इनसान लकड़ियाँ जलाकर खाना पकाता था, मगर आज गैस और ओवन से।

दीन (मज़हब) इनसान की ख़ूबियों (Quality of man) को तरक़्क़ी देता है। वह सिखाता है कि इनसान को ज़्यादा से ज़्यादा ईमानदार, वफ़ादार, मददगार और सच्चा बनना चाहिए।

माइंड मैनेजमेंट
(Mind-Management)

"तुम (इनसान) होश से काम थोड़े ही लेते हो।"

(क़ुरआन, 40:58)

इनसान को ख़ुदा ने बेशुमार नेमतें दी हैं; दिमाग़ उनमें से एक है। क्या इनसान अपने दिमाग़ को क़ाबू (Control) कर सकता है?

आपने सुबह छह बजे उठने की नीयत की और आप ठीक छह बजे उठ गए। आपने रात नौ बजे सोना चाहा और आप ठीक नौ बजे सो गए। किसी ने आपको गाली देकर गुस्सा दिलाना चाहा, मगर आपने गुस्सा करना नहीं चाहा, तो आपने गुस्सा नहीं किया। एक गाना आप सुनते हैं, मगर उसे अपने दिमाग़ में रखना नहीं चाहते, तो आप उसे दिमाग़ से निकाल देते हैं। आप एक घण्टे पढ़ना चाहते हैं और आप एक घण्टे पढ़ लेते हैं।

आपने सुबह छह बजे उठने की नीयत की, लेकिन आठ बजे उठे। आपने रात नौ बजे सोना चाहा, लेकिन ग्यारह बजे नींद आई। किसी ने आपको गाली देकर गुस्सा दिलाना चाहा, न चाहते हुए भी आपने गुस्सा कर लिया। आपने एक गाना सुना, न चाहते हुए भी वह दिमाग़ में कई घण्टे बजा। आपने एक घण्टे पढ़ना चाहा, लेकिन पन्द्रह मिनट बाद पढ़ना छोड़ दिया।

तजुर्बों से साबित होता है कि इनसान, अपने दिमाग़ को क़ाबू कर सकता है और नहीं भी कर सकता। नियंत्रित दिमाग़ (Controlled-Mind) और अनियंत्रित दिमाग़ (Uncontrolled-Mind)।

महात्मा बुद्ध ने इसी बात को दो मिसालों से समझाया : वह दिमाग़, जो क़ाबू में न हो, ऐसा है जैसे किसी पागल बन्दर को बिच्छू काट ले और वह

उछलता फिरे। क़ाबू किया हुआ दिमाग़ ऐसा है, जैसे एक बर्तन से तेल को दूसरे बर्तन में डाला जा रहा हो (Smooth-Flow)।

सूरज की किरणें, बिखरी होती हैं। जब वे धूप के शीशे (Sun Glass) में से गुज़ारी जाती हैं, तो एक बिन्दु (Point) पर जमा हो जाती हैं। तब उनकी ताक़त बढ़ जाती है और वे आग लगा देती हैं। इसी तरह इनसान के दिमाग़ में सोचें बिखरी हुई हैं, जब वे क़ाबू में आकर एक बिन्दु पर जमा होती हैं, तो वे ग़ैर-मामूली काम करने लगती हैं।

जल सेना, थल सेना, वायु सेना में जो ट्रेनिंग दी जाती है, वह यह है, ''ताक़त शरीर में नहीं होती, बल्कि दिमाग़ में होती है।'' सोच ही इनसान को ताक़तवर या कमज़ोर बनाती है।

स्पेस (Space) में जानेवाले, समुद्र में ग़ोता लगानेवाले, पहाड़ों पर चढ़नेवाले, हवा में कूदनेवाले, रेस करनेवाले लोग, अपनी सोचों को क़ाबू में रखकर ही ऐसे कारनामे कर पाते हैं।

जो भी ईजाद (Invention) होती है, नियंत्रित दिमाग़ के इस्तेमाल से ही होती है। नियंत्रित दिमाग़ हमारी कल्पना-शक्ति (Imagination) को बढ़ा देता है, जिसके बाद ही आर्ट व आरकिटेक्चर और नॉलेज की तरक़्क़ी होती है।

अपने दिमाग़ को क़ाबू करके, इनसान बड़े-बड़े कारनामे अंजाम दे सकता है। दिमाग़, यानी सोचों को क़ाबू करने का नाम ही माइंड मैनेजमेंट है।

इस्लाम की बुनियादी तालीमात "अक़ाइद (तौहीद, आख़िरत, रिसालत) और इबादात (नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज)" इनसान को इसी बात की ट्रेनिंग देती हैं।

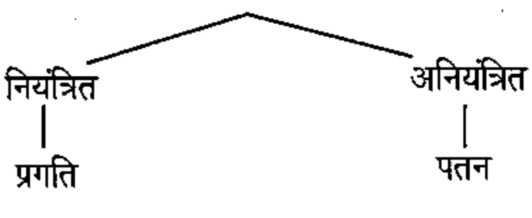

इनसाफ़
(Justice)

"निश्चय ही हमने अपने रसूलों को स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और तुला उतारी, ताकि लोग इनसाफ़ पर क़ायम हों। और लोहा भी उतारा, जिसमें बड़ी दहशत व ताक़त और लोगों के लिए कितने ही लाभ हैं।"

(क़ुरआन, 57:25)

आज की दुनिया में हो रहे हंगामे, हक़ीक़त में नाइनसाफ़ी या नाइनसाफ़ी का रद्देअमल (Injustice or Reaction of Injustice) हैं। कभी ताक़तवर कमज़ोर के साथ नाइनसाफ़ी कर रहा है और कभी कमज़ोर ताक़तवर के साथ। आज दुनिया को पहले से भी ज़्यादा इनसाफ़ की ज़रूरत है। तरक़्क़ी की वजह से, पूरी दुनिया एक पानी के जहाज़ (Ship) की तरह हो गई है, या तो सब डूबे या सब मंज़िल पर पहुँचे।

अल्लाह की किताब "क़ुरआन" (Ideology) पर जब अमल होगा। अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) (Model) का जब कहा माना जाएगा। ज़मीर व अन्तरात्मा (Balance)—जो एक ज़िन्दा जज (Living Judge) की तरह हर इनसान के अन्दर मौजूद है—के मुताबिक़ जब चला जाएगा। तब इनसान में नैतिक ताक़त (Moral Power) पैदा होगी।

इसके साथ ही, जब लोहा (Symbol of Power)—जिसमें ज़बरदस्त ताक़त और फ़ायदे हैं—को हासिल किया जाएगा, तब भौतिक ताक़त (Material Power) पैदा होगी।

जब किसी एक इनसान या क़ौम के पास, अख़्लाक़ी ताक़त और माद्दी ताक़त, दोनों जमा हो जाती हैं, तब वह न ज़ुल्म करता है और न उसपर ज़ुल्म किया जा सकता है। वह सिर्फ़ इनसाफ़ करता है।

आज की दुनिया में ताक़त का सन्तुलन बिगड़ गया है। जिसके पास अख़लाक़ी ताक़त है, उसके पास माद्दी ताक़त नहीं है। जिसके पास माद्दी ताक़त है, उसके पास अख़लाक़ी ताक़त नहीं है। दुनिया के एक बड़े हिस्से के इनसानों के पास माद्दी ताक़त है, तो उनके मुख़ालिफ़ों (Opponents) के पास न अख़लाक़ी ताक़त है और न माद्दी।

आज लोग अपने सियासी व आर्थिक फ़ायदों (Political and Economic Gains) के लिए कुछ भी कर लेते हैं। समाज में जगह-जगह नाइनसाफ़ी का ही बोल-बाला हो रहा है। इसकी वजह अख़लाक़ी और माद्दी ताक़त का एक जगह, जमा न होना है।

क़ुरआन और साइंस
(Quran and Science)

"शीघ्र ही हम (ख़ुदा) उन्हें अपनी निशानियाँ वाह्य क्षेत्रों (Universe) में दिखाएँगे और स्वयं उनके अपने भीतर भी, यहाँ तक कि उनपर स्पष्ट हो जाएगा कि वह (क़ुरआन) सत्य है।"

(क़ुरआन, 41:53)

"क्या ये लोग आसमान व ज़मीन की तख़लीक़ (Creation) पर ग़ौर नहीं करते? मालूम होता है कि उनकी मौत क़रीब आ गई है।" (क़ुरआन, 7:185)

क़ुरआन को ख़ुदा ने, तक़रीबन चौदह सौ साल पहले दुनिया में भेजा। क़ुरआन "हिदायत" (Guidance) की किताब है। ख़ुदा ने इसे इनसानों की रहनुमाई के लिए नाज़िल किया है। अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने क़ुरआन को "रब्बानी दस्तरख़्वान" कहा है। इसमें साइंस, समाजियात, मआशियात वग़ैरा के बारे में भी बहुत कुछ है। ऐसा इसलिए है ताकि इनसान, क़ुरआन का ख़ुदा की तरफ़ से होना मान ले।

"जिन लोगों ने हमारी (ख़ुदा की) आयतों का इनकार किया, उन्हें हम जल्द ही आग में झोंकेंगे। जब भी उनकी खालें पक जाएँगी, तो हम उन्हें दूसरी खालों से बदल दिया करेंगे, ताकि वे यातना का मज़ा चखते ही रहें" (क़ुरआन, 4:56)।

इस आयत में मेडिकल साइंस की इस नई दरयाफ़्त (Invention) को बताया गया है कि इनसान के शरीर में जो दर्द महसूस होता है, वह गोश्त (Flesh) में नहीं होता, बल्कि खाल (Skin) में होता है।

"हम (ख़ुदा) ने पानी से हर जीवित चीज़ बनाई" (क़ुरआन, 21:30)। साइंस के मुताबिक़, हर ज़िन्दा चीज़ पानी से पैदा हुई। सबसे पहले एक

कोशिकीय जीव (Ameba) पानी से पैदा हुआ। हर जानदार चीज़ में, तक़रीबन 75 प्रतिशत पानी मौजूद होता है। ज़मीन के ऊपर जो तब्दीली होती है, वह भी पानी की वजह से होती है। जैसे पहाड़ों का बनना, ज्वालामुखी का फटना और नए जज़ीरों (Islands) का वुजूद में आना।

"हम (ख़ुदा) ने हर चीज़ के जोड़े बनाए, ताकि तुम ध्यान दो" (क़ुरआन, 51:49)। **"महिमावान है वह (ख़ुदा) जिसने सबके जोड़े पैदा किए, धरती जो चीज़ें उगाती है उनमें से भी और स्वयं उनकी अपनी जाति में से भी और उन चीज़ों में से भी जिनको वे (अभी) नहीं जानते"** (क़ुरआन, 36:36)।

दुनिया की सभी चीज़ें, जोड़ों (Pairs) में पैदा की गई हैं। पेड़-पौधों में जोड़े होते हैं। जानवरों व परिन्दों में जोड़े होते हैं। इनसानों में जोड़े होते हैं। Atom में भी जोड़ा होता है : Electron और Proton का।

"क्या उन लोगों ने जिन्होंने इनकार किया, देखा नहीं कि ये आकाश और धरती बन्द थे। फिर हम (ख़ुदा) ने उन्हें खोल दिया" (क़ुरआन, 21:30)। **"उस (ख़ुदा) का मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज़ (के पैदा करने) का इरादा करता है तो उससे कहता है, हो जा! और वह हो जाती है"** (क़ुरआन, 36:82)।

साइंस के मुताबिक़, ज़मीन व आसमान एक इकाई (Unit) थे, मिले हुए थे, फिर उसमें एक ज़बरदस्त धमाका (Big-Bang) हुआ और आहिस्ता-आहिस्ता सारी चीज़ें बनने लगीं।

"फिर उस (ख़ुदा) ने आकाश की ओर रुख़ किया, जबकि वह मात्र धुआँ (Gas) था—और उसने उससे और धरती से कहा : आओ (वुजूद में), स्वेच्छा के साथ या अनिच्छा के साथ। उन्होंने कहा : हम स्वेच्छा के साथ आए" (क़ुरआन, 41:11)।

साइंस बताती है कि यह कायनात (Universe) गैसी माद्दे से बनी है, जो हीलयम व हाइड्रोजन से मिलकर बना था, और आहिस्ता-आहिस्ता घूम रहा था। पहले कायनात धुआँ (Gas) ही धुआँ थी। यह धुआँ आज भी देखा जा

सकता है और आज भी इससे सितारे (Planets) बन रहे हैं।

''(ख़ुदा ने) चन्द्रमा को प्रकाश (चमकता हुआ) और सूर्य को प्रदीप (चिराग़) बनाया'' (क़ुरआन, 71:16/10:5)।

जो चीज़ रोशन होती है, कभी उसकी अपनी रोशनी होती है और कभी दूसरी चीज़ से उसपर रोशनी पड़ रही होती है। चिराग़ की हमेशा अपनी रोशनी होती है। साइंस के मुताबिक़, सूरज की अपनी रोशनी है। चाँद की अपनी रोशनी नहीं है। सूरज की रोशनी चाँद पर पड़ती है, जिससे वह रोशन नज़र आता है। जैसे सड़क पर लगे वे रंगीन निशान, जो गाड़ियों की रोशनी पड़ने से रोशन नज़र आते हैं।

''और फिर हम (ख़ुदा) ने ज़मीन को अंडाकार की शक्ल (Oval shape) दी'' (क़ुरआन)।

साइंस ने साबित कर दिया है कि ज़मीन गोल नहीं है, बल्कि शुतुरमुर्ग़ (Ostrich) के अण्डे की तरह, लम्बाई लिए हुए है।

"सूर्य अपने नियत ठिकाने के लिए चला जा रहा है। यह बाँधा हुआ हिसाब है प्रभुत्वशाली, ज्ञानवान का'' (क़ुरआन, 36:38)। सौरमंडल (Solar System) के बारे में साइंस ने दो थिअरियाँ दीं : पहली 200 ई॰ में बतलीमूस (Ptolemy) की Geo-centric (ज़मीन रुकी हुई व बीच में है, बाक़ी सब सय्यारे उसके चारों तरफ़ घूम रहे हैं)। दूसरी 1543 ई॰ में निकोलास कूपरनिक्स की Helio-centric (सूरज रुका हुआ व बीच में है, बाक़ी सब सय्यारे उसके चारों तरफ़ घूम रहे हैं)। ये दोनों ग़लत साबित हुईं, तब तीसरी थ्योरी 1800 ई॰ में हरशल ने दी कि सूरज बीच में है, बाक़ी सब सय्यारे उसके चारों तरफ़ घूम रहे हैं और वह अपने पूरे सौरमंडल के साथ, एक न मालूम मंज़िल (16-Epics) की तरफ़ दौड़ा चला जा रहा है। और यही बात क़ुरआन ने भी कही है।

''वह अल्लाह ही है जिसने रात और दिन बनाए और सूरज व चाँद को पैदा किया, यह सब अपनी-अपनी धुरी (Axis) पर चल रहे हैं'' (क़ुरआन, 21:33/36:40)। साइंस कहती है कि ज़मीन की धुरी 23½ डिग्री है। ज़मीन

एक हज़ार मील प्रति सेकेंड की रफ़्तार से अपनी धुरी पर घूम रही है। ज़मीन 68000 मील प्रति घण्टे अपने धुरी की गर्दिश रखती है और 44000 मील प्रति घण्टे के हिसाब से, सूरज के साथ सफ़र कर रही है।

"क्या वे देखते नहीं कि हम (ख़ुदा) ज़मीन को उसके किनारों (चतुर्दिक) से सिकोड़ते चले आ रहे हैं" (क़ुरआन, 21:44)।

साइंस के मुताबिक़, एक बड़ा सितारा, सूरज के क़रीब से गुज़रा, उसकी कशिश से सूरज का एक टुकड़ा कटकर दूर जा गिरा और घूमने लगा और ज़मीन बनी। शुरू में ज़मीन का तापमान वही था जो सूरज का था, फिर ज़मीन ठण्डी होने लगी और अब तक हो रही है। ज़मीन जब गरम थी, तो उसकी मोटाई ज़्यादा थी, ठण्डी होकर सुकड़ती चली जा रही है।

"हम (ख़ुदा) ने आसमान (Universe) को अपने हाथों से बनाया और हम उसको फैलाते (Extension करते) रहेंगे" (क़ुरआन, 51:47)। 1948 ई॰ में, साइंस इस नतीजे पर पहुँची कि हर कहकशाँ दूसरी कहकशाँ से अलग होती जा रही है। इनके एक-दूसरे से दूर होने की वजह से, कायनात का फैलाव बढ़ता है और ख़ाली जगह में, नयी कहकशाँ बन जाती हैं।

"क्या ऐसा नहीं है कि हम (ख़ुदा) ने धरती को बिछौना बनाया और पहाड़ों को मेख़ें (Pegs)" (क़ुरआन, 78:6-7)। ज़मीन एक सन्तरे (Orange) की तरह है। ज़मीन का ऊपरी हिस्सा ठोस (Crust); अन्दरूनी हिस्सा, पिघला धातों (Magma) और आख़िरी नरम (Core) है। पहाड़ इसी आख़िरी नरम हिस्से में पहुँचते हैं, ज़मीन को खिसकने से बचाते और सन्तुलन बनाते हैं। पहाड़ ज़मीन में बिल्कुल कीलों की तरह काम करते हैं।

"तुम (इनसान) पहाड़ों को देखकर समझते हो कि वे जमे हुए हैं, हालाँकि वे चल रहे होते हैं, जिस प्रकार बादल चलते हैं। यह अल्लाह की कारीगरी है।" (क़ुरआन, 27:88)। ज़मीन के नीचे पिघली धातें (Magma) हरकत करता रहता है। जिसकी वजह से ज़लज़ले आते और ज्वालामुखी फटते हैं। हिमालय पर मिले समुद्री जानवरों के ढाँचों (Fossils) से यह साबित हुआ है कि हिमालय पहाड़ भी कभी समुंद्र था।

"(अल्लाह ने) बिजली पैदा की जिसमें डर और लालच है" (क़ुरआन,

13:12)। आसमानी बिजली की कड़क से हवा में मौजूद नाइट्रोजन, ऑक्सीजन के साथ मिल जाती है, जिससे नाइट्रेट (No_3) बनती है, जो पौधों का खाना है। बिजली में डर के अलावा, लालच यह होता है कि इससे ज़मीन का उपजाऊपन (Fertility) बढ़ जाता है।

"जिस (ख़ुदा) ने पेड़-पौधे उगाए और फिर उनको काले कुड़े (Dark Stubble) में बदल दिया" (क़ुरआन, 87:4-5)। पेड़-पौधे व जंगल, जब ज़मीन में दब जाते हैं, तो ज़मीन की गर्मी उन्हें जला देती है, फिर उनसे गैसें व पेट्रोल बनता है। (अगर ऐसा नहीं होता तो ऑक्सीजन की ज़्यादती से माहौल जल उठता)। इनसान ने 1932 में इसी पेट्रोल की खोज की।

"वह (क़ियामत की) घड़ी निकट आ लगी और चाँद फट गया" (क़ुरआन, 54:1)। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) का एक मोजिज़ा अपनी उंगली के इशारे से चाँद के दो टुकड़े करना है। साइंसदाँ, चाँद की दराड़ों (Craks) को देखकर, इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि चाँद कभी दो टुकड़े हुआ था।

"जिसे अल्लाह सीधे मार्ग पर लाना चाहता है, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसे गुमराही में पड़ा रहने देना चाहता है, उसके सीने को तंग और भिंचा हुआ कर देता है; मानो वह आकाश में चढ़ रहा है" (क़ुरआन, 6:125)। जैसे-जैसे हम, ऊपर आसमान की तरफ़ जाते हैं, ऑक्सीजन (H_2o) कम होती चली जाती है। ऑक्सीजन की इस कमी से साँस घुटने लगता है।

क़ुरआन में, इस तरह की आयात का मतलब यह नहीं है कि क़ुरआन इनसान को साइंस पढ़ाने आया है। ऐसी आयतों का मतलब इनसान को यह यक़ीन दिलाना है कि क़ुरआन **"इनसानों के लिए ख़ुदा का पैग़ाम"** है।

साइंस एक मुसलसल तरक़्क़ी करनेवाला सबजेक्ट है। आज भी साइंस की तरक़्क़ी इतनी कम है कि उसकी बुनियाद पर क़ुरआन को नहीं जाँचा जा सकता।

साइंस सिर्फ़ यह बताती है कि इनसान और कायनात क्या है? क़ुरआन बताता है : इनसान की ज़िन्दगी का मक़सद क्या है? उसका बनानेवाला उससे क्या चाहता है? और इनसान को क्यों पैदा किया गया है?

मुकम्मल आज़ादी नहीं होती
(No Total Freedom)

"क्या मनुष्य समझता है कि वह यूँ ही स्वतंत्र छोड़ दिया जाएगा?" (क़ुरआन, 75:36)

कहा जाता है कि अमेरिका जब यूरोप के क़ब्ज़े से आज़ाद हुआ, उस मौक़े पर एक आदमी ख़ुशी से उछलता-कूदता, अपने दोनों हाथ हिलाता जा रहा था। क़रीब से गुज़रते आदमी की नाक से उसका हाथ टकराया। उस आदमी ने कहा–

"Your freedom ends where my nose begins"

(तुम्हारी आज़ादी वहाँ ख़त्म होती है, जहाँ से मेरी नाक शुरू होती है।)

तब ही से यह अंग्रेज़ी मुहावरा बना।

आज़ादी दो तरह की होती है : सीमित आज़ादी (Limited-Freedom) और असीमित आज़ादी (Unlimited-Freedom)।

इनसान एक सामाजिक प्राणी है। इनसान बहुत से दूसरे इनसानों के साथ मिलकर समाज में रहता है। समाज में, ऐसा मुमकिन ही नहीं कि हर इनसान को असीमित आज़ादी मिल सके। एक इनसान की असीमित आज़ादी, दूसरे इनसान की आज़ादी को ख़त्म करती है। इनसान को समाज में जो आज़ादी हासिल होती है; वह सीमित आज़ादी ही होती है, न कि असीमित।

इनसान को अपने ख़यालात बयान करने की आज़ादी है, मगर दूसरों को गाली देने की नहीं। इनसान को अपनी गाड़ी तेज़ चलाने की आज़ादी है, मगर दूसरों को टक्कर मारने की नहीं। इनसान को हथियार रखने की आज़ादी है, मगर किसी को क़त्ल करने की नहीं।

समाज में नंगे रहने की आज़ादी, बेशर्मी की आज़ादी, ख़ुदकुशी की

आज़ादी, नुक़्सान देती है। जबकि भूख से आज़ादी, डर से आज़ादी, बीमारी से आज़ादी, ज़ुल्म से आज़ादी, फ़ायदा पहुँचाती है।

इनसान पैदा करके छोड़ दिया गया है। वह किसी बात के लिए पाबन्द नहीं है। उसका कोई हिसाब-किताब नहीं होगा। वह किसी की तरफ़ कोई ज़िम्मेदारी नहीं रखता—इनसान के ये गुमान, उसे जानवरों की सतह (Level) पर ले आते हैं। ऐसे इनसान, यह भूल जाते हैं कि जानवर बेइख़्तियार (Powerless) हैं। उन्हें आज़ादी (Freedom) हासिल नहीं है। वे जो कुछ करते हैं अपने प्रोग्राम व बनावट (Instinct) की वजह से करते हैं।

इनसान बाइख़्तियार (Powerful) है। उसे आज़ादी मिली है : काम करने या न करने, अच्छा करने या बुरा करने की। वह जो कुछ करता है अपनी अक़्ल की मदद से करता है। उसकी अक़्ल, उसे बताती है कि क्या सही है और क्या ग़लत।

इनसान का अक़्ली व अख़लाक़ी वुजूद (Rational & Moral Existence) रखना, इस बात का सुबूत है कि उसे बिना हिसाब-किताब नहीं छोड़ा जा सकता। इनसान को, जो दिल चाहे, जैसा दिल चाहे, करने की आज़ादी हासिल नहीं है।

इनसान चाहता है कि उसे मज़ा करने की आज़ादी मिले, मगर ज़िम्मेदारी न उठानी पड़े। आज के ज़माने में, औरत-मर्द का बिना शादी के साथ-साथ रहना (Live-in-Relationship), बीवी बदलना (Spouse Swapping) जैसे तसव्वुरात इसी लिए फैल रहे हैं।

ख़ुदा इनसान को जाएज़ मज़ा हासिल करने की आज़ादी देता है, मगर उसकी हदें (Limits) भी बताता है और ज़िम्मेदारियाँ (Responsibilities) भी बताता है। ख़ुदा की बताई बातों को न मानना व्यक्ति व समाज को नुक़सान पहुँचाना है।

ख़ुदा ने इनसान को आज़ादी दी। यह आज़ादी एक ज़िम्मेदारी से बंधी है। आज़ादी का सही इस्तेमाल, ख़ुदा की पसन्द के काम करना और आज़ादी का ग़लत इस्तेमाल, ख़ुदा की नाराज़गी के काम करना है।

ख़ुदा का डर और इनसाफ़

(Fear of God & Justice)

"ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह के लिए ख़ूब उठनेवाले, इनसाफ़ की निगरानी करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इनसाफ़ करना छोड़ दो। इनसाफ़ करो, यही धर्मपरायणता (परहेज़गारी) से अधिक निकट है। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ख़बर है।" (क़ुरआन, 5:8)

ज़ुल्म न करना, किसी को उसका पूरा हक़ देना इनसाफ़ है। कभी-कभी इनसाफ़ करना और छोटी बातों में इनसाफ़ करना, आसान काम है। बार-बार और छोटी-बड़ी हर बात में इनसाफ़ करना, बहुत मुश्किल काम हैं। इनसाफ़ करने में कभी ख़ुद का फ़ायदा होता है और कभी नुक़्सान। लगातार इनसाफ़ करते रहना तभी मुमकिन है, जब यह सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदा के लिए किया जाए। इसी लिए, ख़ुदा इनसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है।

ईमान एक अहद (Treaty) है; ख़ुदा और बन्दे के बीच। बन्दा यह वादा करता है कि वह दुनिया में अल्लाह से डर कर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारेगा। और अल्लाह वादा करता है कि इसके बदले; वह दुनिया व आख़िरत में बन्दे का मददगार बन जाएगा। इस अहद में बुनियादी चीज़ इनसाफ़ है। इनसाफ़ यह है कि ख़ुदा को ख़ुदा का, इनसानों को इनसानों का और ख़ुद को ख़ुद का, हक़ दिया जाए। इनसान पर इनसाफ़ करने का बहुत अच्छा असर पड़ता है: इनसाफ़ करने से पहले भी और इनसाफ़ करने के बाद भी। यह सोच—मुझे इनसाफ़ करना चाहिए—इनसान को ज़िम्मेदार बनाती है, संजीदा बनाती है, गहराई के साथ सोच-विचार करनेवाला बनाती है, फ़ैसलों पर जमनेवाला बनाती है, लालच व गुस्से के क़ाबू में न आनेवाला बनाती है और ख़ुद पर क़ाबू रखनेवाला बनाती है।

इनसाफ़ करने के बाद इनसाफ़ करने का एहसास—मैंने इनसाफ़ किया है—इनसान को ख़ुशी देता है। मनोबल (Will Power) बढ़ाता है। इनसान अपनी राय रखनेवाला और उसपर जमनेवाला बनता है। आसानी से न बहकनेवाला बनता है। उसका आत्म-विश्वास (Confidence) बढ़ता है। इनसाफ़ करना आसान होता है, जब ख़ुद का फ़ायदा और ग़ैर या दुश्मन का नुक़्सान हो। इनसाफ़ करना मुश्किल हो जाता है, जब ख़ुद का नुक़्सान और ग़ैर या दुश्मन का फ़ायदा हो। सिर्फ़ एक ही बात ऐसी है जो हर हालत में इनसाफ़ करना आसान बनाती है। और वह है, "ख़ुदा का डर" (Fear of God) । इनसाफ़ और ख़ुदा का डर, इन दोनों में गहरा रिश्ता है : जितना ज़्यादा ख़ुदा का डर होगा, उतना ज़्यादा इनसाफ़ होगा।

हज़रत नौमान-बिन-बशीर कहते हैं कि मेरे बापने मुझे तोहफ़ा (Gift) दिया, तो मेरी माँ ने (मेरे बाप से) कहा : "इस (तोहफ़ा देने) पर आप, जब तक अल्लाह के रसूल (सल्ल.) को गवाह नहीं बनाएँगे, मैं राज़ी नहीं हूँगी।" मेरे बाप रसूल (सल्ल.) के पास पहुँचे। रसूल (सल्ल.) ने उनसे पूछा, "क्या तुमने अपनी सभी औलादों को इस जैसा तोहफ़ा दिया है? "उन्होंने कहा : 'नहीं'। रसूल (सल्ल.) ने फ़रमाया "अल्लाह से डरो। और औलाद के बीच इनसाफ़ करो।" और कहा कि "मैं ज़ुल्म पर गवाह नहीं बनूँगा।"

(हदीस : बुख़ारी व मुस्लिम)

मौत
(Death)

"प्रत्येक जीव को मृत्यु का स्वाद चखना है। फिर तुम हमारी ओर वापस लौटोगे।" (क़ुरआन, 29:57)

दुनिया की हर एक बात में शक हो सकता है सिवाय 'मौत" के। मौत, एक यक़ीनी बात है। हम कह सकते हैं कि हर इनसान दुनिया में अपनी वापसी का टिकट (Return Ticket) लेकर आता है, उसे सिर्फ़ उसके कन्फ़र्म (Confirm) होने का इन्तिज़ार रहता है। एक अन्दाज़े के मुताबिक़ दुनिया में, हर एक मिनट में, सौ लोग मर जाते हैं। क्या हम मौत के बारे में न सोच कर इससे बच सकते हैं?

इनसान हमेशा ज़िन्दा रहने के लिए पैदा किया गया है। मौत, इस दुनिया से दूसरी दुनिया में पहुँचने का एक तरीक़ा है। मौत, इनसान का ख़ात्मा (End) नहीं, बल्कि स्थानांतरण (Transfer) है।

मौत की याद ही इनसान को मौत के डर से बचा सकती है। मौत को बार-बार याद करना इनसान को फ़ायदा पहुँचाता है। मौत की याद इनसान को ज़ुल्म करने से रोकती है। उसके दिल को नर्म करती है। ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाती है। सुस्ती ख़त्म करती है। अच्छाइयाँ करने पर उभारती है। इनसान अपने कामों की निगरानी करनेवाला बनता है। इनसान "तौबा" करने और ख़ुद में सुधार लाने में जल्दी करता है।

मौत को याद करना, यानी यह मानना है कि इस दुनिया में कुछ वक़्त गुज़ारने के बाद, हमेशा रहनेवाले घर—आख़िरत—की तरफ़ जाना है, जहाँ दुनिया में किए गए सभी कामों का हिसाब भी देना है।

इस्लाम, मौत को बार-बार याद करने को पसन्द करता है, लेकिन मौत

की तमन्ना करने को नापसन्द करता है। मुसीबतों से घबरा कर, मौत की तमन्ना करना, इनसान को मायूस व नाउम्मीद करता है।

एक ख़ुदा को माननेवाले कभी मायूस नहीं हो सकते। सारी चीज़ें ख़ुदा के हाथ में हैं। वह जो चाहे, जब चाहे, कर सकता है : दुख को ख़ुशी में, नाकामी को कामयाबी में, तकलीफ़ को आराम में, बीमारी को सेहत में, बेइज़्ज़ती को इज़्ज़त में, ग़रीबी को अमीरी में, बदल सकता है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया : "तुममें से कोई व्यक्ति किसी तकलीफ़ या दुख के मिलने पर मौत की तमन्ना न करे। अगर यह तमन्ना करनी ज़रूरी हो, तो यह कहना चाहिए : ऐ अल्लाह! मुझे उस वक़्त तक ज़िन्दा रख, जब तक ज़िन्दगी मेरे लिए बेहतर हो, और मुझे उस वक़्त मौत दे, जब मरना मेरे लिए बेहतर हो।" (हदीस : बुख़ारी व मुस्लिम)

ख़ुदा ने बनाया
(Created by Creator)

"याद करो जब तुम्हारे रब ने आदम की सन्तान (अर्थात् उनकी पीठों/Loins) से उनकी संतति निकाली और उन्हें स्वयं उनके ऊपर गवाह बनाया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? बोले : क्यों नहीं, हम गवाह हैं। (ख़ुदा ने) ऐसा इसलिए किया कि तुम क़ियामत के दिन कहीं यह न कहने लगो कि हमें तो इसकी ख़बर ही न थी।" (क़ुरआन, 7:172)

ख़ुदा के लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं। ख़ुदा ने आदम को बनाया और उनकी पीठ से आदम की होनेवाली सारी औलाद को निकाला। फिर उनसे अहद (Covenant) लिया (हदीस : अहमद) कि वे ख़ुदा को ही "रब" मानें।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इसी बात को, इस तरह कहा कि हर बच्चा "फ़ितरत" (Nature) पर पैदा होता है, उसके माँ-बाप उसे यहूदी या ईसाई या मजूसी बना देते हैं। (हदीस : बुख़ारी)

ख़ुदा कहता है कि मैंने अपने बन्दों को हनीफ़ (सिर्फ़ ख़ुदा की तरफ़ ध्यान देनेवाला) पैदा किया है। लेकिन शैतान उन्हें उनके दीन (फ़ितरत) से गुमराह कर देता है। (हदीस : मुस्लिम)

चीज़ों पर एक बॉक्स होता है, जिसमें लिखा होता है "Made in India" (हिन्दुस्तान में बनाई गई) या "Made in Japan" (जापान में बनाई गई)। इसी तरह इनसान के दिमाग़ में भी एक नज़र न आनेवाला बॉक्स है; जिसमें लिखा गया है "Created by Creator" (ख़ुदा ने बनाया)।

इनसान को जब इस दुनिया में भेजा जाता है, तो लिखावट हटाकर, बॉक्स को ख़ाली कर दिया जाता है। लेकिन इस नज़र न आनेवाले बॉक्स में, अन्दर की तरफ़ खींचनेवाली एक ज़बरदस्त कशिश (Attraction) रख दी

है, जो बॉक्स को भरने के लिए, बातों या चीज़ों को अपनी तरफ़ खींचती है।

इनसानी दिमाग़ का यह नज़र न आनेवाला बॉक्स दो बातों से भरा जा सकता है : ख़ुदा (God) से, या ग़ैर-ख़ुदा (Non-God) यानी दौलत, शोहरत, ताक़त; मज़ा, हुस्न, वग़ैरा से। ग़ैर-ख़ुदा से, जब इस बॉक्स को भरा जाता है, इनसान परेशान रहता है। ख़ुदा से, जब इस बॉक्स को भरा जाता है, इनसान सन्तुष्ट हो जाता है। (क़ुरआन, 13:28)

दिमाग़ के इस ख़ास बॉक्स के अलावा, इनसान के शरीर में, बहुत सारे नज़र आनेवाले बॉक्स (Visible-Boxes) और नज़र न आनेवाले बॉक्स (Invisible-Boxes) भी होते हैं। जैसे पेट का बॉक्स, मुँह का बॉक्स, कान का बॉक्स। इसी तरह मुहब्बत का बॉक्स, नफ़रत का बॉक्स, ग़ुस्से का बॉक्स वग़ैरा। ये सभी बॉक्स अपने-अपने कामों के लिए, दिमाग़ के उस ख़ास बॉक्स पर निर्भर होते हैं, जो ख़ुदा या ग़ैर-ख़ुदा से भरा जा सकता है।

इनसान चाहे या न चाहे, उसे अपने दिमाग़ के बॉक्स को भरना ही होता है। इनसान के लिए नामुमकिन है कि उस बॉक्स को न भरे। इनसान को सिर्फ़ इतनी आज़ादी मिली है कि चाहे तो, उस बॉक्स को ख़ुदा से भरे या ग़ैर-ख़ुदा से।

इनसान जैसे ही अपने नज़र न आनेवाले, दिमाग़ी बॉक्स में ग़ैर-ख़ुदा (दौलत/शोहरत/ताक़त/मज़ा/हुस्न) को भरता है। इनसान के सभी दूसरे बॉक्स, उसी के मुताबिक़ काम करने लगते हैं।

एक इनसान अपने दिमाग़ी बॉक्स में, ताक़त (Power) को भरता है। ऐसा इनसान, अपने पेट के बॉक्स को ऐसे ख़ानों से भरता है, जिससे ताक़त मिलती हो, चाहे वे खाने हराम ही क्यों न हों। ऐसा इनसान, उन बातों व कामों से नफ़रत करता है, जिसमें उसकी ताक़त कम हो रही हो या न मिल रही हो। ऐसा इनसान ऐसी बातों व इनसानों पर ग़ुस्सा होता है, जो उसके ताक़त हासिल करने के रास्ते में रुकावट बनते हैं। ऐसा इनसान, ऐसे आदमी व ऐसे कामों में साथ देता है, जिनमें उसे ताक़त मिलने की उम्मीद

हो। ऐसा आदमी इस बात की परवाह नहीं करता कि वह इनसाफ़ कर रहा है या ज़ुल्म, सच बोल रहा है या झूठ। ऐसे आदमी की मुहब्बत, नफ़रत, दोस्ती और दुश्मनी, सभी कुछ उस काम के लिए हो जाती है, जिससे उसने अपने दिमाग़ को भरा है।

दिमाग़ी बॉक्स में, जब ख़ुदा को भरा जाता है। और पूरा व सही (ख़ुद, ख़ुदा के बताए गए तरीक़े के मुताबिक़) भरा जाता है (ऐसा मुमकिन है कि ख़ुदा को भरे, मगर अधूरा भरे, जैसे ख़ुदा को भी माने और पीर-फ़क़ीर को भी)। तब, इनसान के नज़र आनेवाले व नज़र न आनेवाले सभी बॉक्स, उसी के मुताबिक़ काम करने लगते हैं। ऐसा इनसान पेट के बॉक्स को जाएज़ खानों से भरता है, जिन्हें ख़ुदा ने पसन्द किया। ऐसा इनसान नफ़रत ज़ुल्म से करता है, जिसको ख़ुदा ने नापसन्द किया। ऐसा इनसान गुस्सा, ख़ुदा की नाराज़गी वाले कामों से करता है। ऐसा इनसान, इनसाफ़ का साथ देता है, जिसका ख़ुदा ने हुक्म दिया। ऐसा आदमी इस बात की परवाह करता है कि वह इनसाफ़ करे, नाइनसाफ़ी नहीं और सच बोले, झूठ नहीं। ऐसे आदमी की मुहब्बत व नफ़रत, दोस्ती व दुश्मनी, सभी कुछ ख़ुदा के लिए हो जाती है।

हक़ीक़त में इनसान के नज़र न आनेवाले दिमाग़ी बॉक्स के, सही चुनाव पर ही, इनसान का सही रवैया निर्भर करता है। वरना नहीं।

महबूबा के लिए बरबाद हो जाना। दौलत के लिए जुर्म कर लेना। शोहरत के लिए गुनाह की दलदल में गिर जाना। ताक़त हासिल करने के लिए ज़ुल्म करना। ये सब दिमाग़ी बॉक्स के ग़लत चुनाव का नतीजा हैं।

ख़ामोशी की ताक़त
(The Power of Silence)

"आदमी जब भी कोई बात अपनी ज़बान से निकालता है, तो उसके पास एक निगराँ (Recorder) तैयार रहता है (जो उसे लिख लेता है)।" (क़ुरआन, 50:18)

इनसान का ख़ामोश रहना, उसे इबादत का सवाब दिलाता है। इनसान का ख़ामोश रहना, दूसरों पर उसका दबदबा बनाता है। इनसान का ख़ामोश रहना, उसे मुसीबतों से बचाता है। इनसान का ख़ामोश रहना, उसकी जहालत को छुपाता है। इनसान का ख़ामोश रहना, उसके सोचने को बढ़ाता है। इनसान का ख़ामोश रहना, ध्वनि प्रदूषण (Noise Pollution) को कम करता है।

सभी कामयाब व बड़े लोगों में कम बोलने और बेकार बातें न करने की ख़ूबी पाई जाती है। काम की और बामक़सद बातें, इतनी ज़्यादा नहीं होतीं कि हर वक़्त इनसान बोलता ही रहे। ज़्यादा बोलनेवाला बेमक़सद बोलेगा, या झूठ बोलेगा, या मज़ाक़ करेगा, या ताने देगा, या बुराई करेगा, या मक्खन पालिश करेगा।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया : "ज़्यादातर लोग, जहन्नम में, ज़बान (व गुप्तांगों के ग़लत इस्तेमाल) की वजह से जाएँगे" (हदीस : तिरमिज़ी)। "वह मुसलमान नहीं, जिसकी ज़बान (व हाथ) से लोग महफ़ूज़ न हों" (हदीस : बुख़ारी)। "इनसान के लिए नुक़्सान्देह चीज़ों में, सबसे ज़्यादा नुक़्सान्देह चीज़ ज़बान है" (हदीस : तिरमिज़ी)। "जो इनसान ख़ामोश रहा, उसने निजात पाई" (हदीस : अहमद)। "अच्छी बात ख़ामोशी से बेहतर है और बुरी बात से ख़ामोशी बेहतर है" (हदीस : बैहक़ी)। "जो इनसान अपनी ज़बान (और अपने गुप्त अंग के सही इस्तेमाल) की ज़मानत

दे, उसके लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) जन्नत (के मिलने की) ज़मानत देते हैं (हदीस : बुख़ारी)।

ज़बान के इस्तेमाल में इनसान लापरवाही करता है। वह ख़ुद को ज़िम्मेदार नहीं मानता और समझता है : जो चाहे बोलते रहो, कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, मगर ऐसा नहीं है। इनसान जो भी कुछ बोलता है, वह रिकार्ड होता रहता है।

साइंस ने साबित किया है कि आवाज़ कभी ख़त्म नहीं होती, बल्कि एक सेकेंड में 1,86,000 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से हवा में घूमती रहती है।

आवाज़ ग़ैर-जानदार चीज़ (Non-Living-Thing) पर रिकार्ड हो जाती है, जैसे कैसेट, सी॰डी॰ वग़ैरह, तो जानदार चीज़ (Living-Thing) यानी 'ज़बान' पर भी रिकार्ड हो सकती है।

ख़ुदा के इल्म में, इनसान के बोले और करे हुए, सभी काम होते हैं। लेकिन फिर भी ख़ुदा (किरामन-कातिबीन के द्वारा) उनकी रिकॉर्डिंग कराता है, ताकि, इनसान को सज़ा देने से पहले, यह रिकॉर्डिंग दिखाई जा सके, और इनसाफ़ की शर्त पूरी हो जाए। इनसान ख़ुद मान ले कि उसके साथ इनसाफ़ हुआ है।

एक इनसान, दूसरे इनसान को अपनी, दो ही चीज़ों से तकलीफ़ दे सकता है : हाथ से और ज़बान से। जिस्मानी तकलीफ़ (Physical Torture) या दिमाग़ी तकलीफ़ (Mental Torture)। हाथ से मार कर, या ज़ख़्मी करके, या क़त्ल करके। ज़बान से मज़ाक़ उड़ाकर, या ताने देकर, या गाली देकर।

ख़ामोश रहनेवाले इनसान के गुनाह कम होते हैं और दूसरों को उससे तकलीफ़ भी नहीं पहुँचती। ख़ामोशी कोई बेअमली नहीं है, बल्कि एक सोचा-समझा अमल (Planned-Act) है, जो इनसान के चाहने पर होता है, इसी लिए ख़ुदा इसका अच्छा बदला देता है।

ख़ामोशी कभी अच्छी बन जाती है और कभी बुरी। हर बुरी बात के मुक़ाबले, ख़ामोशी अच्छी होती है। और हर अच्छी बात के सामने, ख़ामोशी बुरी होती है। ख़ामोशी "मक़सद" नहीं है। मक़सद है, अच्छी व फ़ायदेमन्द

बात (Useful Conversation) करना, न कि बुरी व बेफ़ायदा बात।

इनसान जब ख़ामोश होता है, तो सुनता है या सोचता है। सुनने से इल्म बढ़ता है। सोचने से तरक़्क़ी होती है।

ख़ामोश रहना भी सीखने की चीज़ है। ज़्यादा सोचना, ज़्यादा ख़ामोश रहना सिखाता है। हम जब सोचते नहीं, तो बोलते हैं; जब सोचते हैं, तो ख़ामोश रहते हैं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की दुआ है—

> **"ऐ अल्लाह! मेरी ख़ामोशी सोच की ख़ामोशी हो, और**
> **मेरा देखना इबरत (सीख लेने) का देखना हो।"**

मैं भी ठीक - तुम भी ठीक
(I am O.K. – You are O.K.)

"कहो! हम तो अल्लाह पर और उस चीज़ पर ईमान लाए जो हम पर उतरी है, और जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़ और याक़ूब और उनकी सन्तान पर उतरी उसपर भी, और जो मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान हुई (उसपर भी हम ईमान रखते हैं)। हम उनमें से किसी को उस सम्बन्ध से अलग नहीं करते जो उनके बीच पाया जाता है, और हम उसी के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं।" (क़ुरआन, 3:84)

कुछ लोग मानते हैं : सभी मज़हब सही हैं। सभी मज़हब एक हैं।

इस बात को मानने के दो नतीजे निकलते हैं। पहला, ख़ुदा बेकार (Useless) काम करता है। ख़ुदा ने इनसान को एक मज़हब दिया, फिर दूसरा, फिर तीसरा, फिर चौथा...। दूसरा, ख़ुदा इनसानों को आपस में लड़वाना चाहता है। हिन्दू से कहता है, तू गोश्त मत खा और मुसलमान से कहता है, तू गोश्त खा।

हक़ीक़त यह है कि सारे मज़हब एक नहीं हैं, बल्कि अलग-अलग हैं। हाँ! सभी (आसमानी) मज़हबों का स्रोत (Source) एक (God) है। इसी लिए सभी मज़हबों में मिलती-जुलती बातें नज़र आती हैं। सभी कहते हैं : झूठ मत बोलो, बड़ों की इज़्ज़त करो, छोटों से मुहब्बत करो, ईमानदार रहो, इनसाफ़ करो, अमन से रहो।

आज मौजूद सभी मज़हब अलग-अलग हैं। अगर सभी मज़हब एक होते, तो सब पर एक साथ अमल किया जा सकता। किसी इनसान के लिए, सभी मज़हबों की तालीमात पर एक साथ अमल करना नामुमकिन है। हिन्दू

मज़हब तलाक़ की इजाज़त नहीं देता, मगर यहूदियत तलाक़ की इजाज़त देती है। कैथोलिक ईसाइयत पादरी के लिए, शादी को मना करती है, मगर इस्लाम, इनसान के लिए शादी को पसन्द करता है। हिन्दूमत में दौलत (लक्ष्मी) की पूजा होती है, मगर ईसाइयत में दौलत को बुरा कहा जाता है। जैन-मत (दिगम्बर) में नंगे रहने को बहुत अच्छा माना जाता है, मगर इस्लाम में जिस्म ढाँकने का हुक्म दिया गया है। बौद्ध-धर्म में दुनिया छोड़कर संन्यास लेने को सबसे बड़ी नेकी माना गया, मगर इस्लाम में दुनिया न छोड़कर ज़िम्मेदारी निभाने को, बहुत बड़ी नेकी माना गया। जैन-मत में ऋषि-मुनियों के लिए सबसे अच्छी बात खाना-पीना छोड़कर मौत को गले-लगाने को अच्छा समझा गया, मगर इस्लाम में सभी के लिए खुदकुशी को हराम क़रार दिया गया। सिख मत में सर के बाल व दाढ़ी न काटने को कहा गया, मगर बौद्ध-मत में सर व दाढ़ी के बाल साफ़ करने को पसन्द किया गया।

हक़ीक़त यह है कि आज सभी मज़हबों को दो क़िस्मों में बाँटा जा सकता है। महफ़ूज़ मज़हब (Preserved Religion) और ग़ैर-महफ़ूज़ मज़हब (Non-Preserved Religion)।

महफ़ूज़ मज़हब वह है, जिसमें ख़ुदा का पैग़ाम, आज भी हू-ब-हू उसी शक्ल में मौजूद हो, जिस शक्ल में उतरा। ग़ैर-महफ़ूज़ मज़हब वह है, जिसमें ख़ुदा के पैग़ाम को बदल दिया गया या भुला दिया गया। आज दुनिया में सिर्फ़ इस्लाम ही महफ़ूज़ मज़हब है, जिसमें ख़ुदा का पैग़ाम उसी ज़बान में और उसी तरह मौजूद है, जिस तरह आज से चौदह सौ साल पहले उतरा था।

ख़ुदा ने इनसानों को, मरने से पहले और मरने के बादवाली ज़िन्दगी, में कामयाब होने के लिए, एक ही दीन (Religion) दिया था। पहले नबी (God's Messenger/Prophet) हज़रत आदम ने दीन की तालीम दी (ख़ुदा एक है। दुनिया इम्तिहान है। मरने के बादवाली अस्थाई ज़िन्दगी में, दुनिया में किए गए हर अच्छे या बुरे अमल का बदला मिलेगा)। उनके मरने के बाद लोगों ने उसको बदला दिया, तब ज़रूरत हुई कि दूसरा नबी या पैग़म्बर आए और उसी तालीम को ख़ालिस शक्ल (Pure form) में पेश करे।

पुराने ज़माने में आने-जाने और बात करने के साधन (Means of Transportation & Communication) बहुत कम थे। एक इलाक़े के लिए, एक पैग़म्बर आए और दूसरे इलाक़े के लिए, दूसरे पैग़म्बर। यह सिलसिला चलता रहा, यहाँ तक कि आख़िरी पैग़म्बर (Final Messenger) हज़रत मुहम्मद आए और उन्होंने भी उसी दीन (Religion) की तालीम दी, जो उनसे पहले के सभी पैग़म्बर दे चुके थे।

सभी पैग़म्बरों ने मज़हब की जो तालीम दी, वह एक है। लेकिन, पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और दूसरे सभी पैग़म्बरों ने ख़ुदा का जो पैग़ाम (Religion) पेश किया उसमें सिर्फ़ एक फ़र्क़ है। सभी पैग़म्बरों ने सिवाय हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ख़ुदा का जो पैग़ाम (Message) पेश किया, उसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ख़ुदा ने नहीं ली थी, इसी लिए इनसान उसे बदल सके। लेकिन हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ख़ुदा का जो पैग़ाम पेश किया, उसकी हिफ़ाज़त (Protection) की ज़िम्मेदारी ख़ुदा ने ख़ुद ली है, इसी लिए आज तक कोई इनसान इसे बदल नहीं सका।

अहम यह है कि यह ख़ुदा का पैग़ाम (Message) था न कि नबी का। आख़िरी पैग़ाम (क़ुरआन) के बाद, कोई ज़रूरत नहीं रही कि कोई नया पैग़ाम आए या नया पैग़म्बर आए। आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आने के बाद, पैग़म्बरों के आने का सिलसिला ख़त्म हो गया। इनसानों की रहनुमाई के लिए ख़ुदा का पैग़ाम—क़ुरआन—मौजूद है, जो ख़ुदा की हिफ़ाज़त में है और बदला नहीं जा सकता।

सभी आसमानी मज़हब एक ही स्रोत (God) से आए हैं। सच्चाई (Truth) सभी मज़हबों में पाई जाती है। लेकिन उसका अनुपात (Ratio) अलग-अलग है; किसी में 10 प्रतिशत, किसी में 30 प्रतिशत, किसी में 50 प्रतिशत...। आज इनसान को ऐसा मज़हब चाहिए जिसमें 100 प्रतिशत सच्चाई (Truth) हो। यह कैसे पता चले कि किस मज़हब में 100 प्रतिशत सच्चाई है?

100 प्रतिशत सच्चाई (Truth) वाले मज़हब की पहचान के लिए, हमें हर मज़हब को, दो पहलुओं (Angles) से चेक करना होगा। एक, ऐतिहासिक विश्वसनीयता (Historical Credibility) यानी मज़हब जिस ज़बान में उतरा हो, जैसी तालीमात उतरी हों, वह आज भी हू-ब-हू उसी शक्ल में मिलती हों। दूसरे, उस मज़हब की तालीमात (Teachings) इनसानी बनावट (Human Nature) से मेल खाती हों। क्योंकि इनसान का बनानेवाला और मज़हब का देनेवाला, खुदा है।

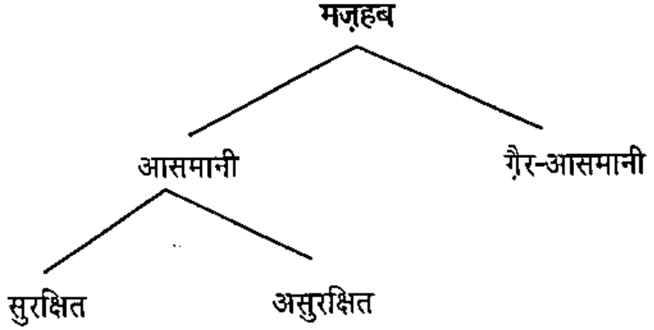

मानव-रचना की ईश्वरीय योजना
(The creation plan of The Creator for man)

(दृश्य : इनसान के बनने से पहले ख़ुदा और फ़रिश्तों के बीच, बात-चीत)

ख़ुदा : मैं, धरती में (इनसान को) ख़लीफ़ा (सत्ताधार/ऐसी क़ौम जो एक-दूसरे के बाद आए) बनानेवाला हूँ।

फ़रिश्ते : क्या उसमें उसको रखेगा, जो उसमें बिगाड़ पैदा करे और रक्तपात करे और हम तेरा गुणगान करते और तुझे पवित्र कहते हैं? (मालूम करना चाहा)

ख़ुदा : मैं जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते। (क़ुरआन, 2:30)

> "ख़ुदा ने इनसान को सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से बनाया। (क़ुरआन, 15:26) ख़ुदा ने आदम को सारे नाम सिखाए (इल्म इनसान के अन्दर रखा), फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया। (क़ुरआन, 2:31)

ख़ुदा : अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ। (क़ुरआन, 2:31)

फ़रिश्ते : पाक व महिमावान है तू। तूने जो कुछ हमें बताया उसके सिवा हमें कोई ज्ञान नहीं। निस्सन्देह तू सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है। (क़ुरआन, 2:32)

> ख़ुदा ने आदम से कहा : ऐ आदम! उन्हें उनके नाम बताओ। फिर उसने उन्हें उनके नाम बता दिए। (क़ुरआन, 2:33)

ख़ुदा : क्या मैंने तुमसे कहा न था कि मैं आकाशों और धरती की छिपी बातों को जानता हूँ और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो। (क़ुरआन, 2:33)

ख़ुदा : आदम को सजदा करो। (क़ुरआन, 2:34)

> (इल्म की वजह से इनसान को फ़रिश्तों पर बरतरी मिली) सबके सब फ़रिश्तों ने सजदा किया, सिवाय इबलीस के। (क़ुरआन, 15:30-31)
>
> इबलीस जिन्नों में से था और ख़ुदा ने उसे आदम से पहले आग से पैदा किया था। (क़ुरआन, 15:27)
>
> इबलीस ने ख़ुदा का हुक्म न माना, बड़ा बना और न माननेवाला बन गया। (क़ुरआन, 2:34)

(दृश्य : ख़ुदा और इबलीस (शैतान) के बीच, बात-चीत)

ख़ुदा : ऐ इबलीस! तूझे, क्या हुआ कि तू सजदा करनेवालों में शामिल नहीं हुआ?

इबलीस : मैं ऐसा नहीं हूँ कि मैं उस मनुष्य को सजदा करूँ, जिसको तूने सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से बनाया।

ख़ुदा : अच्छा तू निकल जा यहाँ से, क्योंकि तुझ पर फिटकार है। निश्चय ही बदले के दिन तक तुझ पर धिक्कार है।

इबलीस : मेरे रब! फिर तू मुझे उस दिन तक के लिए मुहलत दे, जबकि सब उठाए जाएँगे (इबलीस ने इनसान को दुश्मन समझ लिया)।

ख़ुदा : अच्छा तुझे मुहलत है, उस दिन तक के लिए, जिसका समय ज्ञात एवं नियत है।

इबलीस : मेरे रब! इसलिए कि तूने मुझे मार्ग से विचलित कर दिया है, अतः मैं भी धरती में उन (मनुष्यों) के लिए मनमोहकता पैदा करूँगा और उन सबको बहकाकर रहूँगा, सिवाय उनके जो (अपने अच्छे कामों की वजह से) तेरे चुने हुए बन्दे होंगे।

ख़ुदा : मुझ तक पहुँचने का यही सीधा मार्ग है, मेरे बन्दों पर तो तेरा कुछ ज़ोर न चलेगा, सिवाय उन बहके हुए लोगों के जो तेरे पीछे हो लें। निश्चय ही जहन्नम ही का ऐसे समस्त लोगों से वादा है। (क़ुरआन, 15:32:43)

(दृष्य: आदम, फिर उनकी पत्नी (हव्वा) को बनाने के बाद, ख़ुदा की उनसे बात-चीत)

ख़ुदा : ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी (हव्वा) जन्नत में रहो और वहाँ जी भर बेरोक-टोक जहाँ से तुम दोनों का जी चाहे खाओ, लेकिन इस वृक्ष के पास न जाना, अन्यथा तुम ज़ालिम ठहरोगे।

(क़ुरआन, 2:35)

ख़ुदा : ऐ आदम! निश्चय ही यह (इबलीस) तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का शत्रु है। ऐसा न हो कि यह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा दे और तुम तकलीफ़ में पड़ जाओ।

तुम्हारे लिए तो ऐसा है कि न तुम यहाँ (जन्नत में) भूखे रहोगे और न नंगे और यह कि न यहाँ प्यासे रहोगे और न धूप की तकलीफ़ उठाओगे।

(क़ुरआन, 20:117-119)

(दृश्य : इबलीस और आदम व हव्वा के बीच, बात-चीत)

इबलीस, जन्नत में आदम व उनकी पत्नी को बहकाने के लिए पहुँचा, ताकि उनकी शर्मगाहों (Private Parts) को, जो उन दोनों से छिपी थी, उन दोनों के सामने खोल दे। (क़ुरआन, 7:20)

इबलीस :ऐ आदम! क्या मैं तुझे शाश्वत जीवन के वृक्ष का पता दूँ और ऐसे राज्य का जो कभी जीर्ण न हो? (क़ुरआन, 20:120)

शायद आदम व हव्वा ख़ामोश रहे।

इबलीस :तुम्हारे रब ने तुम दोनों को जो इस वृक्ष से रोका है, तो केवल इसलिए कि ऐसा न हो कि तुम कहीं फ़रिश्ते हो जाओ या कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें अमरता प्राप्त हो जाए। (क़ुरआन, 7:20)

आदम व हव्वा इनकार करते रहे। उस (इबलीस) ने दोनों के आगे क़समें खाईं। (क़ुरआन, 7:21)

इबलीस :निश्चय ही मैं तुम दोनों का हितैषी हूँ। (क़ुरआन, 7:21)

इस प्रकार धोखा देकर इबलीस ने उन दोनों को झुका लिया। अन्ततः जब उन्होंने उस वृक्ष का स्वाद लिया, तो उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खुल गईं और वे अपने ऊपर बाग़ के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे। तब उनके रब ने उन्हें पुकारा।" (क़ुरआन, 7:22)

(दृश्य : ख़ुदा की आदम व हव्वा और इबलीस से बात-चीत)

ख़ुदा : क्या मैंने तुम दोनों को इस वृक्ष से रोका नहीं था और तुमसे कहा नहीं था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रु है?

आदम व हव्वा :हमारे रब! हमने अपने आप पर अत्याचार किया। अब यदि तूने हमें क्षमा न किया और हम पर दया न दर्शाई, फिर तो हम घाटा उठानेवालों में से होंगे। (क़ुरआन, 7:22-23)

फिर आदम ने अपने रब से (तौबा के) कुछ शब्द पा लिए, तो अल्लाह ने उसकी तौबा क़बूल कर ली। (क़ुरआन, 2:37), फिर ख़ुदा ने आदम व हव्वा और इबलीस से कहा।

ख़ुदा : उतरो (जन्नत से), तुम एक-दूसरे के शत्रु होगे और तुम्हें एक समय तक धरती में ठहरना और बिलसना है। (क़ुरआन, 2:36)

ख़ुदा : तुम सब यहाँ (जन्नत) से उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरी ओर से कोई मार्गदर्शन (Revelation) पहुँचे तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण किया, तो ऐसे लोगों को न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे। और जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही आग में पड़नेवाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।" (क़ुरआन, 2:38-39)

सुधार का तरीक़ा
(Reform Technique)

"और तुम अपने मुँह से वह कुछ कह रहे थे, जिसके विषय में तुम्हें कोई ज्ञान न था और तुम उसे एक साधारण बात समझ रहे थे; हालाँकि अल्लाह के निकट वह एक भारी बात थी।"

(क़ुरआन, 24:15)

ग़लती करना बुरी बात है। ग़लती करके, उसको न मानना, उसपर अड़े रहना, ग़लती करने से भी ज़्यादा बुरी बात है। पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मुताबिक़ : सभी इनसान ग़लती करनेवाले हैं और उनमें बेहतर वे हैं, जो तौबा कर लेते हैं। (हदीस : तिर्मिज़ी, इब्ने-माजा)

एक इनसान, जब दूसरे इनसान की ग़लती का सुधार करे, तो इस काम के पीछे, उसका मक़सद ख़ुदा की ख़ुशी (God's Pleasure) हासिल करना और उस इनसान की ख़ैरख़ाही (Well Wishing) होना चाहिए। ऐसा सुधार जिसके पीछे ख़ुद को बड़ा (Superior) और दूसरे को छोटा (Inferior) साबित करना, या अपना ग़ुस्सा निकालना, या बदला लेना, या मज़ाक़ उड़ाना हो, ख़ुदा को सख़्त नापसन्द है।

हम जब किसी आदमी की ग़लती का सुधार करें, उसकी हैसियत व उसके हालात को ध्यान में ज़रूर रखें। अक्सर ऐसा होता है कि एक इनसान, जो ग़लती कर रहा होता है, वह उसे महसूस (Realise) नहीं कर रहा होता। इनसान की 'ग़लती' से, उसपर व दूसरों पर बुरे असरात (Bad effects) पड़ते हैं। उन बुरे असरात को, बेहतरीन ढँग से महसूस करवाने से ही कामयाब सुधार हो सकता है।

सुधार का अच्छा तरीक़ा अपनाने से, ग़लती करनेवाला इनसान, ख़ुद को मजबूर व कमज़ोर महसूस नहीं करता। उसकी बेइज़्ज़ती (Insult) भी नहीं होती और सुधार करनेवाला उसे बॉस (Boss) भी नहीं लगता। पैग़म्बर

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की ज़िन्दगी में हमें, इस तरीक़े से सुधार करने की बेहतरीन मिसाल मिलती हैं—

हज़रत अबू-मसऊद अंसारी कहते हैं कि मैं अपने एक गुलाम को (कोड़े से) पीट रहा था, मुझे अपने पीछे से, किसी की आवाज़ सुनाई दी : "अबू-मसऊद समझ लो, अबू-मसऊद समझ लो"। मैंने पीछे मुड़कर देखा, वह अल्लाह के रसूल थे। तब, उन्होंने कहा : "तुझे इस (गुलाम/नौकर) पर जितना क़ाबू (Control) है, अल्लाह को तुझपर उससे ज़्यादा क़ाबू है।"

हज़रत अबू-मसऊद (रज़ि॰) कहते हैं कि इसके बाद, मैंने कभी अपने किसी गुलाम (नौकर) को नहीं मारा। (हदीस : तिर्मिज़ी)

एक क़ुरैशी नौजवान हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के पास आया और ज़िना (Adultry) की इजाज़त माँगी। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने उसे क़रीब बुलाया और कहा, "क्या यह बात तुम अपनी माँ के लिए पसन्द करते हो?" उसने कहा : मैं अपनी माँ के लिए, यह बात कभी पसन्द नहीं कर सकता।" फिर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने उससे, यही सवाल, उसकी बहन, फूफ़ी और ख़ाला के बारे में किया। हर सवाल के बाद, हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) उससे पूछते, "क्या तुम इसे पसन्द करते हो?" और हर बार, वह यही जवाब देता कि मैं यह पसन्द नहीं करता। उस नौजवान के इस जवाब पर, हर बार हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) फ़रमाते, "और लोग भी इसे पसन्द नहीं करते।"

फिर पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने अपना हाथ उस नौजवान के ऊपर रखा और दुआ की, "ऐ अल्लाह! इसके गुनाहों को माफ़ कर दे, इसके दिल को पाक कर दे और इसकी शर्मगाह (Private Part) को बुराइयों से बचा। इस (घटना) के बाद देखा गया कि उस नौजवान ने, इस तरह की कभी कोई बुराई नहीं की।" (हदीस : अहमद)

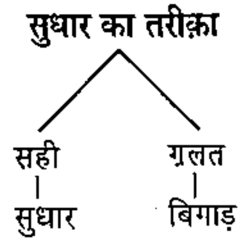

अक़्ल की आज़ादी न कि ख़ाहिश की

(Freedom of Reason, not Desire)

"(ऐ नबी लोगों से) कहो : मैं तुम्हें बस एक बात की नसीहत करता हूँ कि अल्लाह के लिए दो-दो और एक-एक करके उठ खड़े हो; फिर विचार करो।" (क़ुरआन, 34:46)

"क्या तुमने उसको भी देखा, जिसने अपना ख़ुदा अपनी (तुच्छ) इच्छा को बना रखा है?" (क़ुरआन, 25:43)

इनसान के पास जो सबसे अच्छी चीज़ है, वह अक़्ल है। इनसान की अक़्ल लामहदूद ताक़त (Unlimited Power) रखती है। सोच-विचार करने से इनसानी अक़्ल कभी थकती नहीं और अक़्ल कभी सोती भी नहीं। ज़्यादातर इनसान, अपनी अक़्ल का बहुत कम इस्तेमाल करते हैं। मनोविज्ञान (Psychology) के एक अन्दाज़े के मुताबिक़, एक प्रतिभाशाली इनसान (Genius) अपनी अक़्ल का तक़रीबन आठ प्रतिशत ही इस्तेमाल कर पाता है, बाक़ी बिना इस्तेमाल किए वापस ले जाता है।

ख़ुदा की अक़्ल और उसके इल्म के मुक़ाबले, इनसान की अक़्ल और उसका इल्म बहुत महदूद (Limited) है। एक हद के बाद, इनसान की अक़्ल नाकाम हो जाती है। जैसे, ख़ुदा की ज़ात (Personality) कैसी है? तक़दीर क्या है? वग़ैरह। इनसानी अक़्ल की हदों (Limits) का अन्दाज़ा, हम इस बात से लगा सकते हैं कि इनसान ख़ुद अपनी हक़ीक़त : अक़्ल कैसी है? और रूह (Spirit) क्या है? के बारे में भी कुछ नहीं जानता। बहुत-सी बातें इनसानी अक़्ल में नहीं आ सकतीं, बिल्कुल इस तरह जैसे, एक लीटर की बोतल में, दो लीटर दूध नहीं आ सकता।

अक़्ल के मुकम्मल न होने की वजह से, इस्लाम हर मामले में अक़्ल के

इस्तेमाल को बढ़ावा देता है। लेकिन कुछ बातों को छोड़कर, अक़्ल को हर मामले में कसौटी या जज नहीं बनाया जा सकता। इनसानी अक़्ल की इस कमी को दूर करने के लिए खुदा ने अपनी 'वह्य' WAHY (Allah's Message revealed upon Prophets) भेजी। सिर्फ़ वह्य यानी नबियों पर आए खुदा के सन्देश की रौशनी में काम करनेवाली अक़्ल ही, जज बन सकती है और इनसान को पूरा फ़ायदा पहुँचा सकती है।

सोच-विचार करने यानी अक़्ल के इस्तेमाल से इनसान को बहुत फ़ायदे हासिल होते हैं—इनसान व कायनात के बारे में मालूमात मिलती हैं। खुदा पर यक़ीन बढ़ता है। इनसान न सिर्फ़ खुदा को मानता, बल्कि महसूस करने लगता है। इनसान को सही व ग़लत की पहचान होती है। और बातों व चीज़ों की हक़ीक़त उसपर खुल जाती है। इनसान को अपनी ज़िन्दगी का मक़्सद मिल जाता है और वह अपने वक़्त व ताक़त का सही इस्तेमाल करने लगता है। ऐसा इनसान दुनिया को फ़ायदा पहुँचानेवाला (Contributor) बन जाता है, न कि सिर्फ़ लेनेवाला (Receiver)।

इनसान में ख़ाहिशें (Desires) एक ऐसी ताक़त (Force) हैं, जो इनसान को हरकत में लाती हैं। ये ख़ाहिशें अपने आपमें अच्छी चीज़ हैं, मगर जब ये असन्तुलित हो जाती हैं, तो बुरी बन जाती है। ख़ाहिशों की दो क़िस्में की जा सकती हैं : सन्तुलित ख़ाहिशें (Balanced-Desires) और असन्तुलित ख़ाहिशें (Unbalanced-Desires)।

ख़ाहिशें जब तक सन्तुलित रहती हैं, वे अच्छी होती हैं और इनसान पर अच्छे असरात (Good-effects) डालती हैं। लेकिन जैसे ही वे असन्तुलित होती हैं, वे बुरी बन जाती हैं और इनसान पर उनके बुरे असरात (Bad-effects) पड़ते हैं।

अपनी औलाद को खाना खिलाने की ख़ाहिश, तालीम दिलाने की ख़ाहिश, सुरक्षा देने की ख़ाहिश, अच्छी हैं। लेकिन ये बुरी तब बन जाती है जब आदमी यह सोचे कि सारे बच्चे भूखे रह जाएँ, सिर्फ़ मेरे बच्चे खाएँ। सारे बच्चे जाहिल रह जाएँ, सिर्फ़ मेरे बच्चे पढ़ें, सारे बच्चे ग़ैर-महफ़ूज़ हों,

सिर्फ़ मेरे बच्चे महफ़ूज़ हों।

इनसान और ख़ाहिशों के बीच दो ही रिश्ते हो सकते हैं—एक, इनसान ख़ाहिशों को क़ाबू (Control) में करे। दूसरा, ख़ाहिशें इनसान को क़ाबू में करें। असन्तुलित ख़ाहिशें इनसान को क़ाबू में करती हैं। जब इनसान अपनी ख़ाहिशों को बहुत ज़्यादा अहमियत (Importance) देने लगता है, तो एक स्तर (Stage) पर पहुँचकर, ख़ाहिशें ज़रूरत (Need) बन जाती हैं। आप बार-बार अपने पास कार के न होने को सोचते हैं; यहाँ तक कि आप लोगों से मिलना छोड़ देते हैं, यह समझने लगते हैं कि कार नहीं है कैसे जाएँ, जबकि बस मौजूद है।

अक़्ल की आज़ादी और अक़्ल का ख़ूब इस्तेमाल, इनसान को तरक़्क़ी की तरफ़ ले जाता है। ख़ाहिशात की आज़ादी और आँखें बन्द करके, ख़ाहिशात पर चलना, इनसान को पतन (Dawnfall) की तरफ़ ले जाता है।

ख़ुदा का आज़माना,
न कि ख़ुदा को आज़माना
(God Tests Man, Man does not Test God)

"जिस (ख़ुदा) ने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है।" (क़ुरआन, 67:2)

"हम (ख़ुदा) अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डालकर तुम सबकी परीक्षा करते हैं।" (क़ुरआन, 21:35)

इनसान पर अच्छे हालात आते हैं; वह समझता है कि ख़ुदा ने उसे उसका हक़ दिया। लेकिन जब बुरे हालात आते हैं; वह समझता है कि ख़ुदा ने उसके साथ ज़ुल्म किया। इनसान भूल जाता है कि अच्छे हालात और बुरे हालात, दोनों उसके इम्तिहान के लिए होते हैं। अच्छे हालात में शुक्र करना और बुरे हालात में सब्र करना; इनसान को ख़ुदा के इम्तिहान में कामयाब बनाता है। जबकि अच्छे हालात में नाशुक्री करना और बुरे हालात में शिकायत करना, उसे नाकाम बनाता है।

इनसान पर अच्छे हालात आते हैं : कभी वे उसके इम्तिहान के लिए होते हैं। कभी वे उसके अच्छे कामों का नतीजा होते हैं। और कभी वे उसको उसकी बुराई पर ख़बरदार करने (Warning) के लिए होते हैं। इसी तरह जो बुरे हालात आते हैं; कभी वे उसके इम्तिहान के लिए होते हैं। कभी वे उसके बुरे कामों का नतीजा होते हैं और कभी वे उसको उसकी बुराई पर ख़बरदार करने के लिए होते हैं।

इनसान की ज़िन्दगी एक इम्तिहान है। ज़रूरी है कि दुनिया में अच्छाई

व बुराई और सुख व दुख, दोनों हों। इनसान को अच्छाई या बुराई में से, किसी एक को चुनने की आज़ादी भी हो, सुख व दुख उसके इम्तिहान के लिए हों। इम्तिहान के खातमे पर एक बदला मिलने की जगह भी हो, जहाँ इनसान को उसके अच्छे कामों पर इनाम और बुरे कामों पर सज़ा मिले।

ऐसा नहीं है कि ख़ुदा नहीं जानता कि इनसान क्या करेगा? ख़ुदा ने इनसान को आज़ादी दी। उसे अच्छे या बुरे किसी काम के लिए मजबूर नहीं किया। जब इनसान को उसके बुरे कामों पर सज़ा और अच्छे कामों पर इनाम मिलेगा, तब वह नहीं कह सकता कि उसके साथ ज़्यादती हुई। वह खुद मानेगा कि उसके साथ इनसाफ़ हुआ।

ख़ुदा ने इनसान को बनाया न कि इनसान ने ख़ुदा को। ख़ुदा का हक़ है जब चाहे, जैसे चाहे इनसान को आज़माए, न कि इनसान का हक़ कि वह ख़ुदा को आज़माए।

ख़ुदा को न माननेवाला एक आदमी, ख़ुदा को माननेवाले आदमी को बीस मंज़िला इमारत की छत पर ले जाता है और कहता है—"तुम छत पर से कूदो, अगर ख़ुदा है, तो वह तुम्हें बचा लेगा।"

ख़ुदा को माननेवाला आदमी, जवाब देता है—"बेवक़ूफ़! बन्दा ख़ुदा को नहीं आज़माता, ख़ुदा बन्दे को आज़माता है।"

कसौटी बरतर और कमतर की
(Criterion of Superiority and Inferiority)

"किन्तु मनुष्य का हाल यह है कि जब उसका रब इस प्रकार उसकी परीक्षा करता है कि उसे प्रतिष्ठा और नेमत प्रदान करता है, तो वह कहता है : मेरे रब ने मुझे प्रतिष्ठित किया।

किन्तु जब कभी वह उसकी परीक्षा इस प्रकार करता है कि उसकी रोज़ी नपी-तुली कर देता है, तो वह कहता है : मेरे रब ने मेरा अपमान किया।" (क़ुरआन, 89 : 15-16)

समाज में बहुत-सी ख़राबियों की वजह : इनसान का ख़ुद को इज़्ज़तदार व बरतर (Superior) समझना और दूसरों को ज़लील व कमतर (Inferior) या ख़ुद को कमतर और दूसरों को बरतर समझना है।

ख़ुद को बरतर समझने का असर, इनसान पर यह होता है कि वह अपनी ग़लत बात को भी सही समझता है और लोगों से मनवाना चाहता है। ख़ुद को कमतर समझने का असर, यह होता है कि वह अपनी सही बात को भी ग़लत समझता है और दूसरों की ग़लत बात को मानना चाहता है।

"जिस आदमी को दौलत या ताक़त या शोहरत मिली, वह इज़्ज़तवाला है और जिसे नहीं मिली, वह ज़लील है।" यह सोच, लोगों को बरतर व कमतर समझने की इनसानी कसौटी को बिगाड़ती है। इनसान के इस ग़लत रवैये की वजह, ज़िन्दगी के बारे में उसका माद्दी एवं भौतिक नज़रिया (Materialistic Approach) है।

हक़ीक़त यह है कि ख़ुदा ने दुनिया को इनसान के लिए, एक इम्तिहान के तौर पर बनाया है। वह किसी को कुछ देकर आज़मा रहा है और किसी को न देकर। किसी को एक चीज़ ज़्यादा दी है, तो दूसरे को दूसरी चीज़।

जब इनसान किसी चीज़ के मिलने पर ख़ुदा का शुक्र अदा करता और न मिलने पर सब्र करता है, तो वह इस इम्तिहान में कामयाब हो जाता है। जब इनसान किसी चीज़ के मिलने पर घमण्ड और न मिलने पर शिकायत करता है, तो वह इस इम्तिहान में नाकामयाब हो जाता है।

इनसान को ख़ुदा ने बनाया है। इनसान को बरतर या कमतर समझने की अस्ल कसौटी वही होगी, जो ख़ुदा ने बताई है—और वह है—तक़वा (Piousness) यानी ख़ुदा का डर, जो इनसान को नेक बनाता है। जो इनसान ज़्यादा नेक है, वह ज़्यादा अच्छा है और जो कम नेक है, वह कम अच्छा है। और जो बिल्कुल नेक नहीं, वह बुरा है। ख़ुदा की निगाह में जो इनसान नेक है, वह बरतर है और जो नेक नहीं वह कमतर है—

"वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक (अल्लाह का) डर रखता है।" (क़ुरआन, 49:13)

मुहब्बत और डर
(Love and Fear)

"कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह से हटकर दूसरों को उसके समकक्ष ठहराते हैं, उनसे ऐसा प्रेम करते हैं जैसा अल्लाह से प्रेम करना चाहिए। और कुछ ईमानवाले हैं उन्हें सबसे बढ़कर अल्लाह से प्रेम होता है।" (क़ुरआन, 2:165)

"ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो और उस दिन से डरो जब न कोई बाप अपनी औलाद की ओर से बदला देगा और न कोई औलाद ही अपने बाप की ओर से कोई बदला देनेवाली होगी।" (क़ुरआन, 31:33)

"मुहब्बत" अरबी ज़बान के लफ़्ज़ "हब" से बना है, जिसके मायने हैं "बीज"। हब एक ख़ास बीज होता है। उसकी ख़ूबी यह होती है कि जब उसे ज़मीन में बोया जाता है, तो सरदी, गरमी, पतझड़, बहार; किसी भी मौसम का उसपर असर नहीं होता। वह बढ़ता ही चला जाता है।

मुहब्बत एक (हब जैसा) जज़्बा है। जब यह किसी इनसान के दिल में बैठ जाता है, तो अच्छे हालात, बुरे हालात, खुशी, ग़म, फ़ायदा, नुक़्सान; किसी भी बात का उसपर असर नहीं होता; वह सिर्फ़ बढ़ता ही रहता है।

एक इनसान दूसरे इनसान से चार वजहों से मुहब्बत करता है—ख़ूबसूरती (Beauty) की वजह से, एहसान (Obligation) की वजह से, कमाल (Perfection) की वजह से और हमआहंगी (Harmony) यानी एक जैसी सोच व अमल की वजह से।

"डर" भी एक जज़्बा (Emotion) है। डर अपनी कमज़ोरी या दूसरे की ताक़त या नुक़्सान पहुँच सकने की उम्मीद की वजह से पैदा होता है।

इनसान में सिर्फ़ मुहब्बत का जज़्बा होता या सिर्फ़ डर का, तो यह इनसान को असन्तुलित (Unbalanced) बना देता। उसे नुक़्सान पहुँचाता।

मुहब्बत इनसान को अन्धा व बहरा बना देती है, उसे सही या ग़लत कुछ भी सुझाई नहीं देता। जबकि डर इनसान को मायूस बना देता है। लेकिन किसी चीज़ से इनसान को मुहब्बत है और डर भी है, तो उस चीज़ की तरफ़ इनसान का रवैया सन्तुलित (Balanced) हो जाता है। सिर्फ़ मुहब्बत और डर दोनों मिलकर इनसान को सही रख सकते हैं।

हक़ीक़त में वह मुहब्बत, मुहब्बत ही नहीं होती, जिसमें डर न हो। महबूब का कहना इसी लिए माना जाता है, क्योंकि उसके रूठ कर चले जाने का डर होता है। वह मुहब्बत, जिसमें महबूब की ख़ुशी या नाराज़गी, मिलने या बिछड़ने, से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, दरअस्ल मुहब्बत ही नहीं होती।

इनसान जो काम भी करता है, वह एक दबाव (Pressure) की वजह से करता है। यह दबाव कभी इनसान के अन्दर से आता है और कभी बाहर से। यह दबाव दो चीज़ों से पैदा होता है, डर (Fear) से और मुहब्बत (Love) से। इनसान कई तरह के होते हैं; कुछ इनसान डर की वजह से सही रास्ते पर चलते हैं और कुछ मुहब्बत की वजह से।

इनसान का ख़ुदा से जो रिश्ता है, उसमें मुहब्बत और डर दोनों बातों का होना ज़रूरी है। इनसान अगर ख़ुदा से डरेगा तो मायूस हो सकता है। और अगर ख़ुदा से मुहब्बत करेगा, तो गुस्ताख़ होकर बार-बार गुनाह कर सकता है। इनसान को सही रास्ते पर रखने के लिए ज़रूरी है कि उसमें ख़ुदा से मुहब्बत भी हो और डर भी हो।

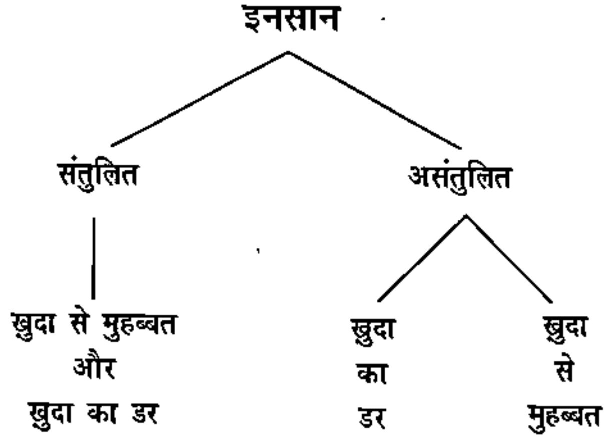

अच्छी बात, अच्छा तरीक़ा
(Good Stuff with Good Style)

"अपने रब के मार्ग की ओर तत्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करो जो उत्तम हो।" (क़ुरआन, 16: 125)

कभी बात अच्छी होती है, मगर बुरे तरीक़े से कही जाती है। कभी बात बुरी होती है, मगर अच्छे तरीक़े से कही जाती है। कभी बात भी बुरी होती है और बुरे तरीक़े से भी कही जाती है। और कभी बात भी अच्छी होती है और अच्छे तरीक़े से भी कही जाती है।

पेश करने का तरीक़ा भी, उतना ही अहम होता है, जितना किसी बात का अहम होना। एक अच्छी बात को बुरे तरीक़े से जब कहा जाता है, तो नतीजा, कम अच्छा या ख़राब निकल सकता है। जबकि एक बुरी बात को भी, अगर अच्छे तरीक़े से कहा जाए, तो नतीजा अच्छा निकाला जा सकता है।

आमतौर पर समझा जाता है कि बात अगर अच्छी है, तो किसी भी तरीक़े से कहो, कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। मगर ऐसा नहीं है। अच्छी बात को पेश करने का तरीक़ा भी अच्छा होना ज़रूरी है, वरना पूरी कामयाबी नहीं मिलती या मिली हुई कामयाबी नाकामी में बदल जाती है।

जो इनसान दूसरों का, सच्चा ख़ैरख़ाह होता है, वही दूसरों को ख़ुदा के रास्ते की तरफ़ बुलाता है, ताकि वे भी दुनिया व आख़िरत में कामयाब हो सकें। इस अच्छे काम को भी अगर कोई, अच्छे तरीक़े से न पेश करे, तो लोग ख़ुदा से क़रीब होने के बजाए और ज़्यादा दूर हो जाते हैं।

ख़ुदा की बात को अच्छे तरीक़े से कहने में लालच न देना, ज़बरदस्ती न करना, कोई बदला न चाहना, लोगों को सोचने, समझने, चुनने और अमल की आज़ादी देना, सभी बातें शामिल हैं।

ख़ुदा का तरीक़ा
(God's Method)

"उस (ख़ुदा) का मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज़ (के पैदा करने) का इरादा करता है तो उससे कहता है, हो जा! और वह हो जाती है।" (क़ुरआन, 36:82)

"हम (ख़ुदा) ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में पैदा कर दिया।" (क़ुरआन, 50:38)

पहली आयत में ख़ुदा की ताक़त (Power) को बताया गया है। ख़ुदा किसी भी काम को कभी भी, कैसे भी कर सकता है। उसके लिए सिर्फ़ इतना कहना काफ़ी होता है : "हो जा" और वह हो जाता है।

दूसरी आयत में ख़ुदा के तरीक़े (Method) को बताया गया है। ख़ुदा के काम सिलसिलेवार (Gradually) अपने अंजाम को पहुँचते हैं। सिलसिलेवार काम करने का तरीक़ा, ख़ुदा का तरीक़ा है। यह कामयाबी का तरीक़ा है। जल्दबाज़ी व घबराहट से काम करने का तरीक़ा, शैतानी तरीक़ा है, इसलिए नाकामी का तरीक़ा है।

सही काम वह होता है, जो प्रोग्राम बनाकर सिलसिलेवार किया जाता है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इसी बात को इन अल्फ़ाज़ में कहा—

"अल्लाह की नज़र में सबसे अच्छा काम वह है, जो लगातार किया जाए, चाहे वह (मात्रा में) कम ही क्यों न हो।" (हदीस : बुख़ारी व मुस्लिम)

जब कोई काम शुरू किया जाता है, तो उसे करने में तकलीफ़ और न करने में आराम मिलता है। लेकिन जब उस काम को लगातार किया जाता है, तो कुछ वक़्त के बाद उस काम के करने में आराम मिलता है, मज़ा आता है और न करने में तकलीफ़ होती है। सिलसिलेवार काम करना, उस काम को आदत (Habit) बना देता है, जिसके करने में कभी कोई तकलीफ़ नहीं होती। मज़ा आता है।

शिर्क

(Polytheism)

"निस्सन्देह अल्लाह इस चीज़ को क्षमा नहीं करेगा कि उसके साथ किसी को शामिल किया जाए। हाँ, इससे नीचे दर्जे के अपराध को, जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा। जो अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराता है, तो वह भटककर बहुत दूर जा पड़ा।" (क़ुरआन, 4:116)

शिर्क का मतलब है, ख़ुदा की ख़ुदाई में किसी (नज़र आने व नज़र न आनेवाली चीज़, जानदार, ग़ैर-जानदार, इनसान वग़ैरा) को साझी समझना। शिर्क दो तरह का होता है : महसूस (Visible) और ग़ैर-महसूस (Invisible)। महसूस शिर्क की चार क़िस्में की जा सकती हैं—

(1) शिर्क फ़िज़्ज़ात (ख़ुदा की ज़ात में किसी को शरीक करना : जैसे एक से ज़्यादा ख़ुदाओं को मानना।)

(2) शिर्क फ़िस्सिफ़ात (ख़ुदा की ख़ूबियों में किसी को साझी मानना : जैसे किसी के बारे में यह मानना कि उसे होनेवाली बातों का पता है, या मरने के बाद भी वह मदद को आता है।)

(3) शिर्क फ़िल इख़्तियारात (ख़ुदा के अलावा भी किसी इनसान या जानदार या चीज़ में फ़ायदा या नुक़्सान पहुँचा सकने की ताक़त को मानना या किसी के बारे में यह समझना कि वह चीज़ों को हलाल या हराम बना सकता है।)

(4) शिर्क फ़िल हुक़ूक़ (ख़ुदा के अलावा किसी को सजदा करना, उसके नाम पर क़ुरबानी करना, उसे मदद के लिए पुकारना वग़ैरा।)

ग़ैर-महसूस शिर्क यह है कि इनसान अपनी ख़ाहिशों (Desires) की उसी तरह फ़िक्र करे और उन्हें पूरा करने के लिए, उसी तरह कोशिश करे जैसे ख़ुदा के हुक्मों को पूरा किया जाता है। और उसकी सारी जिद्दोजुहद का

मर्कज़ उसकी ख़ाहिशें ही हों, जिन्हें पूरा करने में, वह न हलाल का ख़याल रखे, न हराम का। जब ख़ाहिशें जाइज़ हदों से निकल जाती हैं, तो उनके साथ इनसान का रिश्ता खुदा के साथ शिर्क करने जैसा बन जाता है।

इनसान और ख़ाहिश का रिश्ता, दो में से एक ही हो सकता है : इनसान ख़ाहिश को क़ाबू में रखे या ख़ाहिश, इनसान को क़ाबू में रखे। और यही दूसरी हालत शिर्क होती है। जब इनसान खुद अपनी ख़ाहिश का गुलाम बन जाता है। इसी बात की तरफ़ खुदा यह कहकर तवज्जोह दिलाता है—

"क्या तुमने उसको भी देखा, जिसने अपना खुदा अपनी (तुच्छ) इच्छा को बना रखा है?" (क़ुरआन, 25:43)

सभी अच्छाइयों की जड़ तौहीद (एकेश्वरवाद) और सभी बुराइयों की जड़ शिर्क (अनेकेश्वरवाद) है। शिर्क की मौजूदगी में तौहीद पूरा फ़ायदा नहीं दे सकती। ख़ालिस तौहीद को मानने के लिए दिमाग़ को शिर्क से बिलकुल करना ज़रूरी है। इस बात को इस मिसाल से समझ सकते हैं—

हमारे पास ज़मीन का एक टुकड़ा है जो झाड़ियों, कंकरों व पत्थरों से भरा है। हम उसपर गेहूँ उगाना चाहते हैं। हम ज़मीन पर उसी हालत में बेहतरीन बीज डालते हैं मगर फ़सल नहीं होती। फ़सल उगाने के लिए हम पहले ज़मीन को साफ़ करते हैं, मिट्टी तैयार करते हैं और फिर बीज डालते हैं। तब बीज अपना असर दिखाते हैं और अच्छी फ़सल होती है।

इनसानी दिमाग़ भी इसी तरह है। अगर दिमाग़ शिर्क से भरा है, तब तौहीद का जड़ पकड़ना और असर दिखाना नामुमकिन होता है। तौहीद की इसी अहमियत की वजह से इस्लाम में दाख़िल होने का कलमा है—

ला इला-ह, इल्लल्लाह

(नहीं है कोई खुदा, सिवाए अल्लाह के)

पहले सारे झूठे खुदाओं का इनकार, फिर एक सच्चे खुदा का इक़रार। शिर्क के नुक़्सान से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने भी यह कहकर होशियार किया—

"ऐ लोगो! इस शिर्क से बचो, यह चींटी की चाल से भी ज़्यादा छुपी हुई चीज़ है।" (हदीस : अहमद)

माँ-बाप

(Parents)

"तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उनमें से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उन्हें 'उँह' तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे शिष्टापूर्वक बात करो। और उनके आगे दयालुता से नम्रता की भुजाएँ बिछाए रखो और कहो : मेरे रब! जिस प्रकार उन्होंने बाल काल में मुझे पाला है, तू भी उनपर दया कर।"

(क़ुरआन, 17:23-24)

क़ुरआन में ख़ुदा के साथ माँ-बाप का ज़िक्र होना। सभी तरह के गुनाहों का माफ़ हो सकना, सिवाय (शिर्क और) माँ-बाप की नाफ़रमानी के। माँ-बाप के नाफ़रमान को, दुनिया व आख़िरत में सज़ा का यक़ीनी तौर पर मिलना। माँ-बाप की दुआओं का, औलाद के बारे में क़बूल होना। माँ-बाप के साथ अच्छे बर्ताव को जन्नत व बुरे बर्ताव को जहन्नम में ले जानेवाला होना। ये सारी बातें ख़ुदा की नज़र में माँ-बाप की ग़ैर-मामूली अहमियत को बताती हैं।

दुनिया में सबसे ज़्यादा जिस चीज़ से इनसान को तकलीफ़ पहुँचती है, वह औलाद है : माँ-बाप सोना चाहते हैं, लेकिन बच्चे खेलना चाहते हैं। माँ-बाप खाना खाना चाहते हैं, मगर बच्चे टॉयलेट जाना चाहते हैं। माँ-बाप को अपने बच्चों के चोट लगने की फ़िक्र। कुछ बड़े हुए तो उनकी पढ़ाई की फ़िक्र। जवान हुए तो उनकी शादी की फ़िक्र। शादी हो गई तो उनकी औलाद होने की फ़िक्र—ज़िन्दगी भर बच्चों की सेहत, हिफ़ाज़त, तरक़्क़ी और ख़ुशियों की फ़िक्र (Worries) में, माँ-बाप की ज़िन्दगी का बड़ा हिस्सा गुज़र जाता है। इन सभी तकलीफ़ों के बावजूद, इनसान अपनी औलाद को ख़ुद से भी ज़्यादा मुहब्बत करता है। ख़ुद को तकलीफ़ देकर औलाद को सुख देने

पर भी, ख़ुशी महसूस करता है। ख़ुद भूखा रहकर औलाद को खिलाना पसन्द करता है। ऐसा क्यों होता है?

ख़ुदा ने माँ-बाप की बनावट (Nature) में, औलाद की मुहब्बत को रख दिया है। वे चाहें न चाहें, उन्हें अपनी औलाद से मुहब्बत होगी ही। और यह मुहब्बत इतनी ज़्यादा है कि इसकी वजह से, वे तकलीफ़ भी उठाएँगे। इससे इस बात का भी एहसास होता है कि माँ-बाप के दिल में औलाद की मुहब्बत डालनेवाला—ख़ुदा—अपने बन्दों से ख़ुद कितनी ज़्यादा मुहब्बत करता होगा।

माँ-बाप की मुहब्बत, औलाद के लिए और औलाद की मुहब्बत, माँ-बाप के लिए, इन दोनों में पहली मुहब्बत दूसरी के मुक़ाबले ज़्यादा होती है। माँ-बाप के लिए कोई पसन्द (Choice) नहीं होती : चाहें तो अपनी औलाद से मुहब्बत करें, चाहें तो न करें, लेकिन औलाद के पास होती है।

बचपन में औलाद की वजह से, माँ-बाप का तकलीफ़ उठाना और बुढ़ापे में माँ-बाप की वजह से, औलाद का तकलीफ़ उठाना, भी यक़ीनी बात है।

औलाद को जब, अपने बूढ़े माँ-बाप से तकलीफ़ पहुँचे, तब उन्हें अपने बचपन को याद करना चाहिए। ऐसा करने से औलाद की नाराज़गी, फ़ौरन दूर हो जाएगी।

औलाद

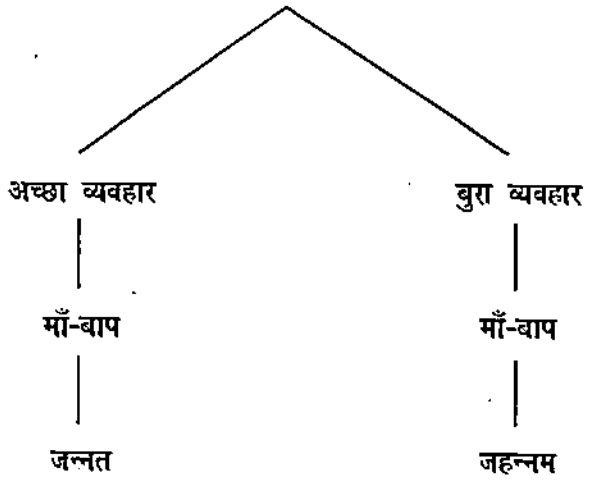

क़र्ज़

(Loan)

"अपना हाथ न तो अपनी गरदन से बाँधे रखो और न उसे बिल्कुल खुला छोड़ दो कि निन्दित और असहाय होकर बैठ जाओ।" (क़ुरआन, 17:29)

"और हद से आगे न बढ़ो, क्योंकि वह (अल्लाह) हद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 6:141)

किसी इनसान के पास कम दौलत है, तो किसी के पास ज़्यादा। दौलत के मामले में हर इनसान की अपनी एक अलग हैसियत होती है। अमीर हो, चाहे ग़रीब, जब अपनी हैसियत से ज़्यादा ख़र्च करता है, तो मुसीबत में फंस जाता है, फिर उसे क़र्ज़ लेना पड़ता है।

क़र्ज़ कभी ज़रूरी काम के लिए लेते हैं, तो कभी ग़ैर-ज़रूरी काम के लिए। जैसे—अच्छे-से अच्छा खाना खाने के लिए क़र्ज़ लेना या गाड़ी होने के बावजूद, नए मॉडल की गाड़ी ख़रीदने के लिए क़र्ज़ लेना।

हमारे ज़माने में ख़ाहिश (Desire) को ज़रूरत (Necessity) बनाकर पेश किया जा रहा है। क़र्ज़ लेने को बहुत लुभावन व आसान बनाकर पेश किया जाता है। लेकिन क़र्ज़ वापस न कर सकने की हालत में घरों की बर्बादी, बीमारी, नशा, खुदकुशी, चोरी, क़त्ल वग़ैरा को उजागर नहीं किया जाता। क़र्ज़ के इसी बुरे असर की वजह से पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अक्सर यह दुआ माँगा करते—

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ : गुनाह और क़र्ज़ से।"

किसी ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल; क्या बात है, आप अक्सर क़र्ज़ से पनाह माँगते हैं? आप (सल्ल॰) ने जवाब दिया : आदमी जब क़र्ज़दार होता

है, तो उसका यह हाल हो जाता है कि जब बात करता है, तो झूठ बोलता है और वादा करता है, तो उसको पूरा नहीं करता। (हदीस : बुख़ारी)

सख़्त ज़रूरत के लिए क़र्ज़ लिया जा सकता है, यह मजबूरी होती है। लेकिन ख़ाहिशें पूरी करने व दिखावा करने के लिए क़र्ज़ लेना, आदमी को मुसीबत में फंसा देता है। आज क़र्ज़ लेते वक़्त इनसान समझता है कि कल वह आसानी से क़र्ज़ चुकाने की हालत में होगा। मगर मुमकिन है कि कल ऐसे हालात हों कि वह क़र्ज़ अदा न कर सके।

इस ज़िन्दगी में इनसान ग़ैर-महफ़ूज़ हालात से घिरा है। हर इनसान एक ज्वालामुखी (Volcano) पर बैठा है, सर पर तलवार लटक रही है (दुख, नाकामी, बीमारी, हादसे और मौत की)। अक़लमन्दी यही है कि बिना ज़रूरत क़र्ज़ न लिया जाए।

"मेरे ख़ुदा! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ क़र्ज़ के बोझ और (उसके न दे सकने की हालत में) लोगों के अज़ाब से।" (हदीस : अबू-दाऊद)

कोई तवक़्क़ो नहीं
(No Expectation)

"और तुम स्वयं अपने लिए जो भलाई भी पेश करोगे, उसे अल्लाह के यहाँ मौजूद पाओगे।" (क़ुरआन, 2:110)

अपने कामों का बदला चाहना, इनसानी बनावट में शामिल है, जो बदला नहीं जा सकता। यह बदला जब इनसानों से चाहा जाता है, तो तकलीफ़ होती है, लेकिन जब ख़ुदा से यह बदला चाहा जाता है, तो सुकून मिलता है।

एक इनसान, दूसरे इनसान के साथ कोई अच्छाई करता है, तो उससे बदले की उम्मीद भी रखता है। अक्सर उसे अच्छा बदला नहीं मिलता। तब इनसान मायूस हो जाता है। बार-बार भलाई करने से रुक जाता और कहता है–

"नेकी कर कुएँ में डाल"

"नेकी कर जूते खा – मैंने भी खाए, तू भी खा"

एक साहब का अपनी मंहगी कार में बैठकर आना, आवारा कुत्तों को खाना खिलाना और यह कहते जाना : रिश्तेदारों से कुत्ते अच्छे, रिश्तेदारों से कुत्ते अच्छे।

एक इनसान, जब दूसरे इनसान के साथ अच्छाई करे, तो बदला मिलने की उम्मीद सिर्फ़ ख़ुदा से रखे, न कि उस इनसान से। अगर वह उस अच्छाई का बदला दे देता है, तो दोनों के आपसी ताल्लुक़ात और मज़बूत हो जाते हैं। अगर वह नहीं देता, तो ताल्लुक़ात ख़राब भी नहीं होते। इस तरह पहला इनसान बार-बार अच्छाई करने से भी नहीं रुकता।

ख़ुदा से बदला मिलना यक़ीनी है। इनसान से बदला मिलना ग़ैर-यक़ीनी

होता है। अगर इनसान बदला भी दे, तो अपनी हैसियत के अनुसार कम, या उतना ही बदला देता है। ख़ुदा अच्छे काम करने या बुरे काम न करने का हमेशा बदला देता है और अपनी हैसियत के मुताबिक़, हमेशा ज़्यादा ही देता है।

ख़ुदा से बदला मिलने की पक्की उम्मीद, इनसान को इनसान से बदला मिलने या न मिलने, दोनों सूरतों में बार-बार अच्छाई करते रहने के लिए, हमेशा तैयार रखती है। जबकि इनसान का इनसान से बदला मिलने की उम्मीद रखना, बदला न मिलने की सूरत में, बार-बार अच्छाई करने से रोक देता है।

बुराई को अच्छाई से दूर करना
(Repeal evil with good)

"भलाई और बुराई समान नहीं हैं। तुम (बुरे आचरण की बुराई को) अच्छे से अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच वैर पड़ा हुआ था, जैसे वह कोई घनिष्ट मित्र है। किन्तु यह चीज़ केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जो धैर्य से काम लेते हैं, और यह चीज़ केवल उसको प्राप्त होती है जो बड़ा भाग्यशाली होता है।"

(क़ुरआन, 41: 34-35)

किसी ने आपके साथ अच्छाई की, आप उसके साथ उससे बड़ी अच्छाई करें या उस जैसी अच्छाई करें, या उससे कम अच्छाई करें। किसी ने आपके साथ बुराई की, आप उसके साथ उससे बड़ी बुराई करें, या उस जैसी बुराई करें, या उससे कम बुराई करें। किसी ने आपके साथ अच्छाई की मगर आप उसके साथ बुराई करें। और किसी ने आपके साथ बुराई की मगर आप उसके साथ अच्छाई करें। इन सब बातों में सबसे मुश्किल काम यह आख़िरी बात है। बहुत ही कम लोग ऐसा कर पाते हैं। यही लोग ख़ुदा को सबसे ज़्यादा पसन्द हैं।

तेरह सालों तक, तकलीफ़ उठाने के बाद, मक्का फ़त्ह करने के लिए, जब पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) दस हज़ार फ़ौज के साथ मक्का पहुँच रहे होते हैं, पीछे से कोई नारा लगाता है "आज बदले का दिन है।" पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) फ़ौरन कहते हैं—"नहीं! आज माफ़ी का दिन है।"

जब आपके बड़े-बड़े दुश्मन आपके सामने लाए जाते हैं तो आप (सल्ल॰) कहते हैं : "आज के दिन तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, जाओ तुम

सब आज़ाद हो।"

जंगे-उहद के मौक़े पर लोगों ने पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) से दुश्मनों के लिए बद्दुआ करने को कहा। आप (सल्ल॰) ने जवाब दिया—"मैं दुनिया के लिए लानत नहीं, रहमत बनाकर भेजा गया हूँ।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि तुम "इम्मआ" (दूसरों की नक़ल करनेवाला आदमी, जिसकी अपनी कोई राय न हो) न बनो कि कहने लगो : "लोग (हमारे साथ) नेकी व भलाई करेंगे, तो हम भी (उनके साथ) नेकी व भलाई करेंगे और अगर वे ज़ुल्म करेंगे, तो हम भी ज़ुल्म करेंगे। बल्कि अपने दिलों को जमा दो, इस बात पर कि अगर लोग नेकी करें, तो तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि नेकी करो। और अगर वे बुराई करें, तो तुम ज़ुल्म न करो।" (हदीस : तिरमिज़ी)

ख़ुदा को भूलना : ख़ुद को भूलना

(Indifference to God is Indifference to your ownself)

"ऐसे व्यक्ति की बात न मानना, जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल पाया है और वह अपनी इच्छा और वासना के पीछे लगा हुआ है और उसका मामला हद से आगे बढ़ गया है।" (क़ुरआन, 18:28)

ज़िन्दगी गुज़ारने के दो तरीक़े हैं : ख़ुदा को भूलकर या ख़ुदा को याद रखकर। एक आदमी वह है जो ख़ुदा पर ईमान लाता है और उसका कहना भी मानता है। एक आदमी वह है जो ख़ुदा पर ईमान तो लाता है, मगर उसका कहना नहीं मानता। एक आदमी वह है जो ख़ुदा पर ईमान तो लाता है और ज़्यादा बातों में उसका कहना भी मानता है, मगर कुछ बातों में कहना नहीं मानता। एक आदमी वह है जो ख़ुदा पर ईमान तो लाता है, कुछ बातों में उसका कहना भी मानता है, मगर ज़्यादा बातों में कहना नहीं मानता। इसी तरह एक आदमी वह है, जो न तो ख़ुदा पर ईमान लाता है और न ही उसका कहना मानता है। इन सब लोगों में, सिर्फ़ उस आदमी को छोड़कर, जो ख़ुदा पर ईमान भी लाता है और उसका पूरा कहना भी मानता है; सबके सब वे हैं जो ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल हैं।

वह आदमी जो ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल, यानी उसे भूलकर ज़िन्दगी गुज़ारता है और वह आदमी जो उसे नहीं भूलता; दोनों के सोचने, समझने और करने के तरीक़े में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ होता है। ख़ुदा को (उसके बताए गए तरीक़े के मुताबिक़) याद रखनेवाले इनसान का, हर काम सही दिशा में होता है और सन्तुलित होता है। जबकि ख़ुदा को याद न रखनेवाले के काम ग़लत दिशा में और असन्तुलित होते हैं।

ख़ुदा को याद रखनेवाला इनसान ज़िम्मेदारी का एहसास रखता है।

ज़िन्दगी और वक़्त की अहमियत समझता है। हर काम में ख़ुद को ख़ुदा के सामने जवाबदेह पाता है। कहीं पर भी और कभी भी नाइनसाफ़ी नहीं करता। वह ख़ुदा का हक़ देता है (जो पूरा हो ही नहीं सकता, जब तक इनसान का हक़ न दिया जाए)। यह मानना कि ख़ुदा है, देख रहा है और मरने के बाद उसके सामने पेश होना है, इनसान को हर लम्हे होशियार बनाता है।

ख़ुदा को याद न रखनेवाला इनसान ज़िम्मेदारी का कोई एहसास नहीं रखता, ज़िन्दगी की कोई अहमियत नहीं समझता, अपने कामों में ख़ुद को; किसी के सामने जवाबदेह नहीं पाता, जब चाहता है, इनसाफ़ करता है और जब चाहता है, नाइनसाफ़ी करता है। जो इनसान ख़ुदा का हक़ नहीं दे सकता, वह इनसानों का क्या हक़ देगा। ऐसा इनसान जब इनसाफ़ करता है, तो उसके पीछे उसका अपना मतलब होता है, न कि कोई ठोस सच्चाई। यह न मानना कि ख़ुदा है, देख रहा है और मरने के बाद उसके सामने पेश होना है, इनसान को ग़ाफ़िल बनाता है और उसकी ज़िन्दगी का मक़्सद सिर्फ़ ख़ुद को ख़ुश रखना बन जाता है।

ख़ुदा को भूलनेवाले की ज़िन्दगी ख़ुद केन्द्रित (I-Centred) और ख़ुदा को याद रखनेवाले की ज़िन्दगी ख़ुदा केन्द्रित (God-Centred) हो जाती है। पहले तरह के इनसान की ज़िन्दगी में सारी अच्छाईयाँ वक़्ती (Temporary) होती हैं, जब तक उसे फ़ायदा होता है, वह अच्छा बर्ताव करता है और जब नुक़सान होता है, तो वह बुरा बर्ताव करने लगता है। इसके मुक़ाबले दूसरी तरह के इनसान की ज़िन्दगी में सारी अच्छाईयाँ स्थायी (Permanent) होती हैं। चाहे उनमें उसका फ़ायदा हो या नुक़सान, वह अच्छा ही बना रहता है। ऐसे आदमी का अस्ल फ़ायदा ख़ुदा की रज़ा (God's Pleasure) में होता है, न कि ख़ुद की रज़ा (Self Pleasure) में।

ख़ुदा को भूलनेवाला इनसान, ख़ुद भी ग़लत रास्ते पर, ग़लत काम करते हुए, ज़िन्दगी गुज़ारता है। और जब किसी को मश्विरा देता है तो ग़लत काम का ही देता है। ऐसे आदमी की बात मानना, ख़ुद को ग़लत रास्ते पर डालने और सही रास्ते से भटकने जैसा है।

किताब-रसूल-ज़मीर
(Book-Prophet-Conscience)

"निश्चय ही हमने अपने रसूलों को स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और तुला उतारी।"

(क़ुरआन, 57:25)

दुनिया को इनसान के इम्तिहान के लिए बनाया गया है। इनसान को अच्छाई या बुराई, में से, किसी एक को चुनने और उसपर चलने की आज़ादी दी गई है। इनसान को अच्छाई और बुराई में फ़र्क़ करने और सही रास्ते पर चलने के लिए, ख़ुदा ने ये तीन चीज़ें दी हैं—

1. क़ुरआन (Ideology)
2. पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (Model)
3. तराज़ू (Living Judge/Conscience)

इनसानों की हिदायत (Guidance) के लिए ख़ुदा ने आसमानी किताबों और पैग़म्बरों को भेजा। आख़िरी आसमानी किताब "क़ुरआन" और आख़िरी पैग़म्बर (Messenger) "हज़रत मुहम्मद" हैं। क़ुरआन ज़िन्दगी गुज़ारने का, एक मुकम्मल तरीक़ा बताता है और पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की ज़िन्दगी उसका अमली नमूना है। हर इनसान के अन्दर एक ज़िन्दा जज—ज़मीर—बैठा है। इसी लिए, एक बहुत ही पिछड़े हुए गाँव में, एक बूढ़ी व जाहिल औरत जब दूध में पानी मिलाती है, तब वह जानती है कि वह ग़लत काम कर रही है।

"ज़मीर" एक ज़िन्दा जज है, लेकिन उससे भी ग़लती होती है। कुछ चीज़ों को, एक ज़माने के लोगों का ज़मीर अच्छा समझता है; तो उसी जगह दूसरे ज़माने के लोगों का ज़मीर, उसे बुरा समझता है। क़दीम यूनान में

गुलाम मर्दों, औरतों और बच्चों के ख़रीदने व बेचने को अच्छा समझा जाता था। मगर आज के यूनान में, इसे बुरा समझा जाता है। हक़ीक़त में ज़मीर हालात से मुतास्सिर होता है। सिर्फ़ वही ज़मीर पूरी और सही रहनुमाई दे सकता है, जिसके साथ ख़ुदा की किताब की तालीम और ख़ुदा के रसूल का अमल हो।

इन तीनों चीज़ों पर चलने के बावजूद भी अगर इनसान से गुनाह हो जाए, तो ख़ुदा ने एक चौथी चीज़—तौबा—दी है। तौबा करने से इनसान की हर ग़लती माफ़ हो जाती है। मगर याद रहे कि ख़ुदा, सिर्फ़ उसी इनसान की तौबा क़बूल करता है, जो अंजाने में गुनाह कर बैठे, न कि बार-बार जान-बूझकर गुनाह करता रहे—

"जो (व्यक्ति) तौबा कर ले और ईमान लाए और अच्छा कर्म करे, फिर सीधे मार्ग पर चलता रहे, उसके लिए निश्चय ही मैं (अल्लाह) अत्यन्त क्षमाशील हूँ।" (क़ुरआन, 20:82)

दावत
(Feast)

"ऐ ईमान लानेवालो! नबी (और दूसरे इनसानों) के घरों में प्रवेश न करो, सिवाय इसके कि कभी तुम्हें खाने पर आने की अनुमति दी जाए। वह भी इस तरह की उस (खाना पकने) की तैयारी की प्रतीक्षा में न रहो। अलबत्ता जब तुम्हें बुलाया जाए तो अन्दर जाओ, और जब तुम खा चुको तो उठकर चले जाओ, बातों में लगे न रहो।" (क़ुरआन, 33:53)

इनसानी रिश्तों को मज़बूत करने, या कमज़ोर करने में, खाना एक अहम रोल अदा करता है। खाने की दावत एक ऐसा मौक़ा मुहैया कराती है, जिसमें ज़्यादा व अंजान लोगों से मिलना होता है। उनसे तालीमी सलाह, क़ानूनी सलाह, तिजारती सलाह, सियासी सलाह, समाजी सलाह, मिल सकती है।

एक साथ मिलकर खाना-खाना, इनसानों को क़रीब लाता और दिलों में एक दूसरे की तरफ़ से बैठी नफ़रत को कम करता है। लेकिन ऐसी दावत जो हैसियत से ज़्यादा हो, खिलानेवाले के लिए, बोझ बन जाती है और दूसरों को भी ऐसा करने पर उभारती है। पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने ख़ासतौर पर मुक़ाबला करनेवालों की दावत में शरीक होने से मना किया है।

जब हम किसी का खाना खाते हैं, तो उसके एहसानमन्द (Obliged) हो जाते हैं। दावत खाकर ज़्यादा देर बैठने से, अक्सर हम दावत खानेवाले की हाँ में हाँ मिलाते हैं, उसकी चापलूसी करते हैं और उसको ख़ुश करने के लिए उसके दुश्मनों की बुराई करते हैं। दावत खाकर ज़्यादा देर बैठने से अक्सर मक्खन पॉलिश (Buttering) होती है या ग़ीबत और परोक्ष निन्दा (Backbiting)।

इबरत से मोटिवेशन
(Motivation through Ibrat)

"और हमने इसराईलियों को समुद्र पार करा दिया। फिर फ़िरऔन और उसकी सेनाओं ने सरकशी और ज़्यादती के साथ उनका पीछा किया, यहाँ तक कि जब वह (फ़िरऔन) डूबने लगा तो पुकार उठा : मैं ईमान ले आया कि उसके सिवा कोई पूज्य प्रभु नहीं, जिस पर इसराईल की सन्तान ईमान लाई। अब मैं आज्ञाकारी हूँ।

क्या अब? हालाँकि इससे पहले तूने अवज्ञा की और बिगाड़ पैदा करनेवालों में से था। अतः आज हम तेरे शरीर को बचा लेंगे, ताकि तू अपने बादवालों के लिए एक निशानी (इबरत) हो जाए।" (क़ुरआन, 10 : 90-92)

किसी काम को करने के लिए इनसान को उभारना उसे मोटिवेट (Motivate) या प्रेरित करना कहलाता है। काम को करने के लिए मोटिवेशन की ज़रूरत होती है। और लगातार काम करने के लिए, लगातार मोटिवेशन की। हम में से ज़्यादातर लोग एक अच्छी बात सुनकर, एक अच्छी चीज़ देखकर, मोटिवेट हो जाते हैं और कुछ अच्छा काम करने का इरादा करते हैं। लेकिन वक़्त गुज़रने के साथ-साथ, हमारा इरादा कमज़ोर हो जाता है या ख़त्म हो जाता है।

मोटिवेट होना या करना मुश्किल नहीं है। मोटिवेशन को लगातार बाक़ी रखना मुश्किल है। क्या कोई ऐसा तरीक़ा है कि इनसान लगातार मोटिवेट रह सके, ताकि लगातार काम कर सके?

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के इन्तिक़ाल के बाद, उनके एक सहाबी से उनके बारे में, पूछा गया तो उन्होंने कहा—

"आसमान में एक परिंदा भी पर नहीं मारता था कि पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) उससे हमें, अल्लाह की एक निशानी याद दिलाते थे।"

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इस बात पर बहुत ज़ोर दिया कि क़ुरआन में बताई गई बातों से इबरत यानी सबक़ लो (Taking Lesson)।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) यह दुआ माँगते—

"ऐ अल्लाह! मेरी ख़ामोशी सोच की ख़ामोशी हो और मेरा देखना इबरत का देखना हो।"

यानी जब मैं ख़ामोश हूँ, तो सोच-विचार कर रहा हूँ और जब किसी चीज़ को देखूँ तो उससे सबक़ लूँ। क़ुरआन भी बार-बार सोचने और चीज़ों से सीख लेने की बात करता है।

इबरत (सीख) लेना एक ऐसी बात है, जिससे लगातार मोटिवेट रहा जा सकता है—

- चौकीदार को देखकर सोचें; यह इतनी कम तनख़ाह पर इतना ज़्यादा काम करता है, तो फिर इतनी मोटी तनख़ाह पर मैं ज़्यादा काम क्यों न करूँ।
- बूढ़े को देखकर सोचें; यह बेबस है, मेरे पास जवानी है, फिर मैं काम क्यों न करूँ।
- बीमार को देखकर सोचें; यह कमज़ोर है, मेरे पास ताक़त है, फिर मैं काम क्यों न करूँ।
- ग़रीब को देखकर सोचें; यह मजबूर हैं, मेरे पास दौलत है, फिर मैं अच्छे काम क्यों न करूँ।
- इसी तरह रिक्शावाले, केलेवाले, वेटर, चपरासी, जाहिल वग़ैरा सभी से सबक़ (इबरत) लिया जा सकता है।

जब हम एक आदमी को देखकर इबरत लेते हैं, तो थोड़ी देर तक हम में काम करने का हौसला रहता है, फिर वह ख़त्म होने लगता है, तब एक-दूसरा आदमी हमारे सामने आ जाता है, हमें फिर एक नया हौसला मिलता है। इस तरह हम हर चीज़ से इबरत लेकर, लगातार मोटिवेट रह सकते हैं और कोई अच्छा व बड़ा काम कर सकते हैं।

मगर याद रहे, यह जो मुक़ाबला (Comparison) किया जाए, अपने से नीचे से किया जाए, न कि हैसियत में अपने बराबर या बरतर से। पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद ने फ़रमाया—

"दुनिया के मामले में अपने से नीचे देखो और
दीन (मज़हब) के मामले में अपने से ऊपर।"

बदलाव
(Change)

"किसी क़ौम के लोगों को जो कुछ प्राप्त होता है अल्लाह उसे बदलता नहीं, जब तक कि वे स्वयं अपने आपको न बदल डालें।" (क़ुरआन, 13:11)

दुनिया इम्तिहान के लिए है। हर इनसान को अच्छे या बुरे अमल की आज़ादी हासिल है। हर अमल के साथ उसका नतीजा बंधा है। अच्छा अमल—अच्छा नतीजा, बुरा अमल— बुरा नतीजा लाता है।

ख़ुदा ने तरक़्क़ी करने के औज़ार—दिमाग़, हाथ, पैर, आँख, कान, वक़्त वग़ैरा—इनसान को दे रखे हैं। इनसान की मर्ज़ी है, चाहे तो उन्हें इस्तेमाल करे, या न करे। इन चीज़ों का इस्तेमाल ही, ख़ुदा की मदद को बुलाने का सबब बनता है। जो इनसान इनका इस्तेमाल करते हैं, ख़ुदा उनकी मदद करता है और उनकी हालत भी बदलती है। वरना ख़ुदा भी मदद नहीं करता और उनकी हालत भी नहीं बदलती।

वह क़ौम, जो तरक़्क़ी करती है और वह क़ौम, जो तरक़्क़ी नहीं करती; दोनों के सोचने, समझने और करने में बहुत फ़र्क़ होता है। तरक़्क़ी करनेवाली क़ौम अपने कामों का जाएज़ा (Assessment) लेती रहती है। वह अपनी कमज़ोरियों को पहचान कर, उनमें सुधार लाती है। वह अपने मुस्तक़बिल को सँवारने की कोशिश में लगी रहती है। उसका मक़्सद बिल्कुल साफ़ होता है। वह तंगनज़र नहीं होती।

जो क़ौम तरक़्क़ी नहीं कर पाती; वह दूसरों के कामों में सिर्फ़ ख़राबियाँ देखती है। हमेशा दूसरों की बुराई करती है। अपनी नाकामी का ज़िम्मेदार दूसरों को समझती है। अपने माज़ी (Past) की तरक़्क़ी पर फ़ख़्र करती है।

अपने हाल (Present) की कमज़ोरियों को छुपाने की कोशिश करती है। दूसरों को बिन माँगे मश्विरे देती है, मगर खुद किसी से मश्विरे नहीं लेती। उसके पास कोई मक़सद नहीं होता। तरक़्क़ी न करनेवाली क़ौम में जब कभी, कोई हरकत आती भी है, तो वह अपनी ताक़त (Energy) अपने उन लोगों के ख़िलाफ़ ख़र्च करने लगती है, जो कुछ करने की कोशिश कर रहे होते हैं। उसकी ज़िन्दगी की सभी कोशिशें अपने और अपनों के लिए होती हैं। ऐसी क़ौम के लोगों के वक़्त का ज़्यादातर हिस्सा बेकार बातों में गुज़रता है। ऐसी क़ौम के लीडर समस्याओं (Problems) को सिर्फ़ चुनाव, वोट व शोहरत की नज़र से ही देखते हैं। माज़ी से सबक़ लेना, हाल का जाएज़ा लेना और मुस्तक़बिल के लिए प्रोग्राम बनाना ये जानते ही नहीं।

दुनिया की ज़िन्दगी में ख़ुदा, अपने माननेवालों, या न माननेवालों, या अधूरा माननेवालों, के बीच कोई फ़र्क़ नहीं करता। दुनिया की यह ज़िन्दगी, अमल के लिए है। इनसान का अमल किए बग़ैर, यह चाहना कि नतीजा अच्छा निकले, सिवाय बेवकूफ़ी के कुछ भी नहीं।

नतीजा या कोशिश
(Result or Effort)

''उस (बदले के) दिन कितने ही चेहरे प्रफुल्लित और सौम्य होंगे, अपने प्रयास पर प्रसन्न, उच्च जन्नत में।

(क़ुरआन, 88 : 8-10)

इनसान की नज़र में वह आदमी कामयाब है, जिसने अपने मक़सद को पा लिया, चाहे उसकी नीयत अच्छी हो या बुरी, उसकी कोशिश सही हो या ग़लत।

ख़ुदा की नज़र में वह आदमी कामयाब है, जिसने अपने मक़सद के लिए अच्छी नीयत रखी और सही कोशिश की, चाहे उसे कामयाबी मिली या न मिली।

इनसान नतीजे को सामने रखकर (Result-Bound) देखता है। ख़ुदा कोशिश को सामने रखकर (Effort-Bound) देखता है। कोशिश से पहले का जो मरहला (Stage) है, वह ''नीयत'' या ''इरादा'' है। ख़ुदा सिर्फ़ उस कोशिश को क़बूल करता है, जिसके पीछे अच्छी नीयत हो, न कि बुरी नीयत।

इनसान की इसी ग़लत सोच ने, समाज में बहुत-सी बुराइयों को पैदा किया और फैलाया। इनसानी समाज उसे इज़्ज़त देता है, जो नेता बना, डॉक्टर बना, दौलतमन्द बना; बिना यह देखे कि इसके पीछे, उस इनसान की अच्छी या बुरी कैसी नीयत थी। अपने मक़सद को पाने के लिए उसने अच्छी या बुरी, क्या कोशिश की और अपने मक़सद को पाने के बाद, उसका अच्छा या बुरा, अब क्या अमल है।

इनसानी समाज, लोगों को अहम (Significant) और ग़ैर अहम (In-

significant) ख़ानों में बाँटता है। और उसी के मुताबिक़, उनसे अच्छा या बुरा बर्ताव करता है। इनसान खुद को अहम लोगों के ग्रुप में शामिल करना चाहता है, जिसकी वजह से, इनसान अपने मक़सद को अहमियत देता है, न कि उसे पाने के सही या ग़लत रास्ते को।

हक़ीक़त यह है कि ग़लत तरीक़े से अपना मक़सद पानेवाले लोग, समाज को फ़ायदे से ज़्यादा नुक़सान पहुँचाते हैं। जैसे एक नाकारा आदमी ने, रिश्वत देकर MBBS के कोर्स में दाख़िला लिया और इम्तिहान पास किया है। यह आदमी डॉक्टर बन गया, लेकिन जब इसने इलाज किया, तो ग़लत किया, नुक़सान पहुँचाया। इसी तरह, चाहे इंजीनियर हो, टीचर हो, वकील हो, लीडर हो, जो भी होगा ख़राबी को ही बढ़ावा देगा।

दिमाग़ी माहौल
(Mental Environment)

"अल्लाह की दयालुता से निराश न हो।" (क़ुरआन, 39:53)

"मेरी दयालुता से हर चीज़ आच्छादित है।"

(क़ुरआन, 7:156)

"अतः निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी भी है। निस्सन्देह कठिनाई के साथ आसानी भी है।" (क़ुरआन, 94 : 5-6)

"उस (इबराहीम) ने कहा : अपने रब की दयालुता से पथभ्रष्टों के सिवा और कौन निराश होगा?" (क़ुरआन, 15:56)

सभी अच्छाइयों की शुरुआत 'सोच' से होती है। सभी बुराइयों की शुरुआत 'सोच' से होती है। और सभी सुधारों की शुरुआत 'सोच' से होती है। सोच दिमाग़ में रहती है। सोचों से ही दिमाग़ी माहौल (Mental Environment) बनता है। सोचें अच्छी होती हैं, तो दिमाग़ी माहौल भी अच्छा बनता है। सोचें बुरी होती हैं, तो दिमाग़ी माहौल भी बुरा बनता है।

क़ुरआन की तालीमात से बना दिमाग़ी माहौल, नाउम्मीद (Hopeless) कभी नहीं होता। कभी भी, किसी भी हालत में मायूसी का शिकार नहीं होता। हमेशा उम्मीद से (Hopeful) रहता है। नाउम्मीद होना, तो ऐसे गुमराह लोगों का काम है, जो ख़ुदा को नहीं मानते या अधूरा मानते हैं।

हर चीज़ ख़ुदा की मोहताज है और वह किसी का मोहताज नहीं। वह जब चाहे, जैसा चाहे कर सकता है। ख़ुदा को (उसके बताए गए तरीक़े से) मानने का असर, उसके माननेवालों पर यह होता है कि वे बदतर से बदतर हालात में भी मायूस नहीं होते। कोई शक नहीं कि ख़ुदा का सहारा, ऐसा सहारा है, जो किसी भी नाकामी को कामयाबी में बदल सकता है। दुख को सुख में बदल सकता है।

मुसीबत
(Misfortune)

"जो मुसीबत तुम्हें पहुँची वह तो तुम्हारे अपने हाथों की कमाई से पहुँची और बहुत कुछ तो वह (अल्लाह) माफ़ कर देता है।" (क़ुरआन, 42:30)

"जो मुसीबत भी धरती में आती है और तुम्हारे अपने ऊपर, वह अनिवार्यतः एक किताब में अंकित है, इससे पहले कि हम उसे अस्तित्व में लाएँ—निश्चय ही यह अल्लाह के लिए आसान है—(यह बात तुम्हें इसलिए बता दी गई) ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रहे और न उसपर फूल जाओ जो उसने तुम्हें प्रदान की हो। अल्लाह किसी इतरानेवाले, बड़ाई जतानेवाले को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 57:22-23)

इनसान की ज़िन्दगी महफ़ूज़ नहीं है (No-safe-life)। कोई इनसान ऐसा नहीं है, जिसपर कभी कोई मुसीबत न आई हो। इनसान पर जो मुसीबतें आती हैं, उन्हें दो क़िस्मों में बाँटा जा सकता है।

1. आमंत्रित मुसीबत (Invited Misfortune)

2. निर्धारित मुसीबत (Determined Misfortune)

एक नवजवान ने बहुत तेज़ गाड़ी चलाई; नतीजा उसकी टक्कर हो गई। एक बूढ़े ने बहुत ज़्यादा खाना-खाया, नतीजा उसका पेट ख़राब हो गया। वह मुसीबत जिसमें इनसान अपनी ग़लती की वजह से फंसा, ऐसी मुसीबत है जिसको उसने खुद दावत देकर बुलाया यानी यह 'आमंत्रित मुसीबत' है।

गाड़ी की टक्कर में, उस नवजवान की टाँग का टूटना और उसके बाप का क़र्ज़ा लेकर, उसका इलाज कराना। बूढ़े आदमी की बीमारी में, उसकी

बीवी का, रात-रात भर जाग कर उसकी देख-भाल करना। नवजवान के बाप और बूढ़े की बीवी, दोनों के लिए यह मुसीबत लिखी हुई यानी निर्धारित मुसीबत थी, जिसमें उनकी कोई ग़लती नहीं थी।

पहली क़िस्म की मुसीबत, इनसान के बुरे कामों का नतीजा होती है। दूसरे क़िस्म की मुसीबत, इम्तिहान के लिए होती है। ख़ुदा यह देखता है कि इनसान मुसीबत में सब्र करता है या शिकायत। इनसान कितना ही होशियार क्यों न हो, इस निर्धारित मुसीबत से नहीं बच सकता।

आमंत्रित मुसीबत से बचने का रास्ता "एहतियात" में है (Precaution is better than Cure)। निर्धारित मुसीबत से बचने का, कोई रास्ता नहीं। सिर्फ़ मुक़ाबले की ताक़त (Resistance) को बढ़ाकर ही, उसकी तकलीफ़ को कम किया जा सकता है और मुसीबत पर सब्र करके, सवाब (Reward) हासिल किया जा सकता है। ज़िन्दगी का उसूल है—एक बड़ी मुसीबत, छोटी मुसीबत को और छोटा कर देती है। इनसान आख़िरत की सख़्ती को, जितना ज़्यादा याद रखेगा, दुनिया की बड़ी मुसीबतें भी, उसके सामने छोटी हो जाएँगी। साथ ही साथ, इनसान को यह भी याद रखना चाहिए—

> "हम (अल्लाह) किसी पर, उसकी सामर्थ्य से बढ़कर बोझ नहीं डालते।" (क़ुरआन, 7:42)

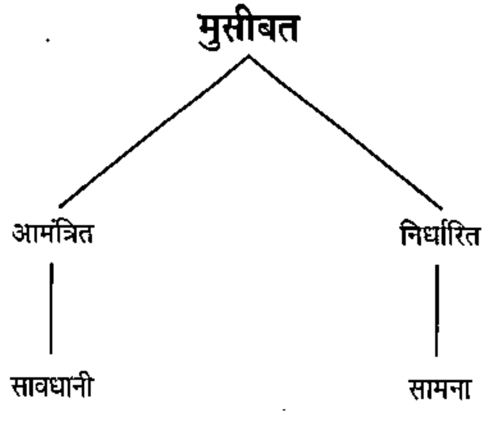

मशविरा
(Consultation)

"उन (ख़ुदा को माननेवालों) का मामला उनके पारस्परिक परामर्श से चलता है।" (क़ुरआन, 42:38)

"और (ऐ नबी) मामलों में उन (ईमानवालों) से परामर्श कर लिया करो। फिर जब तुम्हारे संकल्प किसी सम्मति पर सुदृढ़ हो जाएँ तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्सन्देह अल्लाह को वे लोग प्रिय हैं जो उसपर भरोसा करते हैं।" (क़ुरआन, 3:159)

इनसान कभी जज़्बात (Emotions) से मुतास्सिर होता है और कभी अक़्ल (Reason) से। ज़िन्दगी में कभी अक़्ल से काम लेने की ज़रूरत होती है, तो कभी जज़्बात से। ख़राबी वहाँ पैदा होती है, जहाँ अक़्ल से काम लेने की ज़रूरत हो, मगर इनसान काम ले जज़्बात से, या जहाँ जज़्बात से काम लेने की ज़रूरत हो मगर इनसान काम ले अक़्ल से।

इनसान की ज़िन्दगी में दो तरह के तजुर्बे होते हैं—ख़ुद का तजुर्बा (Self-Experience) और दूसरों का तजुर्बा (Others-Experience)। ख़ुद के तजुर्बा करने में फ़ायदा (Profit) भी हो सकता है और नुक़सान (Loss) भी। दूसरों के सही तजुर्बों को मानने में सिर्फ़ फ़ायदा (Profit) होता है।

एक आदमी की टाँग टूटी, उसने एक डॉक्टर से इलाज कराया। जिसने दस हज़ार रुपए फ़ीस ली, मगर कोई फ़ायदा न हुआ। फिर वह आदमी दूसरे डॉक्टर के पास गया, जिसने पाँच सौ रुपए फ़ीस ली और फ़ायदा हुआ। तब उस आदमी को तजुर्बा हुआ; कौन-सा डॉक्टर ज़्यादा फ़ीस लेकर, ख़राब इलाज करता है और कौन-सा डॉक्टर कम फ़ीस लेकर अच्छा। एक-दूसरे आदमी की भी टाँग टूटी और वह ख़ुद ही, कम फ़ीस लेकर अच्छा इलाज

करनेवाले डॉक्टर के पास पहुँचा और ठीक हुआ।

पहले आदमी को ख़ुद का तजुर्बा मिला, मगर नुक़सान उठाकर और दूसरे आदमी को ख़ुद का तजुर्बा मिला, मगर फ़ायदा उठाकर। ख़ुद का तजुर्बा करने में दोनों बातें हो सकती हैं—फ़ायदा या नुक़सान।

एक तीसरा आदमी है, जिसकी टाँग टूटी और उसने इलाज कराने से पहले दोनों आदमियों से मशविरा किया। फिर उस डॉक्टर के पास पहुँचा, जो कम फ़ीस लेकर, अच्छा इलाज करता है। इस तरह दूसरों के तजुर्बे को मानकर, उसे सिर्फ़ फ़ायदा हुआ न कि नुक़सान। हक़ीक़त में दूसरों के सही तजुर्बों को मानकर सिर्फ़ फ़ायदा ही होता है। इसके अलावा, यह बात भी याद रखनी चाहिए कि इनसानी ज़िन्दगी बहुत कम है, हर बात ख़ुद तजुर्बा करके नहीं सीखी जा सकती।

मश्विरा हक़ीक़त में, दूसरों के तजुर्बों से फ़ायदा उठाने का ही नाम है। हर इनसान पर उसके माहौल का असर पड़ता है। अक्सर जब फ़ैसला क़रने की घड़ी आती है, तो इनसान अक़्ल के मुक़ाबले, जज़्बात से ज़्यादा मुतास्सिर होता है और किसी बात के सभी पहलू (Aspects) उसकी निगाह के सामने नहीं रहते। तब सही फ़ैसला करने के लिए ज़रूरत होती है, दूसरे लोगों से मश्विरा की। दूसरे लोग, उन हालात से, उतने ज़्यादा मुतास्सिर नहीं होते, जितना मशविरा लेनेवाला। इसलिए, इस बात की उम्मीद ज़्यादा होती है कि ये मश्विरा देनेवाले, अपनी सोच में; जज़्बात के मुक़ाबले, अक़्ल का ज़्यादा इस्तेमाल करेंगे। इस तरह मश्विरा, छुपे हुए दूसरे पहलुओं को जानने का ज़रिया बन जाता है।

हमारे ज़माने में ज़्यादातर लोग मशविरा (Consultation) और हुक्म (Order); दोनों में फ़र्क़ नहीं समझते। आमतौर पर, जब एक आदमी दूसरे आदमी से मशविरा लेता है, मगर उसकी बात पर अमल नहीं करता, तब दूसरा आदमी नाराज़ हो जाता है, वह इसे अपनी बेइज़्ज़ती समझता है।

जानना चाहिए कि मशविरा वह होता है, जो माँगने पर दिया जाता है, न कि बिना माँगे (क्योंकि बिना माँगे दिया गया मशविरा-मशविरा नहीं

दख़लअन्दाज़ी होती है)। मशविरा लेनेवाला आज़ाद होता है, चाहे तो उसपर अमल करे और चाहे तो न करे।

ख़ुदा ने, काम के करने का, सही तरीक़ा भी बताया है। कोई काम करने से पहले उसके बारे में कई लोगों से, अच्छी तरह मश्विरा किया जाए, ख़ासतौर पर माहिरीन (Experts) से। उसपर बहुत सोचा जाए। अक़्ल के पूरे इस्तेमाल से किसी नतीजे पर पहुँचकर फ़ैसला लिया जाए। तब ख़ुदा पर पूरा भरोसा करके काम शुरू किया जाए। दोबारा न सोचा जाए, वरना इनसान दोहरी व डाँवाडोल सोचवाला (Double Minded) हो जाता और काम पूरे यक़ीन से नहीं हो पाता है। नतीजा; नाकामी होता है।

हम अपनी गाड़ी से ओवरटेक करते हैं और बीच रास्ते में पहुँचकर सोचते हैं कि आगे लें या न लें, तब हादसा हो जाता है। हक़ीक़त में कामयाबी का राज़ एक और पुख़्ता सोच (Single Mindedness) में छिपा होता है।

समाज

(Society)

"उनसे उस बस्ती के विषय में पूछो जो सागर तट पर थी। जब वे सब्त के मामले में सीमा का उल्लंघन करते थे, जब उनके सब्त के दिन उनकी मछलियाँ खुले तौर पर पानी के ऊपर आ जाती थीं और जो दिन उनके सब्त का न होता तो वे उनके पास न आती थीं। इसी प्रकार उनके अवज्ञाकारी होने के कारण हम उनको परीक्षा में डाल रहे थे।

और जब उनके एक गिरोह ने कहा : तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत किए जा रहे हो, जिन्हें अल्लाह विनष्ट करनेवाला है या जिन्हें वह कठोर यातना देनेवाला है? उन्होंने कहा : तुम्हारे रब के समक्ष अपने को निरपराध सिद्ध करने के लिए और कदाचित वे (अवज्ञा से) बचें।

फिर जब वे उसे भूल गए जो नसीहत उन्हें की गई थी तो हमने उन लोगों को बचा लिया, जो बुराई से रोकते थे और अत्याचारियों को उनकी अवज्ञा के कारण कठोर यातना में पकड़ लिया।"

(क़ुरआन, 7:163-165)

समाज में तीन तरह के लोग होते हैं—एक, वे जो बुराई करते हैं। दूसरे, वे जो अच्छाई करते हैं। तीसरे, वे जो अच्छाई करते हैं और बुरे लोगों को रोकने की कोशिश भी करते हैं। ख़ुदा को यही तीसरी क़िस्म के लोग, सबसे ज़्यादा पसन्द हैं। ख़ुदा का जब अज़ाब आता है, तो इन्हीं लोगों को बचाया जाता है।

किसी इनसान का ख़ुद नेक होना, काफ़ी नहीं है। दूसरों को अच्छाई की

तरफ़ लाना और बुराई से रोकना भी ज़रूरी है। समाज में अच्छे व बुरे, अक्लमन्द व बेवक़ूफ़, सब एक-दूसरे के साथ बंधे हैं। यह कहना काफ़ी नहीं है कि जिसका दिल चाहे अच्छे काम करे और जिसका दिल चाहे बुरे काम करे। व्यक्ति और समाज के रिश्ते को हज़रत पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने इस मिसाल से समझाया—

समाज एक दो मंज़िला पानी के जहाज़ (Ship) की तरह है, जो दरया के पानी पर चल रहा है। पीने का पानी, ऊपर की मंज़िल में है। निचली मंज़िल पर रहनेवाले लोगों को, बार-बार पानी लेने के लिए ऊपर जाना पड़ता है। इस मेहनत से तंग आकर वे सोचते हैं कि जहाज़ में सुराख़ कर लिया जाए, ताकि पानी लेने बार-बार ऊपर न जाना पड़े। पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया—

अगर ऊपर की मंज़िल में रहनेवाले, नीचे की मंज़िल के लोगों को ऐसा करने से नहीं रोकेंगे, नतीजा यह होगा कि जहाज़ पानी से भर जाएगा और ऊपर की मंज़िलवाले भी, दूसरे लोगों के साथ पानी में डूब जाएँगे।

अच्छाई करनेवाले नेक लोगों को, अपनी हैसियत के मुताबिक़, बुरे लोगों को रोकना चाहिए, वरना उनके ख़ुद के नुक़्सान उठाने का ख़तरा बढ़ जाता है।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "बुराई होते हुए देखो, तो हाथ से रोको, वरना ज़बान से रोको, वरना दिल में बुरा जानो।"

एक हालत (Situation) ऐसी होती है, जब इनसान ज़्यादा ताक़त रखता (Powerful) है। एक हालत ऐसी होती है जब वह कम ताक़त रखता (Less powerful) है। और एक हालत ऐसी होती है, जब वह बिल्कुल ताक़त नहीं रखता (Powerless)।

कभी आदमी तीसरी हालत में होता है, मगर अमल करता है पहली के मुताबिक़, नतीजा; नुक़सान उठा जाता है। जबकि पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने सिखाया कि कामों को नतीजे देखकर करो। नतीजा अच्छा निकलेगा, या बुरा निकलेगा, या कुछ नहीं निकलेगा।

तरक़्क़ी
(Development)

"प्रत्येक के लिए एक दिशा है, वह उसी की ओर मुख किए हुए है, तो तुम भलाइयों में अग्रसरता दिखाओ।"

(क़ुरआन, 2:148)

दुनिया में अलग-अलग लोगों के अलग-अलग मक़सद (Target) हैं। कोई ज़्यादा-से-ज़्यादा दौलत हासिल करने के मक़सद को पाने की कोशिश में लगा है। कोई ज़्यादा-से-ज़्यादा ताक़त हासिल करने के मक़सद को पाने की कोशिश में लगा है। कोई ज़्यादा-से-ज़्यादा शोहरत हासिल करने के मक़सद को पाने की कोशिश में लगा है।

मक़्सद पाने और तरक़्क़ी करने के लिए मुक़ाबला करना, ग़लत भी है और सही भी। ग़लत तब है, जब बुरे कामों में ऐसा किया जाए और सही तब है, जब अच्छे कामों में ऐसा किया जाए।

तरक़्क़ी के लिए ज़रूरी है—मुक़ाबला करना और एक-दूसरे से आगे बढ़ना। एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करना, अगर बुराइयों में हो, तो समाज को नुक़सान पहुँचता है, लेकिन यह अच्छाइयों में हो, तो समाज के लिए फ़ायदेमन्द होता है।

तरक़्क़ी दो तरह की होती है—अच्छी और बुरी। अच्छी तरक़्क़ी वह है, जो अच्छे मक़सद को पाने के लिए, अच्छे तरीक़े इस्तेमाल करके होती है। बुरी तरक़्क़ी वह है, जो बुरे मक़सद को पाने के लिए, बुरे तरीक़े इस्तेमाल करके होती है। हक़ीक़त में यह तरक़्क़ी होती ही नहीं, बल्कि पतन (Dawnfall) होता है। चोर की तरक़्क़ी, डाकू की तरक़्क़ी, इस्मगलर की तरक़्क़ी और क़ातिल की तरक़्क़ी को तरक़्क़ी माना ही नहीं जाता।

रोज़ी
(Livelihood)

"धरती में चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है। वह जानता है जहाँ उसे ठहरना है और जहाँ उसे सौंपा जाना है। सब कुछ एक स्पष्ट किताब में मौजूद है।" (क़ुरआन, 11:6)

"मैं (अल्लाह) ने तो जिन्नों और मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी बन्दगी करें।

मैं उनसे कोई रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएँ। निश्चय ही अल्लाह ही है रोज़ी देनेवाला, शक्तिशाली दृढ़।" (क़ुरआन, 51:57-58)

एक, वह रोज़ी (Livelihood) होती है जिसे इनसान ढूँढता है। दूसरी, वह जो खुद इनसान को ढूँढती है। इनसान को आज़ादी दी गई, चाहे तो खुदा की नाफ़रमानी के रास्ते से, अपनी रोज़ी हासिल करे, या चाहे तो फ़रमाबरदारी के रास्ते से।

रोज़ी अटल है—कोई आदमी उतनी ही पा सकता है, जितनी उसकी क़िस्मत में लिखी है और कोई मर नहीं सकता, अपनी रोज़ी पूरा किए बिना।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया—

कोई इनसान उस वक़्त तक नहीं मरता, जब तक अपनी रोज़ी पूरी न कर ले। ख़बरदार! अल्लाह का डर रखो और रोज़ी हासिल करने में सन्तुलन से काम लो। रोज़ी मिलने में देरी की वजह से, कहीं ऐसा न हो कि तुम खुदा की नाफ़रमानी करके, रोज़ी हासिल करना चाहो। क्योंकि जो (पाक-साफ़) चीज़ अल्लाह के पास है, वह तुम्हें अल्लाह की फ़रमाँबरदारी से ही हासिल हो सकती है।" (हदीस : बैहक़ी)

दुनिया में बहुत से अक़लमन्द व होशियार लोग हैं, मगर ग़रीब हैं, कमज़ोर हैं। जबकि बहुत से बेवक़ूफ़ लोग हैं, मगर दौलतमन्द हैं, ताक़तवर हैं। इससे साबित होता है कि रोज़ी का पाना, सिर्फ़ कोशिश पर ही निर्भर नहीं करता। यह ख़ुदा के हाथ में है, जिसको जितना चाहे दे (मगर याद रहे कि कोशिश करने को भी, उसी ने ज़रूरी किया है)।

रोज़ी में दौलत, ताक़त, शोहरत, सभी कुछ शामिल है। इनसान इस पूरी बात (रोज़ी का मिलना कोशिश और ख़ुदा की मर्ज़ी पर आधारित है) को न मानकर, आधी बात (रोज़ी का मिलना सिर्फ़ कोशिश पर निर्भर है) को मानता है, तो वह रोज़ी पाने के लिए सही और ग़लत दोनों तरीक़े इस्तेमाल करता है। जिससे समाज में बहुत-सी ख़राबियाँ पैदा होती हैं और रोज़ी ज़्यादा मिलने पर इनसान मग़रूर हो जाता है, ज़ालिम हो जाता है और कम मिलने पर मायूस होकर ख़ुदकुशी तक कर लेता है।

ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़, सही रास्तों से कोशिश करना, रोज़ी मिलने को आसान बनाता है, वरना यही काम मुश्किल हो जाता है।

दुनिया में इनसान का मक़सद, ख़ुदा की इबादत यानी ख़ुदा-केन्द्रित ज़िन्दगी (God-Centred-Life) गुज़ारना है। हर काम में, ख़ुदा की पसन्द या नापसन्द को सामने रखते हुए, ज़िन्दगी गुज़ारना। हैरत इस बात पर होती है कि इनसान अपनी ज़िन्दगी का मक़सद, उस चीज़ को बना लेता है, जिसके देने का वादा ख़ुदा ने पहले ही से कर रखा है। और वह है "रोज़ी"।

मौत के वक़्त जब इनसान, मिली हुई रोज़ी पर नज़र करता है, तो उसे उसका मिलना, ऐसा लगता है, गोया यह सब उसे मिला, न कि उसने ख़ुद हासिल किया। तब इनसान अफ़सोस करता है। ख़ुदा को राज़ी रखने (God's Pleasure) की उसे कोशिश करनी चाहिए थी, उसने नहीं की, बल्कि उस चीज़ के लिए कोशिश की, जिसका मिलना अटल था। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना होता : ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी करता, तो आसानी से रोज़ी मिलती वरना मुश्किल से मिलती।

❖❖